फालुन बुद्ध फा

स्विट्ज़रलैंड में हुए सम्मेलन में दी गयी फा की सीख

ली होंगज़ी

सितंबर 4-5, 1998 जिनेवा

आपका दिन शुभ हो!

यहां बैठने वालों में वे सभी लोग शामिल हैं जो सीधे सिंगापुर फा सम्मेलन से यहां आये हैं, वे लोग जो दूसरे देशों और क्षेत्रों से यहां आए हैं और नए छात्र। फा सम्मलेन आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य हर किसी को अपनी कमियों को खोजने के लिए एक-दूसरे के अनुभवों से सीख प्राप्त करना है ताकि वे मिलकर साधना में सुधार कर सकें। साथ ही, यह प्रसंग फा को फैलाने का ही एक अवसर है। हम जो कुछ भी करना चाहते हैं वह हमें साधना करने और बेहतर बनाने में सक्षम होने के लिए है—यह केवल औपचारिकता के लिए नहीं है। इसलिए भविष्य में कभी भी जब हम फा सम्मेलन आयोजित करेंगे, तो हमें इस सिद्धांत को याद रखना होगा ताकि हमारे छात्रों को प्रगति करने में मदद मिल सके। हमें इस तरह के सम्मेलन आयोजित करने से पहले यह सुनिश्चित करना होगा। बहुत से अनुभव-साझा सम्मेलन भी आसानी से एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा बन सकती हैं, जहां आप एक तरह से संचालित करते हैं, मैं इसे दूसरे तरीके से करता हूं, इत्यादि, जहाँ हर कोई अपनी मानव मानसिकता को जकडे हुए है। ऐसा नहीं चलेगा। हम सभी को फा के मार्गदर्शन के साथ आगे बढ़ना होगा और इस तरह के सम्मेलनों को केवल छात्रों की साधना के लिए करना होगा।

सम्मेलन में बैठे बहुत से छात्र अनुभवी हैं। मैं आप सभी को देखकर बहुत खुश हूं। आप वास्तव में साधना के मार्ग पर बहुत तेजी से स्वयं का सुधार कर रहे हैं। आप अभी अपने आप में परिवर्तन नहीं देख पा रहे हैं, लेकिन परिवर्तन व्यापक है। आप जल्द ही भविष्य में इसकी पुष्टि कर पाएंगे और इसे देख पाएंगे। इसलिए मैं वास्तव में प्रसन्न हूं।

इस समय के दौरान जिसमें आप साधना कर रहे हैं, उस फा को सुनकर जो मैं फा सम्मेलनों में पढ़ाता हूं और गहराई से ज़ुआन फालुन का लगातार अध्ययन करके, आप सच्चाई की कई भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियां समझ सकते हैं, और आपने फा की एक अलग और गहरी समझ प्राप्त कर ली है। इसके साथ ही, मैं आपके साथ आपकी साधना की प्रक्रिया और एक अन्य प्रकार की ब्रह्मांडीय संरचना की अवधारणा पर चर्चा करना चाहता हूं। मैं पहले अन्य प्रकार की ब्रह्मांडीय संरचना के बारे में बात करूँगा। मैं सबसे पहले कुछ समझाना चाहता हूँ : ब्रह्मांड वास्तव में फा द्वारा निर्मित किया गया था। तो ब्रह्मांड के बारे में मेरी बात करने का उद्देश्य निश्चित रूप से समकालीन विज्ञान को कुछ ऊँचा उठाने के लिए नहीं है, और यह आपको किसी तरह के ज्ञान के रूप में नहीं बताया जा रहा है। यह आपकी साधना के लिए है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह फा के अनुरूप है। इसका लक्ष्य आपको साधना के माध्यम से विभिन्न स्तरों तक पहुंचाना है। इसका अर्थ है, आपका जिन विभिन्न स्थानों में सृजन हुआ था आप को वहीं पर लौटना है, ब्रह्मांड के विभिन्न स्तरों और स्थानों पर लौटना है। यह फा उतना ही विशाल है जितना कि व्यापक ब्रह्मांड है, और यह अवधारणा अभी भी आपके समझ के परे है। आज मैं दूसरे दृष्टिकोण से समझाऊंगा और देखूँगा कि आप समझ सकते हैं या नहीं।

मैं सबसे पहले ब्रह्मांड के बारे में बात करूँगा। ब्रह्मांड के बारे में बात करना, दूसरे तरीके से कहा जाए तो, वास्तव में पदार्थ या पदार्थ की समझ पर चर्चा करना है। आधुनिक विज्ञान चाहे कितना भी उन्नत क्यों न हो, उसकी पदार्थ की समझ अभी भी बेहद उथली है। पूरे ब्रह्मांड की बात की जाए तो यह ध्यान देने योग्य तक नहीं है—उनकी तुलना नहीं की जा सकती है। आप जानते हैं कि मैंने कहा है कि

ब्रह्मांड मूल कणों से बना है। तो फिर ये मूल कण किससे बने हैं? इसे एक विशिष्ट तरीके से समझाया जाना चाहिए। ब्रह्मांडीय पिण्डों की विभिन्न परतों की अवधारणा में (विश्वों की भिन्न-भिन्न परतें नहीं), ब्रह्मांडीय पिण्ड कितने बड़े हैं? अकेले एक ब्रह्मांडीय पिण्ड का विस्तार ही बहुत बड़ा है। फिर भी ऐसी कोई नियमितता नहीं है कि एक ब्रह्मांडीय पिण्ड में विश्वों की परतों की कोई औसत संख्या होती है। कुछ में विश्वों की दस हजार परतों से ऊपर हैं। और कुछ ऐसे हैं जिनमें विश्वों की 10 करोड़ परतों से ऊपर हैं। यह अवधारणा अत्यंत विशाल है। तो प्रत्येक ब्रह्मांडीय पिण्ड एक अकल्पनीय रूप से विशाल ब्रह्मांडीय विस्तार है।

जब लोग विश्व की अवधारणा के विषय में बात करते हैं, तो वे मूल रूप से अनेक आकाशगंगाओं के विस्तार की सीमा में ही बात कर रहे होते हैं जिन्हें वे पहचान सकते हैं। आधुनिक विज्ञान जिस विस्तार का अवलोकन कर सकता है, केवल वह लघु विश्व है जिसके बारे में लोग बात करते हैं। हम पृथ्वी को बिंदु मान कर चलते हैं। इस छोटे विश्व से शुरू होते हुए हमारे आकार के तीन हजार छोटे विश्व दूसरी परत वाले विश्व का निर्माण करते हैं। फिर, दूसरी-परत के जितने बड़े तीन-हज़ार विश्व तीसरी-परत के विश्व का निर्माण करते हैं। इसके बारे में सोचें, सभी : यह बहुत विस्तारित है। फिर भी, यह एक ही दृष्टिकोण से विस्तार के बारे में बात करना है। लेकिन इस विश्व में पृथ्वी के आकार का केवल एक कण नहीं है। हमारी पृथ्वी के आकार के कण लगभग पूरे विश्व में फैले हुए हैं, और वे अनगिनत हैं। मैंने केवल एक कण के दृष्टिकोण से विश्व के विस्तार की बात की है। वास्तव में, उस आकार के कण पूरे ब्रह्मांड में फैले हुए हैं। वे किसी भी चीज और सभी चीजों में हैं। उन सभी में उस तरह की विस्तार प्रणाली है, जो बड़े से छोटे, छोटे से बड़े तक फैली हुई है। मानव जाति के लिए, यह छोटे विश्वों की परत भी बहुत विशाल है। इसके भीतर विभिन्न आकारों के ग्रहों के कणों की संख्या अथाह है। क्यों? क्योंकि यद्यपि बहुत उच्च स्तर पर बुद्ध, दिव्य और ताओ को इन सबके बारे में अंतर्दृष्टि होती है, किसी ने भी धूल के कणों को गिनने के बारे में नहीं सोचा है। एक विशाल ब्रह्मांडीय पिण्ड के भीतर एक ग्रह वास्तव में ब्रह्मांड में तैरती धूल के एक कण की तरह है।

तो इस आकार के तीन हज़ार विश्व लगातार बढ़ते रहते हैं और सीमा का विस्तार करते हैं; वे इस प्रणाली को लगातार बढ़ाते और विस्तारित करते रहते हैं। लगभग एक-हज़ारवीं परत पर, इस पहले ब्रह्मांडीय शरीर प्रणाली की सीमा बन जाती है। लेकिन यह विस्तार भी केवल वैसा एक ही नहीं है : विशाल ब्रह्मांड में यह अभी भी एक कण ही है, और उस स्तर के कण भी, विशाल ब्रह्मांड में व्याप्त होते हैं। विस्तार से परे पूर्ण शून्यता की स्थिति है। और कितनी पूर्ण शून्यता? यदि इस प्रणाली का कोई भी पदार्थ इसमें प्रवेश करता है, तो यह स्व-विघटन के समान होगा। क्योंकि इस प्रणाली की सीमा के भीतर किसी भी पदार्थ में जीवन, विशिष्ट विशेषताएँ और समझ होती है। उस तरह की एक सूक्ष्म शून्यता में प्रवेश करना ऐसा होगा जैसे वह कण अब समझ और जीवन को बनाए नहीं रख सकता। यह तुरंत ही बिखर जाएगा। दूसरे शब्दों में, जो कुछ भी इसमें गिरेगा, वह बिखर जाएगा। इस तरह से अवधारणा को समझाने से हमारे लिए समझना आसान होता है। शून्यता के उस विस्तार से परे, हालाँकि, वास्तव में अभी भी अन्य ब्रह्मांडीय पिण्डों के और भी बड़े विस्तार हैं। लेकिन जो भी हो, इस आयाम के जीव संभवतः वहां जाने की दिशा में एक भी कदम नहीं बढ़ा सकते हैं, क्योंकि अधिक सूक्ष्म प्रकृति के कारक मौजूद हैं, यहां तक कि अधिक, और अधिक सूक्ष्म स्तर पर भी। इससे भी बड़े विस्तार में, हालांकि, उस ब्रह्मांडीय पिण्ड में पदार्थ और जीवन की अवधारणाएं भिन्न हैं—पदार्थ की

अवधारणा वहां होती ही नहीं है। ब्रह्मांडीय पिण्डों की सीमा के भीतर, विश्वों की परतों की संख्या समान नहीं है, लेकिन प्रत्येक ब्रह्मांडीय पिण्ड सबसे सूक्ष्म और प्राथमिक कणों से बना है। और सभी प्राथमिक कण ब्रह्मांड, की प्रकृति *ज़न, शान, रेन* से सृजित होते हैं।

मैं जिन अवधारणाओं के बारे में यहां बात कर रहा हूं वे वास्तव में जटिल हैं। आपको ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि मानव भाषा वास्तव में सीमित है। उदाहरण के लिए, एक विशेष ब्रह्मांडीय पिंड के पदार्थ का सबसे बड़ा कण भी उस आकार के कणों की एक परत से बना है जो कि अपने स्वयं की प्रणाली में उस आकार के अतिसूक्ष्म कणों से बना होता है। इसे एक क्षैतिज कण-संरचना प्रणाली कहा जाता है। यह कि, किसी पदार्थ के कण केवल एक लम्बवत सूक्ष्म प्रणाली से संग्रहित नहीं होते हैं, बल्कि स्वयं भी पदार्थों से बने होते हैं—सूक्ष्म से लेकर बड़े और उससे भी बड़े—अपनी ही प्रणाली में। दूसरे शब्दों में, उस प्रणाली के हर स्तर के भिन्न-भिन्न आकार के कण स्वयं सूक्ष्म पदार्थों से बनी प्रणालियाँ हैं। और उस प्रणाली के प्रत्येक स्तर पर विभिन्न आकारों के कण सब में व्याप्त होते हैं। इसलिए इसके विभिन्न आकार के कण क्षैतिज संरचनागत प्रणालियाँ बनाते हैं। इसके सबसे प्राथमिक कण और इसके सबसे बड़े कणों का स्तर एक दूसरे से बहुत दूर हैं।

तब, आखिरकार, सबसे मूल पदार्थ क्या है? यह पानी है। लेकिन मैं जिस पानी की बात कर रहा हूं, वह हमारे साधारण मानव समाज का पानी नहीं है। न ही यह नदियों, नालों, झीलों और महासागरों का पानी है जो विभिन्न स्तरों पर पाया जाता है। यह पानी वह है जो एक निश्चित स्तर पर एक ब्रह्मांडीय पिण्ड के सभी पदार्थों और जीवन का सृजन करता है। आप इसे "मूल पदार्थ" कह सकते हैं ... [वास्तव में], आप इसे केवल मूल पदार्थ कह सकते हैं। और इस तरह का पानी उस पानी की अवधारणा से अलग है जिसे हम साधारण मानव के आयाम में समझते हैं। वास्तव में, इसे "स्थिर पानी" कहा जाना चाहिए, क्योंकि इसमें कोई गति नहीं है। यह पूरी तरह से स्थिर और गतिहीन है। यदि आप इसमें कुछ फेंकते हैं तो इसमें लहर या छींटे नहीं उठेंगे।

अब जब हम पानी के बारे में बात कर रहे हैं, तो पहले मानव जगत के पानी के बारे में बात करते हैं। हम सांसारिक विज्ञान से एक उदाहरण ले सकते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, साधारण लोगों के हमारे समाज में, समकालीन वैज्ञानिक कहते हैं कि कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थ होते हैं। वह वास्तव में केवल इस आयाम की सीमित समझ है। पदार्थ केवल इस सतह के आयाम के पदार्थों से नहीं बना है। साधारणतः वैज्ञानिक "कार्बनिक पदार्थों" को इस आयाम में जीवित चीजों के रूप में वर्गीकृत करते हैं—पेड़, फूल, घास, पौधे, जानवर और मनुष्य। वे वास्तव में इस आयाम के पानी से बने हैं। आप जानते हैं कि शरीर का नब्बे प्रतिशत से अधिक भाग पानी होता है। अर्थात्, हम मनुष्य इस आयाम के पानी से बने हैं। मैंने पहले उल्लेख किया था कि पानी सभी चीजें बना सकता है। बस यह है कि समकालीन वैज्ञानिक इसको समझ नहीं पा रहे हैं। फिर भी [जैसा कि आप जानते हैं] इस भौतिक आयाम का पानी सब्जियां उगा सकता है। जब किसी सब्जी को हाथों में बार-बार रगड़ा जाता है, तो अंततः थोड़े से क्लोरोफिल के अलावा कुछ नहीं बचेगा। और यदि क्लोरोफिल पर विशेष रूप से प्रयोग किया जाए, तो पानी के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा। दूसरे शब्दों में, इस आयाम की हर चीज जिसे लोग कार्बनिक पदार्थ मानते हैं, वास्तव में इस आयाम के पानी से उत्पन्न होती है। इसका अर्थ है कि पानी सब कुछ बनाता और सृजित करता है।

तो मैं आपको बता दूं : तथाकथित अकार्बनिक पदार्थ वास्तव में एक उच्च स्तर के पानी द्वारा निर्मित होते हैं। लेकिन आधुनिक विज्ञान इसे समझ नहीं पा रहा है, और इसलिए यह सोचता है कि वे पदार्थ जीवित नहीं हैं। लेकिन वे वास्तव में जीवित हैं। उनके अस्तित्व का रूप आधुनिक विज्ञान की समझ से काफी अलग है। यदि आधुनिक विज्ञान अपनी वर्तमान अवधारणाओं के साथ विकसित करना जारी रखता है तो लोग उनके रूप को कभी पहचान नहीं पाएंगे। प्राचीन काल में चीनी साधना समुदायों में एक कहावत थी : "दिव्य इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे एक चट्टान में से भी पानी निकाल सकते हैं।" यह एक उपहास जैसा लगता है, लेकिन वास्तव में यह कोई उपहास नहीं है। यह विश्व जो इस ब्रह्माण्डीय पिण्ड के पूरे विस्तार से संबंधित है, उसके किसी भी वस्तु का सबसे मूलभूत आधार पानी है। अधिक सूक्ष्म पानी कैसा होता है? और अत्यधिक सूक्ष्म पानी कैसा होता है? यह समझ से बाहर है, अकल्पनीय है। इसलिए मैंने कहा है कि यह केवल आपके लिए एक विचार बना रह सकता है।

जो मैंने अभी कहा था वह यह कि विभिन्न स्तरों के कणों में एक सबसे मूलभूत, सबसे मूल तत्व होता है। लेकिन पूर्ण रूप में उन कणों में लम्बवत और क्षैतिज दोनों क्रम होते हैं। यह ठीक उसी तरह है जैसे इस पृथ्वी पर जहाँ हम हैं वहां से शुरू करते हैं : इतनी आकाशगंगाएँ एक विश्व का निर्माण करती हैं, और फिर इतने विश्व एक बड़े विस्तार के विश्व की रचना करते हैं। हम पृथ्वी को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में लेते हैं। क्योंकि हम मनुष्य यहां हैं, और मैं फा यहां सिखा रहा हूं। इसलिए मैं पृथ्वी को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में लेता हूं। लेकिन इस विश्व के सभी पदार्थों के लिए पृथ्वी प्रारंभिक बिंदु नहीं है। हम सोचते हैं कि हमारे आस-पास जो पदार्थ दिखाई देते हैं, वे सभी सबसे भौतिक हैं। जब मैंने अतीत में फा को सिखाया, तो कोई भी भ्रमित ना हो उसके लिए, मैंने कहा कि वे सबसे निचले स्तर के पदार्थ थे। लेकिन वास्तव में, उन्हें केवल भौतिक पदार्थों के रूप में नहीं माना जा सकता है। आप उन्हें "प्राथमिक पदार्थ" कह सकते हैं। हम उन्हें संदर्भित करने के लिए अन्य शब्दों का उपयोग कर सकते हैं। अभी भी उच्चतम पदार्थ होते है, उससे भी उच्चतम पदार्थ, उससे भी और उच्चतम पदार्थ...

पृथ्वी इन तीनों लोकों के आयामों में केंद्रीय स्थान पर है। यह लम्बवत रूप से, क्षैतिज रूप से और कणात्मक आकार के संदर्भ से केंद्र में है। फिर ऐसे पदार्थों का भी अस्तित्व है जिनका द्रव्यमान हमारी पृथ्वी से भी बड़ा है। इससे पहले मैंने जिस द्रव्यमान की बात की थी ये वह परमाणु या परमाणु नाभिक नहीं है जो द्रव्यमान का निर्माण करते हैं, ये वह अवधारणा नहीं है। वे सभी वह पदार्थ हैं जिन्हें मानव जाति पहचान सकती है। मैं जिस विषय में बात कर रहा हूं वह उच्चतम पदार्थ है, ऐसा कुछ जो मानव आयाम का पदार्थ कदापि नहीं है। यह अपने कणों और इसकी सतह संरचना की स्थिति के संदर्भ में इस आयाम के पदार्थों से श्रेष्ठ है। तो सबसे बड़े उच्चतम पदार्थ का मूल बिंदु तीन लोकों की सीमा पर है, और इसी तरह, सबसे निम्नतम पदार्थ का मूल बिंदु भी तीन लोकों की सीमा पर है। मानव आयाम, या पदार्थ का मूल बिंदु जिसे मानव जाति जानती है, बड़े और छोटे पदार्थों के बीच स्थित है। यदि आप इस मानवीय आयाम की सभी चीज़ों को "पदार्थ" कहते हैं, तो मानव जगत के पदार्थों की तुलना में तीन लोकों की चीजें केवल अ-पदार्थ ही कही जा सकती हैं, और उन से भी छोटे पदार्थों को अ-अ-पदार्थ कहा जाएगा, और इसी तरह जब तक कि तीन लोकों में सबसे छोटे कणों तक नहीं पहुंच जाते हैं। मेरे कहने

का तात्पर्य यह था जब मैंने पहले कहा था कि विश्व में बड़े और छोटे की अवधारणा ऐसी नहीं है जैसे साधारण लोग समझते हैं।

और पूर्ण रूप से ब्रह्मांड भी वैसा ही है। सभी कण जीवित हैं—उनमें जीवन है। तो सभी, इसके बारे में सोचें : ब्रह्मांड भी जीवित है, चाहे इसका विस्तार कितना भी बड़ा क्यों न हो। लेकिन एक ब्रह्मांडीय पिण्ड की सीमा के भीतर, विभिन्न आकारों के बहुत सारे, अनगिनत कण हैं, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट जीवित अस्तित्व के रूप में विद्यमान हैं। इस ब्रह्मांड में दिव्यलोकों की कितनी परतें हैं? विश्वों की कितनी परतें हैं? ब्रह्मांडीय पिण्डों की कितनी परतें हैं? इसके भीतर रहने वाला कोई भी यह आकलन नहीं कर सकता है कि ब्रह्मांड कितना विशाल और जटिल है। ब्रह्मांडीय पिण्ड की जिस अवधारणा के बारे में मैंने बात की थी, उसमें दसियों लाख परतें सम्मिलित हैं, फिर भी यह अनंत ब्रह्माण्ड के विशाल पिण्ड में धूल का एक कण मात्र है। यह भी एक छोटा कण ही है। यदि आप दूर, बहुत दूर स्थान पर झट से पहुँच जाएं और पलटकर देखें, तो आप पायेंगे कि यह मनुष्य को दिखने वाले एक रेत के कण से भी छोटा है। इसे और भी दूर से देखने पर यह धूल के एक कण से भी छोटा प्रतीत होगा। और भी अधिक दूर से देखने पर, अब आप इसे और नहीं देख पाएंगे। अभी मैं इसे बार-बार समझा रहा था, लेकिन इसे स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, पूरे ब्रह्मांड का निर्माण कणों से बने कणों और कणों से बने कणों के साथ किया गया प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में, इसे और भी व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए तो, यह कणों से नहीं बना है। इसके लिए कोई भाषा नहीं है, और इसे मनुष्यों को नहीं बताया जा सकता है।

मानव के सोचने का ढंग हमेशा सीमित होता है। जब मैंने कहा कि कणों में कण सम्मिलित हैं, तो आप एक सरल ढंग से सोचने लगे, जो वास्तव में उचित नहीं है। मानव भाषा का उपयोग करके ब्रह्मांड की संरचना की जटिलता को स्पष्ट रूप से नहीं समझाया जा सकता है। इसके अलावा, विचार, समय, आयाम, जीवन-रूप ... हमारे इस आयाम से बाहर निकलने पर सब कुछ बदल जाता है। विशेषकर जब काल-अवकाश भिन्न-भिन्न हो जाते हैं, तो कणों में बहुत अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि ग्रहों के बीच अंतर हैं जो बहुत अधिक हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे शरीर, लकड़ी, हवा, पानी, आदि सभी अणुओं से बने हैं, कि अणु भी कणों का एक स्तर हैं, और यह कि कणों का यह स्तर ग्रहों के बाद का ही है? अर्थात्, अणु सबसे बड़े कण हैं जो ग्रहों से छोटे हैं। परमाणु अणुओं से छोटे सबसे बड़े कण हैं। जब अणुओं और परमाणुओं के बीच की दूरी को मानवीय अवधारणाओं के साथ देखा जाता है, तो हमें लगता है कि वे एक दूसरे के बहुत पास हैं, जैसे उनके बीच कोई दूरी ही नहीं है। लेकिन यदि आप उस आयाम में प्रवेश करते हैं, तो आप पायेंगे कि उस आयाम का अपना ही समय और अवस्था है, और यह एक बहुत ही विशाल और व्यापक आयाम भी है। सभी स्तर ऐसे ही हैं। अणुओं और ग्रहों के बीच में रहकर, हमें लगता है कि ब्रह्मांड विशाल है। लेकिन यदि आप परमाणुओं और अणुओं के बीच में खड़े होते हैं, तो आपको लगेगा कि ब्रह्मांडीय विस्तार इससे भी बड़ा है। दूसरे शब्दों में, आपको इसे समझने के लिए इसके काल-अवकाश की व्यवस्था के अनुसार सोचना होगा।

अभी इस मुद्दे पर चर्चा करके, मैं सभी को यह बता रहा था कि जब आप ग्रहों के बीच बड़ी दूरियाँ देखते हैं, तो अणुओं के बीच की दूरियाँ—जब हमारी मानवीय धारणाओं से देखा जाए तो वे बहुत पास पास लगते हैं—वास्तव में वे बहुत दूर होते हैं। ये कण हमारे जैसे मानव, विभिन्न प्रकार के जानवर,

विभिन्न पौधे, लकड़ी, सीमेंट, स्टील और लोहे के साथ-साथ वायु का निर्माण कर सकते हैं, जिस में हम रहते हैं। मैंने उल्लेख किया है कि मानव वास्तव में मिट्टी के एक टीले में रह रहे हैं। हम जानते है कि मिट्टी में कीड़े रेंगते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दिव्य हम मनुष्यों को उसी तरह से देखते हैं—कि मनुष्य मिट्टी में यहाँ वहाँ रेंग रहे हैं? ऐसा क्यों है? हम मनुष्य मिट्टी को मिट्टी मानते हैं, लेकिन दिव्य सभी अणुओं को—अर्थात्, तीनों लोकों के अणुओं को—मिट्टी के रूप में, और सबसे स्थूल और गंदे पदार्थ के रूप में देखते हैं। वे उन्हें मिट्टी मानते हैं, और वे वास्तव में मिट्टी हैं। सभी इसके बारे में सोचें : वे दिव्य इस ब्रह्मांड और विश्व को क्या समझते हैं? वायु अणुओं से बनी है, और आपके आस-पास विद्यमान पूरा वातावरण अणुओं से बना है। इस आयाम का पानी भी अणुओं से बना है, और हवा भी। देवता अणुओं को मिट्टी के रूप में देखते हैं, इसलिए आप पूरी तरह से मिट्टी में गड़े हुए हैं, और मनुष्य मिट्टी में यहाँ वहाँ रेंग रहे हैं—मनुष्य इसी तरह के वातावरण में रहते हैं। इसे इस तरह समझाकर, शायद आप देख सकते हैं कि पश्चिमी धार्मिक परंपरा में यहोवा या यीशु ने यह क्यों सिखाया कि परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया है, सही है? वास्तव में, पूर्व में यह कहा गया था कि *नु वा* ने मानव को मिट्टी से बनाया है। इस स्पष्टीकरण से आपको अब समझना सरल होना चाहिए। दिव्य वास्तव में इस आयाम के पदार्थ से बने सभी कणों को धूल, या मिट्टी के रूप में देखते हैं। यह वास्तव में सत्य है।

अभी-अभी मैंने कहा कि कण एक आयाम में सब कुछ निर्माण कर सकते हैं। ब्रह्मांडीय पिण्ड व्यापक और समृद्ध हैं। किसी विश्व की रचना करने वाले कण जितने सूक्ष्म होते हैं, उतने ही सुंदर और गौरवशाली वे विश्व होते हैं। वास्तव में, और भी बड़े कण और भी बड़े ब्रह्मांडीय विस्तार या और भी बड़े जीवों का निर्माण कर सकते हैं। जबकि ये ग्रह हम मनुष्यों को एक दूसरे से बहुत दूर दिखाई देते हैं, वे बड़े जीवों की दृष्टि में एक दूसरे के बहुत पास लगते हैं; यह उसी तरह है जैसे मनुष्य अणुओं के बीच की दूरियों को अनुभव करते हैं। फिर क्या वह जो मनुष्य ग्रहों के बीच देख सकता है वह किसी जीव के शरीर का भाग हो सकता है? दूसरे शब्दों में, क्या यह एक इससे भी बड़ा जीव बना सकता है ?! यह वास्तव में एक जैसा विचार है। अतीत में यह कहा जाता था कि भीमकाय और बौने लोग होते थे। यदि साधारण लोग मानते हैं कि उनका अस्तित्व था या नहीं इसका कोई महत्व नहीं है, मैं सिद्धांतों के संदर्भ से पढ़ा रहा हूं। बस यह कि काल बदल गया है। इतिहास की इस चरण तक की प्रगति के साथ, यह इस समय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप होना ही था। इसी कारण आज का समाज ऐसा है। लोग अब उस पर विश्वास नहीं करते हैं जो वे देख या अनुभव नहीं कर सकते हैं। और जितना अधिक वे अविश्वास करते हैं, उतना कम उन्हें सच्चाई जानने की अनुमति होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानव मूर्ख बन गया है। और मनुष्य का अविश्वास वास्तव में कुछ ऐसे ही व्यवस्थित किया गया था। मैं अक्सर कहता हूं कि मनुष्य प्रभारी बनना चाहते हैं लेकिन वे कभी नहीं, कभी भी नहीं बन पाए।

जहाँ तक मनुष्य का प्रभारी होना और लोकतंत्र की चाह रखने की बात है, वास्तव में, मनुष्य सच में कभी भी प्रभारी नहीं रहा है, क्योंकि वह दिव्य हैं जो जगत को नियंत्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, जब व्यक्तियों के जीवन में बहुत पुण्य और महान प्रतिभाएं होती हैं, तो यह निश्चित रूप से उस तरह से व्यवस्थित किया गया था, या यह कि वे उच्च पदाधिकारी बन जाएं। इसके विपरीत, जिनके पास कम पुण्य है और जो इतने सक्षम नहीं है, निश्चित रूप से उच्च पदाधिकारी नहीं बन सकते हैं। पेरिस

कम्यून ने राजतंत्र को पलट दिया। लेकिन मैं आपको बता दूं कि फ्रांस में पीढ़ी दर पीढ़ी चुने गए सभी राष्ट्रपति, पहले सम्राट थे, बस ऐसा है कि व्यवस्था बदल गई है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि सब कुछ दिव्यों द्वारा योजित है। इसलिए आज के मानव समाज में राजनीतिक दलों के बीच जो प्रतिद्वंद्विताएं विकसित हुई हैं, वह केवल एक ऐसी स्थिति है जो आज की मानव जाति में विद्यमान है। प्राचीन समय में—और मुझे लगता है कि आप सभी इस बात पर विश्वास करेंगे—ऐसी कोई बात नहीं थी। आज, मानव जाति वास्तव में एक विकृत समाज वाली विकृत मानव जाति है। अभी के लिए इस विषय में मैं इतना ही कहूँगा।

मैंने अभी उल्लेख किया है कि ब्रह्मांड के विभिन्न कण विभिन्न आकारों के जीवों को बना सकते हैं। हर ग्रह पर जीव पाए जाते हैं। केवल यह कि वे मनुष्यों के इस आयाम में दिखाई नहीं देते हैं, इसलिए हम मनुष्य उन्हें अनुभव नहीं कर सकते हैं। आज का विज्ञान इसे नहीं समझ सकता है क्योंकि यह इतना विकसित नहीं है और केवल इस आयाम के भीतर ही सोच सकता है। वास्तव में, अन्य आयामों में देखना बहुत सरल है। यदि आपके पास एक विशाल सूक्ष्म अवलोकन प्रणाली है तो आप उन वस्तुओं के अस्तित्व का रूप देख सकेंगे जो अणुओं से छोटे कणों से बने होते हैं। मनुष्य उनके वास्तविक अस्तित्व को नहीं देख सकता है क्योंकि मनुष्य में सभी प्रकार की बाधाएँ होती हैं—उनकी यह मानसिक बाधाएँ उन्हें विश्वास करने से रोकती हैं। वे ऐसा करने का साहस नहीं करते हैं, और वे ऐसा करने की जरुरत नहीं समझते हैं। लेकिन चाहे आप उन्हें देखना चाहते हैं या नहीं, वे समय-समय पर अपने वास्तविक रूप को प्रकट करते रहेंगे। कुछ लोगों को वे अचानक दिख जाते हैं। परिस्थितियों के अनोखे संयोग से, पदार्थ जो गति में हैं वे अचानक प्रकट हो सकते हैं। यह कुछ ऐसा है जो बहुत बार होता रहता है। लोग हमेशा मृगतृष्णा को वायुमंडल के एक प्रकार के अपवर्तन के रूप में समझाते हैं। यह एक स्वयं को उचित सिद्ध करने का सिद्धांत है जो यह समझाने के लिए अपनाया गया है जिसे आधुनिक विज्ञान नहीं कर सकता है, यह व्यर्थ है। वास्तव में, वे अन्य आयामों की सच्ची अभिव्यक्तियाँ हैं। आप विश्व की अवधारणा को अच्छी तरह समझ सकते हैं जिसकी मैंने अभी चर्चा की है, है ना? (तालियां)

ब्रह्मांड में सभी पदार्थ *जन, शान, रेन* से बने हैं। विभिन्न स्तरों पर *जन, शान, रेन* की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं और वे विभिन्न प्रकार से प्रदर्शित होती हैं। इसने विभिन्न स्तरों के जीवों के लिए भिन्न-भिन्न रहने के वातावरण बनाये हैं। जब मानव के स्तर की बात आती है, तो इस फा की अभिव्यक्ति अत्यंत विशाल और अत्यंत जटिल है, साधना के मार्ग प्रचुर मात्रा में हैं, और वे सत्य जिसका लोग ज्ञान प्राप्त करते हैं, कई हैं। यदि कोई एक अच्छा व्यक्ति बनना चाहता है, तो इस आयाम में विद्यमान मापदंड हैं : परोपकार, निष्ठा, शुद्धता, शिक्षा, विश्वास इत्यादि। ये सभी *जन, शान, रेन* से उत्पन्न हुए हैं, और उनकी संख्या अविश्वसनीय हैं। और यह केवल इतना ही नहीं है। महिलाओं का गठन करने वाले तत्व कोमलता और सौम्यता हैं, जबकि पुरुषों को शक्तिशाली और ईमानदार होना चाहिए इत्यादि। ये सभी फा की अभिव्यक्तियां हैं। भौतिक प्राणी कैसे दिखाई देते हैं और अस्तित्व के भौतिक रूप कैसे हैं, ये सभी फा की अभिव्यक्तियां हैं। फा ने सब कुछ बनाया है।

अब मैं साधना के बारे में बात करूँगा। साधना में, आपको किसी आयाम में जाने के लिए वहाँ के मापदंडों को क्यों पूरा करना पड़ता है? क्योंकि उस विशेष स्तर के लिए फा है। उस आयाम में उन जीवों

के लिए एक आवश्यक आदर्श है, साथ ही उन जीवों के पर्यावरण के लिए भी एक आदर्श है। एक कर्म-लदा शरीर जो उस आयाम के वातावरण के अनुरूप नहीं है, अस्वीकार्य है। एक अपवित्र शरीर उच्च आयाम में प्रवेश नहीं कर सकता है। तो आपको उस उच्च स्तर की शारीरिक अवस्था के अनुरूप होना होगा—अर्थात्, कर्म-मुक्त अवस्था। न केवल आपको कर्म से मुक्त होने की आवश्यकता है, बल्कि आपके शरीर के पदार्थों को उस तरह से सूक्ष्म और महीन होना चाहिए। यह कुछ ऐसा है जिसे लोग जो वास्तव में साधना नहीं करते हैं, प्राप्त नहीं कर सकते हैं, भले ही वे इसे चाहें और इसका पीछा करें—इसकी केवल साधना की जा सकती है। इसे कठिनाई को सहन करके और भीषण साधना के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, आप के चेतन पक्ष को उस स्तर के आदर्शों के अनुरूप होना चाहिए। या दूसरे शब्दों में, आपके मन, आपके विचारों और आपके अस्तित्व के सभी आध्यात्मिक गुणों को उस स्तर के आदर्शों के अनुरूप होना चाहिए।

निश्चित ही, उस आयाम के जीवन के अस्तित्व के रूप का भी एक आदर्श है। आप इस तरह एक मनुष्य के रूप में वहाँ नहीं जा सकते हैं। जब आप फल पदवी प्राप्त करने वाले होते हैं तब आपको उस आयाम के जीवों के स्वरुप को धारण करना होगा। जितना उच्च स्तर, उतना ही अधिक युवा और सुंदर उन जीवों का स्वरुप। जितना निम्न स्तर, उतना कम सुंदर। जितना ऊपर आप जाते हैं, न केवल स्वरुप अधिक सुंदर होता है, बल्कि विचारों को भी अधिक शुद्ध और परिष्कृत होना होता है। आपके जीने का ढंग, वाणी, आचरण, और चाल-ढाल सभी परिवर्तित होंगे। उनकी वाणी कविता की तरह होती है, और यह उस निश्चित स्तर पर इसी तरह से होता है। उच्च स्तर और भी भव्य होते हैं। यदि आप उस स्तर की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं तो निश्चित रूप से ऐसा नहीं चलेगा। मैं अक्सर कहता हूं कि "साधना आप पर निर्भर करती है, गोंग गुरु पर निर्भर करता है।" दूसरे शब्दों में, हालाँकि आप उस तरह के आयाम तक पहुँचना चाहते हैं, जब आप इसके विषय में जानते भी नहीं हैं, तो आप वहां कैसे पहुँच सकते हैं? आप यह कैसे कर सकते हैं? आप स्वयं यह नहीं कर सकते। मैं केवल उस मन को देखता हूं जो आपका साधना के लिए है। यदि आप साधना करने के लिए दृढ़ निश्चयी हैं तो गुरु जी उस दूसरे पक्ष का ध्यान रखेंगे। यह महत्वपूर्ण है कि क्या आप दृढ़ रह सकते हैं और क्या आप अपनी साधना पूरी कर सकते हैं।

मैंने उस विशिष्ट मार्ग की चर्चा नहीं की है जिससे *गोंग* विकसित होता है, और मैं नहीं चाहता कि लोग इस पर अधिक ध्यान दें। इसे इस तरह करने से मोहभाव उभरने से रोके जा सकते हैं और यह लोगों की कल्पनाओं को अनियंत्रित भागने से रोकता है। जैसा कि आप जानते हैं, जितना अधिक ऊँचा जाते हैं, उतना ही मन शांत होता है। फिर भी यह आपके लिए उचित नहीं है कि आप अपने *शिनशिंग* को बढ़ाए बिना शांति की चाह करें। कुछ लोग अभ्यास करते समय शांति की चाह पर तुले हुए होते हैं। वे शांति प्राप्त करने के प्रयास करने पर बल देते हैं, और यह एक मोहभाव में विकसित हो जाता है। लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि जिस तरह निम्न-स्तर के साधना मार्ग इसे देखते हैं, यह एक पद्धति है, जबकि उच्च स्तर से देखा जाए तो, यह आशय-युक्त आचरण है। क्यों? शांति केवल साधना के माध्यम से और धीरे-धीरे मोहभावों को समाप्त करने के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। यदि कोई स्वयं को हठपूर्वक पूरी तरह से शांत करना चाहता है और चाहता है कि मोहभाव भी ऐसे ही हट जाएं, तो

साधारणतः ऐसा नहीं किया जा सकता है। (निश्चित रूप से, ऐसी विशेष परिस्थितियाँ हैं जिनके बारे में हम चर्चा नहीं करेंगे।) इस तरह की शांति प्राप्त करने में सक्षम होने का अर्थ है कि आपका मन उस सीमा तक शुद्ध हो गया है। जिसे मैं "विशेष परिस्थितियां" कहता हूं, वह साधना के उन मार्गों को संदर्भित करता है जो सहायक चेतना (फू यूआनशेन) की साधना करते हैं, जिसमें व्यक्ति स्वयं को पहले से ही हठपूर्वक शांत कर सकता है। लेकिन यह हमारे दाफा साधना करने का ढंग नहीं है। यह कोई छोटी बात नहीं है।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, जब आप अपने स्वयं के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दूसरों के साथ बात करते हैं, उन्हें बदलना या मनाना चाहते हैं, चाहे आपके शब्द कितने भी उचित हों, अन्य लोगों को उन्हें पूरी तरह से स्वीकार करने में कठिनाई होगी। न ही शब्द लोगों के मन को बदल सकते हैं। क्यों? मैं आपको बताना चाहूँगा : यह वास्तव में ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके द्वारा कहे गए शब्दों में आपके सभी विचार सम्मिलित हैं। आपके वाक्यों में जटिल विचार, जैसे कि आपकी मानवीय भावनाएँ और इच्छाएँ, और यहाँ तक कि आपके बहुत से मोहभाव भी सम्मिलित होते हैं। यह आपके शब्दों को इतना शक्तिशाली नहीं, बल्कि कम प्रभावी बना देता है। इसके अतिरिक्त, लोग अक्सर अपने दृष्टिकोण से विषयों को देखते हैं जब वे दूसरों को बातें बताते हैं, और वे शायद ब्रह्मांड के फा के अनुरूप न हों। इसलिए इस संबंध में उनमें सत्य की शक्ति का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त, जब दूसरों से बात करते हैं, तो लोग स्वयं को बचाने के लिए अन्य चीजों को जोड़ते हैं ताकि उन्हें हानि न पहुंचे। दूसरे अर्थ में, आपके शब्दों के पीछे का आशय अब पवित्र नहीं रहा। और परिणामस्वरूप आपके शब्द वास्तव में महत्त्वहीन हो जाते हैं। लेकिन जब आपका मन वास्तव में शांत हो जाता है, जब आपके मोहभाव कम से कम हो जाते हैं, या जब विचलित करने वाले विचार कम से कम हो जाते हैं, तो आप पाएंगे कि आपके शब्दों में शक्ति है। ऐसा क्यों था कि जब मैंने कोई भी क्रिया नहीं करने के बारे में बात की थी तो मैंने उल्लेख किया था कि आप उन बातों के साथ हस्तक्षेप नहीं करें जिनके साथ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके शब्दों में पहले से ही शक्ति है, और शक्ति वाले शब्द लोगों को बदल सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपको किसी व्यक्ति को बदलना सही लगता हो, आप शायद कुछ गलत कर रहे हैं। आप उस सत्य को नहीं जानते हैं क्योंकि जो आपकी आँखों से दिखता है, वह सतही है, और क्योंकि आप अतीत के कर्म संबंधों को समझ नहीं सकते हैं। जैसे-जैसे आप उच्च स्तर पर पहुंचेंगे, आपका मन तेजी से शुद्ध होता जाएगा। तब जब आपके विचार जो बातें सामने लाते हैं, और आप जो कहते हैं, वह अत्यंत शुद्ध होगा। वे जितने शुद्ध और सरल होंगे, वे ब्रह्मांड के उस स्तर के सिद्धांतों के अनुरूप होंगे। फिर आप जो शब्द बोलेंगे, वह लोगों के मन को तुरंत छू लेंगे, लोगों के विचारों पर गहराई से प्रभाव करेंगे, और उनके अस्तित्व के अधिक सूक्ष्म भाग पर प्रभाव करेंगे। अब क्या *वे* प्रभावशाली नहीं होंगे?! इसलिए यदि आप शांत हो सकते हैं, तो यह क्षमता दर्शाती है कि आप एक निश्चित स्तर पर पहुंच गए हैं।

हमारी साधना में हमें किसी भी दिये गये स्तर तक पहुंचने के लिए उस स्तर की आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। अन्यथा आप वहां नहीं जा सकते। यही कारण है कि हमारी साधना में मानवीय मोहभावों को त्यागना पड़ता है, क्यों बुरे कर्म को समाप्त करना पड़ता है, क्यों फा की आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता है, और क्यों मैं आपसे पुस्तक को अधिक पढ़ने और फा को अच्छी तरह से समझने के लिए कहता हूं।

मैंने केवल इस विषय पर संक्षेप में चर्चा की है। यह एक फा सम्मेलन है। आपके पास मुझसे मिलने के बहुत सारे अवसर नहीं होते हैं, और आपके मन में बहुत से प्रश्न उभर रहे होंगे, जिन्हें आप मुझसे पूछने का अवसर चाहते हैं। इसलिए मैं शेष समय का उपयोग आपके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए करुंगा। लेकिन एक बात है जिस पर आपको ध्यान देना चाहिए: कुछ लोग (निश्चित रूप से, वे सभी नए छात्र हैं) जब वे प्रश्न पूछते हैं, तो वे बहुत ही अशिष्ट वृत्ति रखते हैं, और अपने गुरु के प्रति सम्मान नहीं दिखाते हैं। हालाँकि, ऐसा नहीं है कि मैं पुराने ढंग की औपचारिकताओं का समर्थन करते हुए एक गुरु जी के लिए सम्मान की मांग कर रहा हूं, लेकिन आख़िरकार मैं आपका गुरु हूं और आपको बचाकर उच्च स्तर पर ले जाऊँगा। जो मैं आपको दे रहा हूं वह कुछ ऐसा है जिसे आप अपने जीवन के अनंत काल में भी कभी नहीं चुका सकते। इसलिए मुझे आशा है कि आपका ढंग शिष्यों वाला होगा। ठीक है, आप अपने प्रश्न की पर्चियां दे सकते हैं।

प्रश्न: शाक्यमुनि, लाओ ज़, और यीशु के बाद, कितने लोगों ने साधना से तथागत स्तर प्राप्त किया है?

गुरु जी : सभी को मिलाकर बहुत से हुए हैं। शाक्यमुनि द्वारा मार्ग प्राप्त करने के बाद कई लोग हुए हैं; उन्होंने बौद्ध धर्म में सफलतापूर्वक साधना की। और यीशु के बाद के उनके शिष्यों और भिक्षुओं के बीच ऐसे लोग थे जिनकी साधना सफल हुई थी। वास्तव में, चीन में साधना के बहुत सारे मार्ग हैं। क्योंकि साधना के मार्ग भौगोलिक रूप से प्रतिबंधित नहीं हैं, इसलिए प्राचीन समय में पश्चिमी समाज में भी ऐसे लोग थे जो साधना करते थे, और उनमें से बहुत से सफल हुए। वे धर्मों का पालन करके सफल नहीं हुए। लेकिन कुछ ही समय पहले कुछ लोगों ने फलपदवी पायी है। आज के समाज में इसकी संख्या लगभग शून्य है।

प्रश्न: ज़ुआन फालुन [(भाग II)] में उल्लेख किया गया है कि चंद्रमा का निर्माण दूरस्थ युग के मानव जाति द्वारा किया गया था। क्या गुरु जी हमें इसके निर्माण का कारण और उद्देश्य के बारे में कुछ बता सकते हैं?

गुरु जी : यहाँ हर कोई हँस रहा है, क्योंकि जिस कारण मैं फा सिखा रहा हूँ वह इससे बहुत परे है। आप ज्ञान प्राप्त करना चाह रहे हैं और अपनी कल्पना को इधर उधर भागने दे रहे हैं। और जब आपकी कल्पना इधर उधर भागती है, तो आपकी सोच की शुद्धता और शांति में कमी आ जाती है। लेकिन साधारण लोगों के बीच की चीजों के मोहभाव को छोड़ने की जगह, आप मुझसे उनके बारे में पूछ रहे हैं और यहां तक कि उन्हें फा के साथ भी मिला रहे हैं। वास्तव में यही है जिसके बारे में मैं आप सभी के लिए चिंतित हूँ। अपना मन साधना में लगाएँ। बेशक, मैं उत्तर दे सकता हूं, क्योंकि प्रश्न पूछा गया है।

अतीत में, आज के विज्ञान जैसी स्थिति कभी भी नहीं थी। इसलिए विभिन्न समयावधि की मानव जातियां निश्चित रूप से उन समय के ढंग से विकसित हो रही थीं। एक समय में लोगों ने रात के अंधेरे के संकट को अनुभव किया, इसलिए उन्होंने रात के समय पृथ्वी पर प्रकाश लाने के लिए एक चंद्रमा का निर्माण किया। इसका साधना से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसा नहीं है कि मैं आपको इसके बारे में बताने के लिए तैयार नहीं हूं। ऐसा है कि मैं जो कुछ भी कहता हूं वह भौतिक रूप धारण कर लेता है, क्योंकि मैं

जो कहता हूं वह फा बन जाता है। इसलिए मुझे मानव रूचि वाली चीजों के बारे में यों ही बात करने के लिए न कहें।

प्रश्न: क्या किसी के विचारों की गति प्रकाश की गति से तेज़ है ?

गुरु जी : यह निश्चित है। मानव विचारों की गति काफी तेज़ होती है। जैसे-जैसे आपका स्तर बढ़ेगा आप अपने से नीचे के स्तरों के हर आयाम तक पहुँचेंगे। ध्यान से सुनिए कि मैं क्या कह रहा हूं: जब आपका स्तर ऊंचा होता जाता है, जब आपका *गोंग* आपके नीचे के स्तरों में किसी भी आयाम में प्रवेश करता है, तो यह उन आयामों के समय की सीमा के अधीन नहीं होता है। गोंग विचारों द्वारा निर्देशित होता है। चूंकि आप इस वातावरण में रहते हैं, आपकी चलने की गति, आपकी कार की गति, इत्यादि, हर एक चीज इस आयाम के समय से सीमित होती है। इस मानव आयाम में लोगों के विचारों की गति तेज़ होती है। यदि कोई व्यक्ति साधक है, तो वह इस आयाम के प्रतिबंधों को पार कर लेता है और उसके विचार अत्यधिक तेज़ हो जाते हैं। इस दौरान, हमने कहा है कि किसी व्यक्ति का *गोंग* और उसके शरीर की सभी क्षमताओं को उसके विचारों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। तो इसका अर्थ है, जब उसे विचार आता है, तो उसका गोंग पहुँच जाता है—वह इतना शक्तिशाली है। मैंने कहा है कि यदि आप में से बहुत ही उच्च स्तरों पर साधना करने वालों की क्षमताओं को बंधित नहीं किया गया, तो आप वास्तव में स्वर्ग और पृथ्वी को एक ही पल में उलट पलट सकते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के पूर्ण ज्ञानोदय तक पहुँचने से पहले, उसके लिए पृथ्वी पर साधना करते समय अप्रतिबंधित रहना पूर्णतया निषिद्ध है, यह पूर्णतया निषिद्ध है। यह उन सभी लोगों के लिए ठीक है, जिनके पास साधारण क्षमताएं हैं, क्योंकि इस आयाम का इस आयाम के दिव्यों द्वारा ध्यान रखा जाता है, और वे दिव्य इस सब को नियंत्रित कर सकते हैं जिससे एक व्यक्ति स्वर्ग को उलट या पृथ्वी को पलट न सके। लेकिन यदि किसी व्यक्ति की क्षमता अधिक है तो उसे अनुमति नहीं दी जाएगी। गुरु जी को भी इसका ध्यान रखना होगा।

प्रश्न: हमारे इस ब्रह्मांड में, किस प्रकार के पदार्थ की सबसे अधिक गति होती है ?

गुरु जी : आप विज्ञान के विषय में पूछ रहे हैं। यह बताना आपके किसी के पीछे पड़ने वाले मन को संतुष्ट करना होगा, और यह आपके मोहभाव को बढ़ाने के समान होगा। लेकिन यदि मैं आपको नहीं बताता, किन्तु, क्योंकि आपने प्रश्न उठाया है।

इस आयाम की गति के संबंध में बात करें तो जिसे आजकल लोग जानते हैं, उसमें और भी अधिक ऊर्जा है जिसे लोग खोज नहीं पाए है जिससे इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है। सबसे बड़े और सबसे छोटे इन सभी की सोच मानवीय समझ के परिप्रेक्ष्य से आती है; वे मानव आयाम और समय क्षेत्र के विस्तार के भीतर की समझ है। आकार, जो मनुष्यों की अवधारणा है, इस ब्रह्मांड में उपस्थित नहीं है। तो ब्रह्माण्ड में, गति—जैसे आप समझते हैं—स्तर पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, जिस वेग से एक बहुत उच्च-स्तरीय दिव्य बोलते हैं, वह अभी भी आपके मन की गति से तेज़ है—जबकि वह दिव्य बहुत धीरे-धीरे बोल रहे होते हैं। मेरे ये शब्द जो मैं कह रहा हूँ और आपके मोहभाव, यह अभी-अभी हुए हैं, लेकिन एक विशिष्ट आयाम में वे वास्तव में सैकड़ों साल पहले हो चुके थे। यह इतना बड़ा अंतर है। ब्रह्मांड अविश्वसनीय रूप से विशाल है। काल अवकाशों के अंतर ने ब्रह्मांड के जटिल आयामों का गठन किया है।

वास्तव में, *जो समय के प्रतिबंध के अधीन नहीं है*, वही सबसे तेज़ है। लेकिन मनुष्य वास्तव में उस वाक्य का वास्तविक अर्थ कभी नहीं समझ पाएगा। आपका विचार, "किस प्रकार के पदार्थ की सबसे बड़ी गति होती है," एक मानवीय धारणा और एक मानवीय समझ है। समय अपरिवर्तनीय नहीं है, यहां तक कि हमारे वर्तमान आयाम में भी। जैसा कि आप जानते हैं, मैंने *ज़ुआन फालुन* में उल्लेख किया है कि कोई तारा हमसे 150 हजार प्रकाश वर्ष दूर दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में, मैं केवल मनुष्य के समकालीन विज्ञान की समझ को ध्यान में रखते हुए इसकी चर्चा कर रहा था। यह वास्तव में ऐसा नहीं है। फिर कैसा है? आइए इसके बारे में विचार करें: विभिन्न आयामों में विभिन्न समय पाए जाते हैं। हमारी पृथ्वी के विस्तार के भीतर एक समय क्षेत्र है, और सब कुछ उस समय की सीमाओं के भीतर सीमित है। जैसे ही एक मानव-निर्मित उपग्रह हमारे वायुमंडल से बाहर जाता है तो वह एक अन्य समय क्षेत्र में पहुँच जाता है, जो निश्चित रूप से पृथ्वी के समय क्षेत्र के समान नहीं है। अन्य ग्रहों के भी अपने समय क्षेत्र होते हैं जब यह उन ग्रहों के पास से गुजरता है। ब्रह्मांडीय शरीर जितना बड़ा होता है, समय और गति में अंतर भी उतना ही अधिक होता है।

कहा जाता है कि आकाशगंगा में घटित चीज़ों को देखने के लिए हमें 150 हजार प्रकाश वर्ष लगते हैं। वास्तव में, मैं आपको बता दूं कि शायद आप उन्हें केवल दो या तीन वर्षों में देख पाते हैं। क्यों? क्योंकि प्रकाश की गति, भी, समय क्षेत्र के प्रतिबंध के अधीन है। जब प्रकाश विभिन्न समय क्षेत्रों के माध्यम से गुजरता है, तो इसकी गति, "सांय-, सांय-, सांय-" अचानक तेज़ या धीमी हो जाती है। जब यह हमारी पृथ्वी पर पहुँचता है, तो यह पृथ्वी के समय क्षेत्र के अनुरूप हो जाता है और अत्यंत धीमा हो जाता है। जिसे पृथ्वी के निवासी समझ पाते हैं उस समय क्षेत्र का उपयोग करके ब्रह्मांड के समय का आकलन करने का कोई भी तरीका नहीं है। सत्य, पदार्थ, जीवन, ब्रह्मांड और मानव के विकास सहित कई चीजों की मानव जाति की समझ अनुचित है।

प्रश्न: बुद्ध प्रणाली के महान ज्ञानप्राप्त जीव इस ब्रह्मांड के प्रकाश की व्याख्या कैसे करते हैं?

गुरु जी : प्रकाश को केवल देखना ही कौन सी बड़ी बात है?! प्रकाश कई प्रकार के होते हैं, और वे विभिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न होते हैं। और कैसे, और किस उद्देश्य के लिए, प्रकाश उत्सर्जित होता है, यह भी भिन्न है। उन चीजों के बारे में सोचने के लिए मानव विचारों का उपयोग न करें जो मनुष्य के स्तर से ऊपर हैं। मैं कहता हूं कि यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो आपको पुस्तक को और अधिक पढ़ना होगा और फा का बहुत अध्ययन करना होगा। जिस विषय का ज्ञानोदय आपको नहीं हुआ है और जो चीज़ें आप नहीं जानते, भविष्य में, वे सभी फा से समझ आएँगी। इसके बारे में सोचें: मैंने कहा है कि हर वस्तु में ऊर्जा होती है—यहाँ तक कि अणुओं में भी ऊर्जा होती है। लोग अनुभव नहीं कर सकते कि अणुओं में ऊर्जा है क्योंकि मनुष्य स्वयं अणुओं से बना है। यही कारण है कि लोग इसे अनुभव नहीं कर सकते हैं। जिन चीजों में ऊर्जा होती है उनमें प्रकाश और शक्ति होती है। राई का पहाड़ न बनाएं या हर छोटी चीज के महत्व को बढ़ा-चढ़ा कर न बताएं। जब दाफा अभ्यासियों के महान सद्गुण प्रदर्शित होंगे, *तो* वह दृश्य तेजस्वी और चकाचौंध करने वाला होगा।

प्रश्न: क्या हम फा को फैलाने के लिए समाचार पत्रों में गुरु जी के लेख प्रकाशित कर सकते हैं? दूसरी ओर, मुझे चिंता है कि लोग लेखों का अनुचित अर्थ निकाल सकते हैं।

गुरु जी : वे करेंगे, वे सभी करेंगे। इसलिए ऐसा नहीं करना सबसे अच्छा है। क्यों? मैं आपको बताता हूँ : फा फैलाने की हमारी सबसे अच्छी विधि सभी का समूहों में अभ्यास करना है। हम केवल यह कह रहे हैं कि हम उन लोगों को छूटने नहीं देना चाहते हैं जिनका पूर्वनिर्धारित संबंध है। जब मैं फा फैलाने के बारे में बात करता हूं, तो मैं पूरी मानव जाति को फा प्राप्त करने के लिए नहीं कह रहा हूं—यह आशय कदापि नहीं है। मैं पूर्व निर्धारित सम्बन्ध वाले लोगों को फा प्राप्त करने के बारे में बात कर रहा हूं। आज मैं सभी को स्पष्ट कर दूं : हमने जो फा फैलाने की पद्धति अपनाई है, वह यह है कि आप कहीं बाहर जाकर अभ्यास करते हैं। एक और चीज़ यह है कि हमारी दाफा पुस्तकें सार्वजनिक पुस्तकों की दुकानों में बिक्री के लिए रखें। मेरे फा शरीर पूर्वनिर्धारित सम्बन्ध वाले लोगों को पुस्तक खरीदने के लिए निर्देशित करेंगे, और जैसे ही वे इसे पढ़ेंगे वे आकर सीखेंगे। इसके अलावा, हम अभ्यास बाहर कर रहे हैं, इसलिए फा शरीर उनको अभ्यास स्थलों को खोजने और फा को प्राप्त करने की व्यवस्था करेंगे। परिस्थितियों के एक संयोग के माध्यम से उनका वहां पर अभ्यास करने के लिए नेतृत्व किया जायेगा, या वे हमारे छात्रों को ढूंढ लेंगे। हमने इसे ऐसे ही व्यवस्थित किया है।

आप चाहते हैं कि अधिक से अधिक लोग इसके बारे में जानें और आपने विविध तरीकों का उपयोग किया है। यह छात्रों की अच्छी मंशा है, मैं इसे देख सकता हूं। और आपने इसे भली भांती किया है। लेकिन यह सब आपके अपनी ओर से किये गये, व्यक्तिगत कार्य है, इसलिए मैं इसे स्वीकृत या अस्वीकृत नहीं करता। फा में, हालांकि, फा को फैलाने के माध्यम जो मैंने दाफा के लिए छोड़े हैं वे ये हैं : हम समूहों में बाहर अभ्यास करते हैं, फा सम्मेलनों का आयोजन करते हैं, और पुस्तकों की दुकान में बिक्री के लिए पुस्तकें रखते हैं। पूर्व-निर्धारित संबंध वाले लोग पुस्तक खरीदेंगे, और वे इसे पढ़ने के बाद साधना करना चाहेंगे। और फिर वे हमें स्वयं ही ढूढेंगे और सीखेंगे। यह ऐसा ही है। हालांकि, कभी-कभी छात्र व्यक्तिगत रूप से, अन्य लोगों को इसके बारे में सूचित करने के लिए समाचार पत्रों में घोषणाएँ करते हैं। वह भी बहुत से लोगों को फा प्राप्त करने में सहायता कर सकता है। मैं उस पद्धति को अस्वीकार नहीं करता, क्योंकि इससे पूर्वनिर्धारित लोग इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मैं केवल यह कह रहा हूं कि फा को फैलाने के लिए मैं आपके लिए जो सबसे अच्छे माध्यम छोड़ रहा हूं, वे हैं समूह अभ्यास और फा सम्मेलन।

प्रश्न: मैंने फा को फैलाना अपनी साधना का एक अभिन्न हिस्सा बना लिया है, लेकिन गुरु जी ने कहा है कि फा को फैलाने के कार्य का फलपदवी तक पहुँचने से कोई लेना-देना नहीं है।

गुरु जी : फा को फैलाना और फलपदवी तक पहुंचना हालांकि दो भिन्न-भिन्न शब्द और अवधारणाएं हैं। लेकिन एक बात है : उन लोगों के लिए जो फा को फैलाने का काम करते हैं, यदि आप इसे नौकरी मानते हैं और, हालांकि आप अक्सर कड़ा परिश्रम करते हैं और इसे करने के लिए कड़ा प्रयास करते हैं, यदि आप नियमित रूप से पुस्तक को नहीं पढ़ते हैं और आपके पास अभ्यास करने का समय नहीं है, तो इस तरह का काम अवश्य ही फा से विमुख हो जाएगा। दूसरे शब्दों में, आपने अपनी साधना को अपने काम के साथ एकीकृत नहीं किया है। काम करते समय आप वास्तव में मोहभाव रखते हैं, और आप इस बारे में नहीं सोचते हैं कि आपको होने वाले कष्ट आपके नैतिक गुण से संबंधित है या नहीं, और जिस प्रकार से आप कार्य करते हैं वह फा और एक साधक के आदर्शों के अनुरूप है या नहीं। यदि आप इस प्रकार से अपने अंदर नहीं झांकते हैं, यदि आप इसे इस तरह से नहीं देखते हैं, तो आपका काम केवल साधारण मनुष्यों का काम होगा, और आप केवल एक साधारण व्यक्ति की तरह

दाफा के लिए काम कर रहे होंगे। बस यह कि, आपने एक साधक के आदर्शों के अनुसार स्वयं का आचरण नहीं किया है। साधना को हमारे काम के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। जब आप अपने काम में किसी भी चुनौती का सामना करते हैं, तो आपको हमेशा अपने स्वयं के नैतिक गुण का परीक्षण करना चाहिए और स्वयं की जांच करने में सक्षम होना चाहिए। जब आप पर संकट आते हैं, तो स्वयं को देखें और सोचें: "ऐसे इस तरह क्यों हो रहा है? क्या मैंने कुछ अनुचित किया है? क्या मेरे आशय में कोई दोष है? या कुछ और कारण है? यह कि, आपको हर समय एक साधक के आदर्श के अनुसार स्वयं से अपेक्षा करनी चाहिए और अपना मूल्यांकन करना चाहिए। जब आप अपने आप को एक साधक के रूप में मानते हैं तो आप वास्तव में साधना कर रहे होते हैं और अपने किसी भी विचार को भटकने नहीं देते हैं। फिर क्या आपके कार्य फा के साथ एकीकृत नहीं होंगे? जहाँ तक फलपदवी की बात है, यह आपकी साधना की सीमा पर निर्भर करती है और क्या यह उस स्तर तक पहुँच पाती है। चाहे कोई व्यक्ति हर दिन साधना करता हो, वह फलपदवी तक पहुंच सकता है या नहीं यह उसके फलपदवी के स्तर पर निर्भर करता है।

प्रश्न: मैं हर दिन ज़ुआन फालुन को पढ़ता हूं, लेकिन इसके कुछ विषयों के संबंध में, जैसे कि "झाड़-फूंक का विषय," "बिगू," "उपवास," "ची को चुराना," और "ची एकत्रित करना," मुझे लगता है कि इनकी बस एक साधारण समझ ही पर्याप्त है।

गुरु जी : मैं आपको बताता हूं, हालांकि मैंने उन चीजों का उपयोग उदाहरण के रूप में किया था, जो मैंने बात की थी, वह उस तक सीमित नहीं थी। मैं जिस विषय की बात करता हूं, वह फा के सिद्धांत हैं! उनके निहित अर्थ अनगिनत, असीम, अंतहीन हैं। हालांकि, यह ब्रह्मांड बहुत बड़ा है, लेकिन यह फा भी कम नहीं है। मैं केवल मानव जाती के सबसे सांसारिक कार्यों, सबसे सरल भाषा, और सबसे निम्न रूपों का उपयोग कर रहा हूँ—मानव जाती के—इस फा को सिखाने के लिए। आशय आपको उसके असीम और अंतहीन आंतरिक अर्थों को समझने और ज्ञान प्राप्त करने देना है। इसलिए सुनिश्चित करें कि आप इसे चुन-चुन कर ना पढ़ें। कुछ भी छोड़े बिना आपको फा को आरम्भ से अंत तक पढ़ना होगा। इस पर ध्यान दें। इसकी निरंतरता आपकी साधना के लिए अत्यधिक लाभदायक है। फा में निरंतरता है, इसलिए आप इसे वैसे ही चुनकर नहीं पढ़ सकते हैं।

प्रश्न: क्या एक अभ्यासी का सारा वातावरण गुरु जी द्वारा निर्मित किया गया है ?

गुरु जी : आसपास का वातावरण निर्मित नहीं किया जाता है। आपकी साधना के दौरान आपके आसपास जो कुछ भी घटता है, वह पूर्वजन्मों के कर्मों के कारणों का परिणाम होता है, अर्थात्, यह आपके बुरे कर्मों के भुगतान के साथ-साथ आपके पिछले अच्छे कर्मों के लिए पुरस्कार भी है। सब कुछ आपकी अच्छाई या बुराई का परिणाम है। मैं उनका उपयोग आपकी साधना करने में सहायता के लिए करता हूँ। यह कुछ ऐसा नहीं हैं जो मैंने उत्पन्न किया है। निश्चित रूप से, जब आप किसी कठिन परीक्षा से गुजरते हैं तो यह सच है कि आप बुरे कर्म का भुगतान कर रहे हैं। बहुत से शिष्य जो सपने में या जब वे शांत अभ्यास करते हैं तब जो देखते हैं, पूरी तरह से वे भी निर्मित नहीं होते हैं। अधिकांश, यह वास्तविकता प्रदर्शित की जा रही होती है, केवल आप इसे बहुत स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आप कृपया उन अभ्यासियों को अपनी साधना के बारे में कुछ बातें बता सकते हैं जो फलपदवी प्राप्त करेंगे?

गुरु जी : फलपदवी प्राप्त करने के बाद आपको बातें पता चलेंगी। मेरा आशय आपके साथ मेरी पृष्ठभूमि साझा करने का था। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, हालाँकि, ऐसा लगता है कि यह कम संभव है। और ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि भविष्य में लोगों को मेरे अस्तित्व के बारे में जानने की अनुमति नहीं होगी। इसलिए मैं अपनी जीवनी लोगों के लिए पीछे नहीं छोड़ना चाहता। आपकी बात करें तो, एक बार जब आप फलपदवी प्राप्त करेंगे आपको पता चल जाएगा। उस समय, आपके गुरु जी की महानता का वर्णन करने के लिए शब्द पर्याप्त नहीं होंगे! (तालियां)

मैंने न केवल आपकी, बल्कि सभी जीवों की अत्यधिक चिंता की है। मैंने सभी जीवों के लिए अपना लगभग सब कुछ लगा दिया है। वास्तव में, उस तरह का त्याग आपको समझ में नहीं आएगा, जहां कुछ भी नहीं बचता है। मैंने कई बार कहा है कि मैंने इस फा में सब कुछ सम्मिलित किया है जो आपको साधना और उन्नति करने में सहायता कर सकता है, और वह सब कुछ जो आप साधना से प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि आप विभिन्न स्तरों पर हैं, आप में से कोई भी वास्तव में मेरे शब्दों के महत्व को नहीं समझ सकता है। जब तक आप साधना करेंगे तब तक आपको सब कुछ प्राप्त होगा। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जो कुछ आप प्राप्त करते हैं उसमें मेरी कितनी चीजें सम्मिलित हैं? (तालियाँ), वास्तव में, मैं इन चीजों के बारे में बात नहीं करना चाहता जो मुझसे संबंधित हैं। मैं आपको केवल यह बताना चाहता हूं कि आपके गुरु जी ने जो दायित्व लिया है उसे आपने संजोना चाहिए! आपको अच्छी तरह से साधना करनी होगी। इस अवसर को न चूकें।

प्रश्न: पश्चिमी देशों में रहने वाले दाफा कब अनुवादित कर सकते हैं?

गुरु जी : ज़ुआन फालुन जल्द ही उपलब्ध होगा। फ़्रांसीसी संस्करण जल्द ही प्रकाशक को मुद्रण के लिए भेजा जाएगा और अंग्रेजी संस्करण पहले से ही उपलब्ध है। जर्मन संस्करण अभी पुस्तक की दुकानों में है; बहुत सी दुकानों में उपलब्ध है। अन्य भाषाओं में संस्करणों की बात की जाए तो, इतालवी और स्पैनिश में अनुवादित किया जा रहा है, और रूसी में भी उपलब्ध है। पश्चिमी भाषाओं की यह स्थिति है। और लोग इसे अभी भी अन्य भाषाओं में अनुवाद कर रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैं वास्तव में इस विषय को लेकर चिंतित हूं। अधिकतर इसका कारण यह है कि कई विषयों में अभी भी स्थिति उचित नहीं है। और विभिन्न स्रोतों से हस्तक्षेप हो रहा है जिनके बारे में आपको जानकारी नहीं है। इसलिए यह लम्बे समय से चल रहा है।

प्रश्न: क्योंकि नैतिक गुण की साधना सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, फिर गुरु जी अभी भी पुस्तक में साधना के स्तरों और दिव्य शक्तियों का उल्लेख क्यों करते हैं ?

गुरु जी : नए शिष्यों द्वारा बहुत से प्रश्न उठाए जा रहे हैं। पूछने से पहले कम से कम आप पुस्तक पढ़ें! साधना और बुद्ध की क्षमताएं अविभाज्य हैं। इसलिए मैं उन बातों को केवल साधारण शब्दों में फा के अंतर्निहित सत्य और सिद्धांतों के संदर्भ में बोलता हूं, और यह आपको समझने में सहायता करता है। मैं एक उदाहरण देता हूं जिससे साधना करने वाले अन्य चीजों को समझ सकें—यही कारण है। ऐसा नहीं है कि मैं आपसे उन चीजों का पीछा करने से रोकता हूं, लेकिन फिर भी मैं आपको उनके बारे में बताते रहता हूं। उन चीजों को बुद्ध फा की साधना से अलग नहीं किया जा सकता है। आप जिसका पीछा करते हैं और फा की सत्यता जिसे आपको समझना चाहिए, दोनों पूरी तरह से भिन्न चीजें हैं; दिव्य शक्तियाँ बुद्ध फा के एक और पक्ष की अभिव्यक्ति हैं। बुद्ध फा की दिव्य शक्तियों की

असाधारणता को देखने में आपकी असमर्थता का कारण आपका पुस्तक को मानव मानसिकता के साथ पढ़ना है। आप केवल उन चीजों को पढ़ रहे हैं जो आपको पसंद हैं। जो आपकी मानवीय सोच समझने में विफल है उसे आप पढ़ते भी नहीं हैं और यहां तक कि अस्वीकार भी करते हैं। ठीक यही कारण है कि आप प्रगति नहीं कर सकते।

प्रश्न: समलैंगिकता को अनैतिक क्यों माना जाता है?

गुरु जी : इसके बारे में सोचिए, सभी : क्या समलैंगिकता मानवीय व्यवहार है? दिव्यलोक ने स्त्री और पुरुष को बनाया। इसका उद्देश्य क्या था? भावी पीढ़ियों को जन्म देने के लिए। एक पुरुष के साथ एक पुरुष, या एक महिला के साथ एक महिला—यह जानने के लिए बहुत गहरी समझ की आवश्यकता नहीं है कि क्या उचित है क्या अनुचित। जब छोटी चीजों को अनुचित ढंग से किया जाता है, तो उस व्यक्ति को गलत कहा जाता है। जब बड़ी चीजें अनुचित ढंग से की जाती हैं, तो यह लोगों का एक ऐसा मामला है जिसमें अब मानवजाती की नैतिक पकृति नहीं रही, और फिर वे मानव होने के योग्य नहीं रहते।

मैं आपको बताता हूं कि आज का समाज ऐसा क्यों हो गया है। इसका कारण यह है कि मनुष्य को सीधी राह पर रखने के लिए कोई सच्चा फा नहीं है। यह दाफा सबसे अराजक वातावरण में सिखाया जा रहा है, ऐसे समय में जब कोई भी धर्म लोगों को नहीं बचा सकता है, और जहां परिस्थिति यह है कि कोई भी दिव्य अब लोगों में रुचि नहीं लेता है। फा सर्वशक्तिमान है। सबसे अच्छे काल में इस तरह के एक महान फा की आवश्यकता नहीं होती है। केवल अत्यंत बुरे काल में ही फा की शक्ति प्रकट हो सकती है। अन्य कारण भी हैं।

प्रश्न: ऐसा क्यों है कि समलैंगिकों को बुरे लोग माना जाता है?

गुरु जी : मैं आपको बता दूँ, यदि मैं आज इस फा को नहीं पढ़ा रहा होता, तो दिव्यों द्वारा सर्वनाश का पहला लक्ष्य समलैंगिक होते। मैं नहीं बल्कि दिव्य उन्हें नष्ट कर देते। आप जानते हैं कि समलैंगिकों ने वैधता इसलिए पाई है क्योंकि समलैंगिकता प्राचीन यूनान की संस्कृति में पाई जाती थी। हाँ, प्राचीन यूनानी संस्कृति में भी ऐसी ही समान स्थिति थी। और क्या आप जानते हैं कि प्राचीन यूनानी संस्कृति का अस्तित्व अब क्यों नहीं है? प्राचीन यूनानी क्यों चले गए? क्योंकि वे उस हद तक पतित हो चुके थे, और इसलिए उन्हें नष्ट किया गया।

जब दिव्यों ने मनुष्य को बनाया तो उन्होंने मानव व्यवहार और जीवनयापन के लिए आदर्श निर्धारित किए। जब मानव उन सीमाओं को लांघ जाता है, तो उसे अब मानव नहीं कहा जाता है, हालांकि वे अभी भी उपरी तौर पर मानव स्वरूप धारण किये होता है। इसलिए दिव्य उनके अस्तित्व को बर्दाश्त नहीं कर सकते और उन्हें नष्ट कर देंगे। क्या आप जानते हैं कि इस विश्व में युद्ध, महामारी और प्राकृतिक व मानव निर्मित आपदाएँ क्यों होती हैं? ऐसा निश्चित रूप से इसलिए है क्योंकि मनुष्यों के बुरे कर्म हैं, और वे घटनाएं इन्हें हटाने के लिए होती हैं। भविष्यकाल कितना भी उत्तम क्यों न हो, फिर भी पृथ्वी पर युद्ध, महामारी और प्राकृतिक व मानव निर्मित आपदाएँ होंगी। वे लोगों के लिए कर्म को खत्म करने का एक तरीका हैं। कुछ लोग जिन्होनें पाप किये हैं, उनके शरीर की मृत्यु और पीड़ा के माध्यम से उनके कर्म समाप्त हो सकते हैं, और फिर पुनर्जन्म होने पर वे उस कर्म

से मुक्त होंगे। उनका जीवन वास्तव में समाप्त नहीं होता और वे फिर से पुनर्जन्म लेते हैं। लेकिन कुछ लोगों ने जो बुरे कर्म जमा किये हैं, वे बहुत अधिक हैं, इस कारण उनके अस्तित्व के मूल तत्वों को अपराधी ठहराकर नष्ट कर दिया जाएगा। समलैंगिक न केवल उन आदर्शों का उल्लंघन करते हैं जो दिव्य मानव जाति के लिए निर्धारित करते हैं, बल्कि मानव समाज के नैतिक आदर्श को भी हानि पहुँचाते हैं। विशेष रूप से, यह बच्चों को जो संस्कार देता है वह भविष्य के समाजों को एक प्रकार से आसुरिक बना देगा। यह बात है। हालाँकि, इस तरह का विनाश ऐसा नहीं है कि नष्ट होने के बाद वे अदृश्य हो जायेंगे। उस व्यक्ति को परत दर परत नष्ट किया जाता है जो हमें बहुत तेज़ लगता है, लेकिन वास्तव में यह उस समय के आयाम में बेहद धीमी गति से हो रहा होता है। बार-बार, एक बहुत ही कष्टदायक ढंग से नष्ट किया जाता है। यह अत्यधिक भयावह है। एक व्यक्ति को सच्चे ढंग से जीना चाहिए, एक मनुष्य की भांति सम्मानपूर्वक जीना चाहिए। उसे अपने आसुरिक-स्वभाव में लिप्त नहीं होना चाहिए और उसे जो चाहे वह नहीं करना चाहिए।

प्रश्न: मैं फलपदवी प्राप्त करना चाहता हूं। मेरा लक्ष्य अर्हत स्तर तक पहुँचने का है। मैंने उन लोगों की सहायता करने की पहल नहीं की है जिनका मेरे साथ कोई कर्मिक संबंध नहीं है, और इसमें फा को फैलाना भी शामिल है। क्या मैंने अनुचित किया है ?

गुरु जी : हाँ किया है। यह आपकी सतही मानवीय सोच है। क्या आप जानते हैं कि मैंने आपकी सहन करने की क्षमता, आपके सदगुण की मात्रा और आपके भौतिक आधार का स्तर, इन सभी को मिलाकर एक ऐसी अच्छी व्यवस्था कर रखी है जहाँ तक आप में से हर कोई साधना कर सकता है? आप स्वयं ही अपने लिए साधना के मार्ग की व्यवस्था करना चाहते हैं, लेकिन यह नहीं हो सकता है और न ही कोई इसे मान्यता देगा। आप खुद को अर्हत स्तर तक ही क्यों सीमित करना चाहते हैं? इसका कारण यह है कि अब आप केवल इस सीमा तक ही फा को समझ पा रहे हैं। आपके कई मोहभाव हैं जिन्हें आप छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। केवल यही कहा जा सकता है कि आप इस तरह से सोच रहे हैं क्योंकि आप फा को इतना ही समझ पा रहे हैं। भविष्य में, जब आप उच्च स्तर पर फा को समझ जायेंगे—जब आप दाफा की पुस्तकें पढ़ने की संख्या में वृद्धि करेंगे—निश्चित रूप से आपकी सोच में बदलाव आएगा। आपको लगेगा कि आपको यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए था, और उस समय आप शर्मिंदा अनुभव करेंगे। अभी मैं आपको केवल यह बता सकता हूँ कि यह इस बात को दर्शाता है कि आप अभी किस स्तर पर हैं, इसलिए मैं आपको दोषी नहीं ठहराता, लेकिन आपका आचरण ठीक नहीं है। यदि आप अपने ऊपर के दायित्वों को ढील देते हैं, तो आप जो मोहभाव छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, वह आपके लिए लगन से आगे बढ़ना कठिन बना देंगे।

प्रश्न: जब मैंने पहली बार इस साधना को अपनाया था, तब मैं बहुत लीन और परिश्रमी था। लेकिन कुछ समय पहले, मुझे अचानक ही दाफा के प्रति संदेह होने लगा। मैंने बार-बार गलतियाँ कीं और परीक्षा में सफल नहीं हो सका। क्या यह विचार-कर्म या आसुरीक हस्तक्षेप है?

गुरु जी : मैं आपको अपने मूल और सच्चे स्वरूप में लौटने के लिए क्यों कहता हूं? अपने सच्चे स्वरूप में लौटने का क्या उद्देश्य है? यह आपको अपने सच्चे स्वरूप में लौटाने के लिए है। मनुष्य के कई मोहभाव, सभी प्रकार की धारणाएं, और भावनाओं और इच्छाओं की लड़ियाँ होती हैं। ये सभी विचार आपके मन में हैं, लेकिन उनमें से कोई भी आप स्वयं नहीं हैं। मैंने कहा है कि यह द्वार पूरा खुला है और यह केवल आपके मन पर निर्भर है। यह किसी व्यक्ति के मन पर है कि क्या वह साधना

कर सकता है या नहीं, और क्या वह अभी भी अपने मूल और सच्चे स्वरूप में लौटने के बारे में सोच सकता या इच्छा करता है या नहीं। इसलिए मैं आपको बता रहा हूं कि आपकी सोच में हस्तक्षेप करने वाली हर चीज आप स्वयं नहीं हो सकते। कुछ लोग जो साधारण लोगों के बीच रहते हुए अपने स्वार्थ को नहीं भुला सकते हैं, या जो यह नहीं बता सकते हैं कि कौन से विचार उनके हैं और कौन से नहीं, और जो यह भी सोचते हैं कि वे बुरे विचार उन्हीं के हैं, हम निश्चित रूप से उनकी देखभाल नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने अपने आप को ही वे बुरे विचार मान लिया है, लेकिन ऐसा है कि हमारी ये चीज़ें उन बुरे विचारों को नहीं दी जा सकती हैं।

प्रश्न: ज़ुआन फालुन में, यह उल्लेख किया गया है कि महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों ने अपनी विशेषताओं के आधार पर ब्रह्मांड का निर्माण किया।

गुरु जी : मैं आपको बता दूँ, बहुत से लोगों ने इस अनुभाग के बारे में पढ़ा है [और विस्मित हुए हैं]। यह उन चीज़ों को संदर्भित करता है जो सभी विश्वों में कई आयामों के विशाल ब्रह्मांड में घटित हुई थीं जिसमें सभी विश्व समाहित हैं। ब्रह्मांड अत्याधिक विशाल है। मैं जिस पर चर्चा कर रहा था वह पूरे ब्रह्मांड के विषय में नहीं था। ब्रह्मांड के विभिन्न स्तरों पर महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति, ब्रह्मांड के दाफा के विभिन्न सत्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, और यहाँ तक कि एक ही स्तर के ज्ञानप्राप्त व्यक्ति भी भिन्न-भिन्न ज्ञान प्राप्त करते हैं। जब विशाल ब्रह्मांड के भीतर के विभिन्न आकारों के कुछ विश्व अध: पतन के लक्षण दिखाना शुरू करते हैं, तो महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति जो एक उच्च स्तर तक और पवित्र सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, उस स्तर पर एक नए ब्रह्मांड का निर्माण कर लेते हैं। यह विश्वों के अनगिनत परतों को समाहित करने वाले विशाल, अत्यधिक विशाल ब्रह्मांड को संदर्भित नहीं करता है।

प्रश्न: "समय के साथ संवाद" लेख में, एक दिव्य का उल्लेख किया गया है। हमें एक दिव्य की अवधारणा को कैसे समझना चाहिए और यह बुद्ध या ताओ से कैसे भिन्न है? इसका अति प्राचीन दिव्यों से क्या सम्बन्ध है?

गुरु जी : ब्रह्मांड में वे सभी जिनके पास साधारण मनुष्यों से बढ़कर क्षमताएँ हैं, वे दिव्य हैं। सूक्ष्म, लेकिन विशाल जीव जो वायु में व्याप्त हैं, वे अनगिनत और निराकार दिव्य हैं, यह ऐसा है। दिव्य विभिन्न प्रकार के आयामों में होते हैं और विभिन्न प्रकार के होते हैं। क्या बुद्ध दिव्य नहीं हैं? क्या ताओ दिव्य नहीं हैं? सामूहिक रूप से उन्हें दिव्यों के नाम से जाना जाता है। केवल यह है कि प्रत्येक की अपनी साधना की विशेषताएँ और स्वरूप होते हैं। साथ ही उन्होंने अपनी अनोखी चीजें बनाई हैं। तो एक को ताओ कहा जाता है, एक को बुद्ध कहा जाता है, और दूसरे को दिव्य कहा जाता है। विश्व में सभी में विचारशक्ति और जीवन है। क्या आप कह सकते हैं कि वे दिव्य नहीं हैं? किसी भी आयाम में समय उस आयाम के सभी पदार्थों में होने वाले परिवर्तनों को कड़ाई से नियंत्रित करता है। क्या आप कह सकते हैं कि समय एक दिव्य नहीं है? यह अपने नियंत्रण की सीमा के भीतर सभी जीवों के विचारों को जानता है। यदि यह बोलना चाहता है, यह बोल सकता है; यदि वह मानव रूप धारण करना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है। क्या आप इसे दिव्य नहीं कहेंगे? मनुष्य सोचता है कि समय केवल एक अवधारणा है। सूर्य उदय होता है और अस्त होता है, लोग कुछ बिंदुओं को अंकित करते हैं और कुछ संख्याओं को एक घड़ी पर लिखते हैं—और इसे समय समझा जाता है। साधारण लोगों के समाज में इन सब को और सूर्य के उदय और अस्त होने को, समय को व्यक्त करने के लिए उपयोग किया जाता है।

लेकिन मैं आपको कह सकता हूं कि सूर्य का उदय और अस्त होना और पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा करना भी—बिना परिवर्तन के—इस आयाम के समय द्वारा सिमित और व्यवस्थित किया जाता है।

प्रश्न: मैं फलपदवी प्राप्त करने के लिए दृढ़ हूं। जब गुरु जी फा की शिक्षा देना बंद कर देंगे, तो क्या मेरी फिर भी गुरु जी के सिद्धांत शरीर द्वारा रक्षा की जायेगी ?

गुरु जी : मैंने वास्तव में फा को पढ़ाना बंद कर दिया है। मेरी फा को व्यवस्थित रूप से पढ़ाने की अवधि बीत चुकी है। अब मैं यहाँ केवल फा सम्मेलन में भाग लेने के लिए आया हूँ और जब तक मैं यहाँ हूँ आपके कुछ प्रश्नों के उत्तर दूंगा। सहायता केंद्र के स्वयंसेवक हमेशा चाहते हैं कि मैं और अधिक गहरी बातों के बारे में बात करूं और आपको कुछ और बताऊं। अतीत में मेरा शिक्षा प्रदान करना सबसे महत्वपूर्ण था। आज, आपकी साधना और सुधार सबसे महत्वपूर्ण हैं। ऐसे कैसे हो सकता है कि आपकी देखरेख करने के लिए कोई सिद्धांत शरीर नहीं होंगे? जब मेरे सिद्धांत शरीर आपकी देखभाल करना छोड़ देंगे, तब आप फल पदवी प्राप्त कर चुके होंगे।

प्रश्न: कुछ नए शिष्य जिन्होंने अभी हाल ही में फा प्राप्त किया है, वे 1998 से पहले के उत्तरी अमेरिका में गुरु जी के फा-व्याख्यान के ऑडियो और वीडियो सुनना और देखना चाहते हैं। क्या यह ठीक होगा ?

गुरु जी : जब मैं पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका गया था तब के मेरे फा-व्याख्यानों की एक पुस्तक है। पुस्तक को पढ़ने से फा की आपकी समझ को बहुत लाभ होगा। दूसरी ओर, हो सकता है कि वे वीडियो आपसे सीधे सम्बंधित न हों, क्योंकि उस समय मैं श्रोताओं में उपस्थित शिष्यों की विशिष्ट परिस्थितियों को संबोधित कर रहा था। इसके विपरीत, पुस्तकें, साधारण श्रोताओं के लिए उपयुक्त हैं, क्योंकि उन्हें पुनर्गठित किया गया है। इसके अतिरिक्त, जब मैं फा पर बातचीत करता हूं तो आपने वीडियो पर कुछ अनोखी बातें अनुभव की होंगी। जब मैं बोलता हूं, बोलता हूं, बोलता हूं, अचानक मैं विषयों को बदल देता हूं और किसी और विषय में बात करने लग जाता हूं। हो सकता है कि आप सभी ने यह अनुभव किया हो। मैं ऐसा क्यों करता हूँ? क्योंकि जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, मैंने पाया कि मेरे बात करने के दौरान शिष्य उसे समझ चुके थे। इससे पहले कि मैं बोलना समाप्त करता, वे इसे समझ चुके थे। इसलिए, फिर, मैंने इस पर चर्चा करना बंद कर दिया और दूसरे विषय पर चला गया। क्योंकि बहुत सारे विषयों के संबंध में, मेरे वीडियो में कई बार ऐसा होता है, वीडियो देखना आपके लिए पुस्तक पढ़ने से बेहतर नहीं हो सकता है। पुस्तक पढ़ना आपके लिए बेहतर होगा, यही मेरे कहने का तात्पर्य है। पुस्तक और वीडियो दोनों का एक साथ रहना हस्तक्षेप कर सकता है। इसलिए जैसे ही विभिन्न क्षेत्रों में फा-व्याख्यानों की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, सभी रिकॉर्डिंग और वीडियो को मिटाने की आवश्यकता होती है, और यह दाफा की रक्षा के लिए है। एक व्यक्ति जिसे नहीं छोड़ सकता है वह मानवीय भावना है।

प्रश्न: मैं और मेरी पत्नी दोनों दाफा का अभ्यास करते हैं। कुछ महीनों पहले, एक के बाद एक, हम दोनों ने एक बेहद खूबसूरत बड़े पक्षी का सपना देखा। मेरे शरीर में घुसने के बाद पक्षी अदृश्य हो गया, जबकि मेरी पत्नी ने पक्षी का चहचहाना सुना। इसका क्या संकेत है ?

गुरु जी : यह केवल एक पक्षी है। आपके एक के बाद एक जीवन के पुनर्जन्मों में, यहां तक कि एक दिव्य भी जो बहुत उच्च स्तर से नीचे आता है, वह एक जीवनकाल में एक मनुष्य के रूप में और दूसरे

में एक पशु के रूप में पुनर्जन्म ले सकता है। मानव जगत में ऐसा ही होता है। पहली चीज जिसे आप अपनी साधना के शुरुआती चरण में देखते हैं, वह शायद आपका मूल रूप है या फिर आप जहाँ थे वहां की अब तक की सबसे पुराने स्थान की एक छवि है। यह एक मानव, एक पशु या इस या उस के रूप में हो सकता है। दिव्यलोक में पक्षी भी दिव्य होते हैं।

प्रश्न: क्या साधक पोषण पदार्थ ले सकते हैं?

गुरु जी : आपने पुस्तक नहीं पढ़ी है, आपने निश्चित ही पुस्तक नहीं पढ़ी है। इसके बारे में सोचें, सभी : एक साधक का शरीर रोगी होने पर *गोंग* का विकास नहीं कर सकता है। यह कि, आपका अशुद्ध शरीर साधना के लिए उपयुक्त नहीं होगा। जब आप अपने शरीर की साधना करते हैं, तो उसे पूर्ण शुद्धता के बिंदु तक शुद्ध करने की आवश्यकता होती है, और उसके बाद ही वह *गोंग* विकसित करना प्रारंभ कर सकता है। इसलिए मैंने कहा है कि हम उपचार नहीं करते हैं। लेकिन मैं सच्चे साधकों के शरीरों को शुद्ध करूँगा, और इस तरह का शरीर रोग से मुक्त होगा। हमारा ध्येय बुद्ध के आयाम में पाए जाने वाले जैसे शरीर को प्राप्त करना है। क्या आप पोषण पदार्थ लेने से उसे प्राप्त कर सकते हैं? निश्चित ही नहीं। तो उन्हें क्यों लें? ऐसा नहीं है कि वे चीजें बहुत स्वादिष्ट है और इनके बढ़िया स्वाद चखने जरुरी हैं। हम आपके शरीर को साधना के दौरान शुद्ध, अधिक शुद्ध बनाते हैं जिससे धीरे-धीरे यह सबसे प्राकृतिक और उत्तम अवस्था तक पहुंच सके। यह दवाइयाँ लेने से प्राप्त नहीं हो सकता है। यदि आप दवाइयाँ या पोषण पदार्थ लेते हैं, तो क्या आपको अभी भी साधना के विषय में संदेह नहीं है? आप निश्चित ही स्वयं को एक साधक के रूप में नहीं मान रहे हैं। क्या यही कारण नहीं है? यदि *आप* स्वयं ही अपने आप को एक साधक के रूप में नहीं मानते हैं, तो *हम* कैसे मान सकते हैं? ऐसा ही है, है ना? चाहे वह चीनी हर्बल दवाइयाँ हो या पश्चिमी दवाइयाँ, सभी अंततः दवाइयाँ ही हैं। आपका लक्ष्य बस एक स्वस्थ शरीर पाना है, लेकिन हमारी साधना इससे कहीं अधिक प्राप्त करवाती है। मैंने समझा दिया है कि ये चीजें कैसे काम करती हैं। तो आपको क्या लगता है कि इसे कैसे संभाला जाना चाहिए?

प्रश्न: हम चीन से आए हुए शिष्य हैं। पांच अन्य लोग हैं जो विभिन्न कारणों से नहीं पहुँच पाए। क्या आसुरिक हस्तक्षेप बहुत प्रबल था या यह गुरु जी द्वारा ही व्यवस्थित किया गया था कि वे नहीं आ सकें ?

गुरु जी : मैं नहीं चाहता कि आप पांच भी आएं। क्यों? जैसा कि मैंने अभी कहा, पहले मेरा फा की शिक्षा देना सबसे महत्वपूर्ण था, जबकि आज आपकी साधना और सुधार सबसे महत्वपूर्ण हैं। अपने मन को पूरी तरह से साधना पर लगाएं और लगातार और दृड़ता से साधना करें—यही प्रमुख है। अस्थिर मन के साथ, मुझे ढूंढने की चाह के साथ, फा पर मेरी बातों को सुनने की इच्छा रखते हुए, हर जगह मेरा पीछा करते हैं ... यह आपकी साधना को कदापि लाभ नहीं पहुंचाता है, कदापि नहीं। जब सिंगापुर में फा सम्मेलन आयोजित किया जाना था, तो चीन के बहुत से लोग जाना चाहते थे। तब मैंने प्रमुख दाफा एसोसिएशन से कहा, "आपको इसे आगे पहुंचाने की आवश्यकता है: प्रत्येक क्षेत्र के सहायता केंद्रों से कहें कि शिष्यों को सूचित करें कि उन्हें यहाँ वहां यात्रा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे कोई भी लाभ नहीं होगा।" मूल रूप से, सिद्धांत शरीर ने इस समय अवधि के लिए आपकी साधना को चरणबद्ध किया है। लेकिन आपने इसे बाधित कर दिया है। आपके कुछ मोहभावों को संभवतः इस समय के दौरान छोड़ दिया जाना चाहिए था जो आपको साधना करने के लिए नियत किया गया था, लेकिन जिसका सुधार किया जाना चाहिए था, वह एक ढंग से, बाधित हो गया। यही कारण है।

जो आप नहीं कर सकते हैं उन चीजों पर बल देने के लिए आप उन सभी मोहभावों को आसुरिक हस्तक्षेप का नाम नहीं दे सकते हैं।

प्रश्न: मेरे पति ने कभी व्यायाम नहीं किये, हालांकि उन्होंने ज़ुआन फालुन को एक बार पढ़ा है और गुरु जी के व्याख्यानों के वीडियो देखे हैं। लेकिन उनका त्रिनेत्र खुल गया है और वह "दूर दृष्टि" भी कर सकते हैं

गुरु जी : इसका कारण उनका पूर्वनिर्धारित संबंध है। उनकी आध्यात्मिक नींव काफी अच्छी होगी, जिसके कारण उनका तीसरा नेत्र पुस्तक पढ़ते ही खुल गया। अब वह इसका अध्ययन करता है या नहीं या वह साधना करता है या नहीं, इस जटिल समाज में हर कोई बेहद जटिल हो गया है। यहाँ बैठे श्रोताओं में से प्रत्येक में मानव संसार में आने से पहले, कहीं अतीत में आज फा को प्राप्त करने के लिए आपके मन और आत्मा की गहराई में बीज बोए गए थे। मैंने मानव समाज में आपको कई बार ढूँढा और आप मिले और मैंने आपको चिन्हित किया। ये सभी चीजें एक मजबूत भूमिका निभाती हैं, फिर भी उनमें से कोई भी आपके मानवीय मोहभावों को कम नहीं कर सकता है। और उनमें से कोई भी आपको ऐसा अनुभव नहीं करा सकता जैसे आपने फा प्राप्त करने पर तब अनुभव किया था: "ओह, मैंने इतने वर्षों तक प्रतीक्षा की। मैं केवल इसे प्राप्त करने के लिए आया हूं।" बहुत से लोगों की अब वह भावना नहीं रही है, और इसके परिणामस्वरूप उनकी साधना नियमित नहीं हो रही है और वे परिश्रमी नहीं रह रहे। कुछ लोग जो पूर्वनिर्धारित हैं और जो फा प्राप्त कर चुके हैं, अभी भी अपने मोहभावों को नहीं त्याग सकते हैं। सभी प्रकार की स्थितियाँ होती हैं। एक बार पूर्वनिर्धारित संबंध समाप्त होने पर, सबकुछ खत्म हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, जब आपने श्रीवत्स प्रतीक के बारे में बात की, तो आपने कहा, "एक बुद्ध जिसका स्तर तथागत से दो गुना अधिक है, उनके पास दो श्रीवत्स प्रतीक होते हैं।" क्या आप उस व्यक्ति के गोंग स्तंभ की ऊँचाई को तथागत के दुगने होने का उल्लेख कर रहे हैं?

गुरु जी : मैं एक व्यक्ति के *नैतिक गुण* और शक्तिशाली सदगुण का उल्लेख कर रहा था। *गोंग* उस की एक अभिव्यक्ति मात्र है। इसे एक व्यक्ति के गोंग स्तंभ के रूप में समझना भी ठीक है। लेकिन यह एक व्यक्ति के फल पदवी प्राप्त करने के बाद का *गोंग* स्तंभ होना होगा। कहने का अर्थ यह है कि फल पदवी प्राप्त करने के बाद गोंग स्तंभ की ऊंचाई तथागत की तुलना में दोगुनी होनी चाहिए। साधना प्रक्रिया के दौरान विकसित हुए गोंग स्तंभ की गणना नहीं की जाती है। अभी तक इसे अंतिम रूप नहीं दिया जाता है, क्योंकि आप के अन्य भागों नें फल पदवी प्राप्त नहीं की होती है। फिर भी एक निश्चित सुविधाजनक बिंदु से देखें तो यह ऊर्जा के अस्तित्व का एक रूप है जो साधना करते समय आपके स्तर और नैतिक गुण का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रश्न: सिंगापुर फा सम्मेलन के दौरान, जब शिष्यों ने तालियां बजाईं, तो गुरु जी अधिकतर अभिवादन के रूप में हशी स्थिति में दोनों हाथ जोड़ते थे। लेकिन पहले जब आप फा व्याख्यान देते थे, तो आप अधिकतर एक ही हाथ से अभिवादन स्वीकार करते थे। इसमें क्या गहरा अर्थ है?

गुरु जी : मैं अपने अभ्यासियों की ओर एक ही हाथ का उपयोग करता हूं। लेकिन एक बात है: जब मैं सभी के शुद्ध मनों को देखता हूं और यह की वे लगन और निरंतरता से आगे बढ़ रहे हैं, तो मैं

वास्तव में खुश होता हूं, और फिर मुझे दोनों हाथों का उपयोग करना अच्छा लगता है। साधारण परिस्थितियों में एक गुरु अपने अभ्यासिओं की ओर एक हाथ का उपयोग करते हैं।

प्रश्न: मैंने यह सुना है कि जब कोई व्यक्ति ज़ुआन फालुन पढ़ लेता है, तो वह हमेशा अपनी मुख्य चेतना (झू युआनशेन) के साथ दाफा को ले जा सकता है, चाहे वह फल पदवी प्राप्त करे या न करे।

गुरु जी : कौन फल पदवी प्राप्त करने की बजाए केवल फा को कंठस्थ करना चाहेगा? आप पुस्तक को क्यों कंठस्थ करते हैं? क्या यह फल पदवी तक पहुँचने के लिए नहीं है? *ज़ुआन फालुन* को कंठस्थ करने से आपको बेहतर बनने में सहायता मिलती है, क्योंकि आपके शरीर का सूक्ष्म भाग और सबसे बाहरी सतह पर मानवीय शरीर दोनों इसे एक साथ कंठस्थ कर रहे होते हैं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे कैसे कंठस्थ करते हैं—और यह उन लोगों के लिए भी लागू होता है जिन्होंने इसे बहुत अच्छी तरह से कंठस्थ किया है—एक निश्चित समय पर आप अचानक पाएंगे कि अब आप इसे कंठस्थ नहीं कर पाते। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके मुख्य शरीर के जिस भाग ने इसे कंठस्थ किया है, उसे मानक के पूरा होने के बाद आपसे अलग कर दिया जाता है। आप अचानक अनुभव करते हैं, "ओह, मुझे अब याद क्यों नहीं आ रहा है?" ऐसा इसलिए है क्योंकि जो भाग आदर्श के अनुरूप हो गया है, उसे अलग कर दिया गया है, और मानवीय सतह अब इसे पूरी तरह से याद नहीं कर सकता है, क्योंकि वह इसे भूल गया है। कुछ अधिक भूल जाते हैं, कुछ कम भूल जाते हैं। इस तरह की स्थिति होती है।

आप में से कई लोगों ने ऐसी स्थिति का अनुभव किया है जहां समय-समय पर आप अच्छी तरह से सुन सकते हैं या समय-समय पर आपकी दिव्य दृष्टि से आप चीजों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। कोई व्यक्ति कब स्पष्ट रूप से देख सकता है या बहुत ही अच्छी तरह से देख सकता है? जब वह किसी स्तर पर वास्तव में अच्छी तरह से साधना कर रहा होता है, जबकि अलगाव नहीं हुआ होता है और वह मानक को पूरा करने ही वाला होता है। वह स्पष्ट रूप से देख सकता है, अपने कानों से साफ-साफ सुन सकता है, और उसका शरीर संवेदनशील है। एक बार अलगाव होने के बाद वह पाता है कि वह उस अवस्था को खो चुका है, और वह सोचता है, "क्या यह इसलिए है क्योंकि मेरा स्तर नीचे गिर गया है? चीजें पहले की तरह अच्छी क्यों नहीं हैं? " ऐसा नहीं है कि आप नीचे गिर गए हैं। यह है कि आपके जिस भाग ने साधना समाप्त कर ली है, उसे अलग कर दिया गया है, और जो कुछ बचा है, उस भाग ने अभी तक साधना समाप्त नहीं की है और उसे साधना करनी जारी रखनी चाहिए। इसलिए आप समय-समय पर संवेदनशील रहेंगे। यह ऐसा ही है। यह केवल दाफा का अभ्यास करते समय होता है।

प्रश्न: क्या ऐसा है कि जैसे-जैसे आप उच्च स्तर पर साधना करते हैं, आप कम सोते हैं?

गुरु जी : ऐसा नहीं है। यह आपके आंतरिक विचारों के कणों के परिवर्तनों और उन्नति से संबंधित है। लेकिन यह समय-समय पर होता है। जिस विषय पर मैंने अभी बात की है, उसमें भी यह कारक सम्मिलित है। सतह पर आप साधारण स्थिति में लौट आएँगे जब आप का अच्छी तरह से साधना किया हुआ भाग आपसे अलग हो जाएगा। जब तक आप फल पदवी तक नहीं पहुँचते तब तक आप यह अनुभव करेंगे। यह सब आपको साधारण लोगों की तरह रहने देता है। लेकिन आपका मानवीय पक्ष कमजोर, और कमजोर होता जाएगा। और यदि आप स्वयं को उच्च आदर्शों पर रखते हैं, तो शायद आपका आचरण साधारण लोगों के बीच बेहतर, और बेहतर होगा। यह ऐसा ही है।

प्रश्न: समय बहुत कम है, लेकिन मैं अभी भी पूर्ण-कमल की स्थिति में नहीं बैठ पाता हूँ। मैं बेहतर कैसे कर सकता हूं?

गुरु जी : चिंता मत करो। कोई भी यह नहीं कह रहा है कि समय पर्याप्त नहीं है। मैंने कभी ऐसा कुछ नहीं कहा की समय पर्याप्त नहीं है। मैं चाहता हूं कि आप साधना में जल्दी करें, और आपको केवल अभ्यास करने पर ध्यान देना चाहिए। जो कहा वह तो ठीक है लेकिन, आपको पता होना चाहिए कि आपको स्वयं के लिए कड़ी आवश्यकताएं रखनी होंगी—मेरे कहने का अर्थ यह है। वैसे भी, जो बिल्कुल ही अपने पैरों को उस स्थिति में मोड़ नहीं सकते हैं, वे बहुत, बहुत दुर्लभ हैं। स्वर्ग में कुछ ऐसे हैं जिनकी चेतना (युआनशेन) मनुष्य के स्वरूप में नहीं होती हैं, लेकिन वह अन्य दिव्यों की होती हैं, जो कमल मुद्रा की स्थिति में अपने पैर नहीं मोड़ते हैं। शायद वह कारक इसमें सम्मिलित है। लेकिन जबकि आपके पास एक मानव शरीर है, अब एक मांस का शरीर है, मेरा मानना है कि आप सभी अपने पैरों को उस स्थिति में मोड़ सकते हैं, केवल बहुत ही कम लोगों को छोड़कर। मैं इसे एक विनोदपूर्ण रूप से कहूँगा। यहां बैठे लोगों में से, कई लोगों ने वास्तव में काफी अच्छी साधना की है। जो आपने पैर नहीं मोड़ पाते हैं उन्हें देखकर दिव्यलोक में जो बोधिसत्व हैं वे अपने मुँह ढँक रहे हैं और हँस रहे हैं यह कहते हुए कि "उन साधकों को देखो जो अभी भी अपने पैर नहीं मोड़ पाते हैं।"

प्रश्न: क्या गुरु जी कृपया मोहभावों की अवधारणा के विषय में बात कर सकते हैं?

गुरु जी : लोग ब्रह्मांड की सच्चाई को देख नहीं सकते हैं इसका क्या कारण है? यह आयाम हमें भ्रमित क्यों कर रहा है? में सभी को बताना चाहूँगा : साधारण लोगों के बीच, आप जो देखते हैं और जो आप साधारण मानव समाज के आयाम के संपर्क में आते हैं, साधारण लोगों के बीच सीखे ज्ञान के साथ, ये सभी आपको सीमित करते हैं और आपको बंधित करते हैं। जब इस आयाम का आपका ज्ञान जमा हो जाता है, जब इस आयाम में आपकी हर चीज की समझ स्पष्ट और स्पष्ट हो जाती है, और जब आपको प्रतीत होता है कि आप अधिक से अधिक जागरूक हो गए हैं, तो आप वास्तव में स्वयं को अधिक से अधिक सिमित कर रहे होते हैं। आप साधारण मनुष्यों के इस आयाम में जिसे सत्य मानते हैं, वह वास्तव में अनुचित या विपरीत हो सकता है। यदि आप साधारण लोगों के समाज की उस समझ को नहीं छोड़ते हैं तो आप ब्रह्मांड के सत्य को नहीं देख पाएंगे। विशेष रूप से उन चीजों को जिन्हें हम मनुष्य के रूप में जीवित रहने के उद्देश्यों के लिए त्याग नहीं कर सकते हैं, स्वयं की रक्षा के लिए, या स्वयं के अधिक लाभ के लिए, मैं उन सभी को मोहभाव कहता हूं। वे मोहभाव एक बड़े, मज़बूत ताले की तरह है जो आपको बंद कर देता है। आपको अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हुए हर ताले को खोलना होगा। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो वे आपको बंद कर देंगे और आपको भ्रमित कर देंगे, और आपको सत्य नहीं दिखाई देगा। और, यदि आप उस मार्ग पर चलते हुए उन तालों को खोलने में विफल रहते हैं, जो आपको आपके मूल और सच्चे अस्तित्व पर लौटाता है, तो आप आगे बढ़ने में सक्षम नहीं होंगे। एक परीक्षा ऐसी होती है। आपको जिससे भी मोहभाव है वह आपकी बाधा है। ये परीक्षण जो आपको साधना के मार्ग में मिलते हैं, वास्तव में आपके स्वयं के कष्ट हैं। मेरा उनका उपयोग करने का कारण आपके मोहभावों के ताले खोलना है, जिससे आपको सच्चाई देखने को मिल सके, और आपकी समझ बढ़ सके।

प्रश्न: हमें सभी मोहभाव को त्यागने को कैसे समझना चाहिए?

गुरु जी : इसका अर्थ यह है कि उन मोहभावों को छोड़ देना होगा, जिन्हें साधारण मानव आयाम में नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि आज आप जिस तरह से साधना करते हैं वह पिछले सभी तरीकों से अलग है। मुझे पता था कि कई, कई लोग इसे सीखने आएंगे, और एक सामाजिक स्थिति उभर कर आएगी। भविष्य में और भी लोग इसे सीखेंगे। तब यह सामाजिक स्थिति जो उभर कर आती है—जो जनता साधना करती है—उसका समाज पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। यदि हर कोई अपनी दिव्य शक्तियों के साथ साधना करे, और सभी अलौकिक चीजों को करने लगे, तो समाज का पूरा रूप बदल जाएगा। और फिर मानव समाज जैसा दिखने के बजाय यह दिव्यों के समाज जैसा हो जायेगा। ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि मानव समाज ऐसे ही है, हम इस वातावरण का लाभ लेते हैं और इसमें साधना करते हैं। न केवल हम इस वातावरण को अस्तव्यस्त नहीं करना चाहते हैं, बल्कि इसके अनुरूप होते हुए हमें साधना करने की आवश्यकता है। क्योंकि आपके पास इस वातावरण के अनुरूप होने के अलावा साधना करने का और कोई विकल्प नहीं है। आज हमने जो मार्ग अपनाया है, वह ऐसा ही है। आज 10 करोड़ से अधिक लोग दाफा का अभ्यास करते हैं। यदि वे सभी अपने घरों को ईसाई या बौद्ध भिक्षु बनने के लिए छोड़ देते हैं तो यह नहीं चलेगा। भविष्य में और भी लोग होंगे। इस समाज का क्या होगा? यदि सभी लोग साधना करने लगेंगे तो आपको कौन खिलाएगा? ऐसा नहीं चलेगा। इसलिए हमें साधारण लोगों के समाज के साथ जितना संभव हो सके उतना अनुरूप होना चाहिए। हम साधारण मनुष्यों के इस प्रकार के सामाजिक रूप का उपयोग साधना करने के लिए कर रहे हैं, इसलिए हमें इसके अनुरूप होना होगा।

आप सभी को साधारण लोगों के समाज में नौकरी, वातावरण, यहां तक कि एक परिवार और बहुत से सगे-संबंधियों की आवश्यकता है। इन बातों का हर पहलू साधारण लोगों के समाज के परम्पराओं के अनुरूप हमारी क्षमता का प्रतिबिंब है। साथ ही, वे हमारे लिए साधना करने के अच्छे अवसर पैदा करते हैं और वे हमें साधना के लिए एक वातावरण प्रदान करते हैं, क्योंकि आप साधारण लोगों के बीच साधना कर रहे हैं। फिर, क्योंकि आप साधारण लोगों के बीच साधना कर रहे हैं, हमें भौतिक वस्तुओं या भौतिक संपत्ति के संबंध में जितना संभव हो सके साधारण लोगों के समाज के तरीके के अनुरूप होना होगा। लेकिन एक बात है : आप अन्य लोगों के समान नहीं हैं। क्योंकि आप साधक हैं, इसलिए आपके मन और मस्तिष्क में उन चीजों के लिए मोहभाव नहीं है। आपके पास बहुत पैसा हो सकता है, परिवार हो सकता है, संपत्ति—आपके पास बहुत सारी चीजें हो सकती हैं। लेकिन आपको उनसे मोहभाव को छोड़ने की आवश्यकता है। यही आपकी साधना का मार्ग है।

यहां हम जिस संपूर्ण परित्याग के बारे में चर्चा कर रहे हैं, उसका अर्थ यह नहीं है कि आपको इसे त्यागने के रूप में गिने जाने के लिए भौतिक चीजों को छोड़ना होगा। इसके विपरीत, यदि आप हर भौतिक चीज़ को छोड़ देते हैं, लेकिन आपके मन और मस्तिष्क में आपने उन्हें छोड़ा नहीं है, यदि आप उनसे अलग होने में अनिच्छुक हैं, यदि आप उन्हें अलग करने में सक्षम नहीं हैं, या यदि आप उनके बारे में अक्सर सोचते हैं और कभी-कभी आपकी साधना भी प्रभावित होती है, तो मैं कहूंगा कि इसे त्यागना नहीं कहा जा सकता लेकिन जबरन छोड़ना हुआ। अतः, भौतिक वस्तुओं को हल्के में लेना फिर एक औपचारिकता होगी। जैसा कि मैं समझता हूं, साधना करने के मार्ग द्वारा ऊँचा उठने का वास्तविक कारण मानव हृदय और मन का परिवर्तन से गुजरना है। जब किसी व्यक्ति का मन और विचारों का स्तर मानक तक पहुँच जाता है, तब ही वह वास्तव में साधना में ऊँचा उठा हुआ होता है।

हम भौतिक चीजों को बहुत हल्के में लेते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके पास वह है या नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि क्या आप मोहभाव को छोड़ सकते हैं और क्या आप ऊँचा उठ सकते हैं—यही सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, हमारे पूरे साधना के रूप को साधारण लोगों के बीच साधना करने के लिए व्यवस्थित किया गया है, और यह आपको अपने गोंग को दूषित नहीं करते हुए लगन से प्रगति करने देता है। सभी व्यवस्थाएं, हर संबंध में, आज हमारी साधना के इस रूप के अनुरूप हैं । इसलिए कई वर्षों पहले जब मैंने पहली बार फा को पढ़ाना शुरू किया था, तो देवता कह रहे थे कि यह "उच्च पुण्य का फा" है। उन्हें लगा कि यह वास्तव में अच्छा है।

प्रश्न: क्या दाफा फैलाने के तरीकों को यूरोपीय लोगों के अनुरूप समायोजित किया जाना चाहिए?

गुरु जी : यह एक साधक के लिए बहुत अच्छी बात है जिसने फा प्राप्त किया जिसकी यह आकांक्षा और सोच है कि इसे कैसे फैलाया जाए और अधिक लोगों को इसे सीखने के लिए उन तक पहुँचाया जाए। भले ही यह यूरोप में हो या पूर्व में हो, चाहे आप इसे कैसे भी फैलाये, यह उन लोगों के लिए कठिन होगा जिनके के लिए यह सीखना पूर्वनिर्धारित नहीं है। कौन से लोग "पूर्वनिर्धारित" हैं? मैंने पूर्वनिर्धारितता पर पहले भी चर्चा की है। फिर हम उन लोगों को कैसे ढूंढे जो पूर्वनिर्धारित हैं? उदाहरण के लिए आप समाचार पत्र में खोजने के लिए एक विज्ञापन डालते हैं, "पूर्वनिर्धारित कौन है?" यह ऐसे काम नहीं करेगा। लेकिन एक बात है जिस पर सभी को स्पष्ट होना चाहिए। शायद हमारे शिष्यों में से हर कोई जानता है कि कुछ लोग ऐसे हैं जो "फालुन गोंग" या *"ज़ुआन फालुन"* शब्दों का उल्लेख करते ही तुरंत प्रभावित या उत्साहित अनुभव करेंगे और वे लोग तुरंत इसे सीखना चाहेंगे। इसकी पूरी संभावना है कि वे पूर्वनिर्धारित हैं। कुछ लोगों के मन को कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप उनसे कैसे बात करते हैं, और यह पूरी संभावना है कि वे पूर्वनिर्धारित नहीं हैं।

इसलिए इसे कैसे फैलाया जाए और इसे फैलाने के तरीके की बात करें तो, वास्तव में, सार्वजनिक स्थानों पर हमारे शिष्यों का अभ्यास करना सबसे अच्छा तरीका है ताकि जो लोग पूर्वनिर्धारित हैं वे उन्हें ढूंढ सकें। एक और तरीका यह है कि हमारी दाफा पुस्तकें विभिन्न जातीय और देशों की पुस्तकों की दुकानों में उपलब्ध की जाए। मेरे अनगिनत सिद्धांत शरीर हैं जो तुरंत पहचान सकते हैं कि कौन पूर्वनिर्धारित है और किसे फा प्राप्त करना है। यदि हमारी पुस्तकें, पुस्तकों की दुकानों में हैं और हमारे शिष्य उद्यान में अभ्यास कर रहे हैं, तो सिद्धांत शरीर पूर्वनिर्धारित लोगों को ढूंढ सकते हैं और उन्हें इस फा को खोजते हुए पहुंचा सकते हैं। यदि इस प्रकार के वातावरण का अभाव है तो कुछ चुनौतियाँ उत्पन्न होंगी। लेकिन चाहे किसी भी तरीके का उपयोग किया जाए, एक पूर्वनिर्धारित व्यक्ति पुस्तक को ढूंढ लेगा और जब वह उसे पढ़ेगा तो उसे अच्छी लगेगी। क्योंकि वह पूर्वनिर्धारित है, वह निश्चित रूप से इसे अच्छा समझेगा और इसे ढूँढ निकालेगा, और, क्योंकि हम में से जो लोग उद्यानों में अभ्यास कर रहे हैं, वह उसे तुरंत मिल जायेंगे। जब से मैंने फा को सिखाना शुरू किया है तब से बहुत से लोगों ने इसे इसी तरह प्राप्त कर लिया है। लेकिन अभी भी कई लोग हैं जिन्होंने हमारे शिष्यों से इसके बारे में सुना है। उन्होंने सोचा कि यह वास्तव में अच्छा है और अपने परिवार के सदस्यों से कहा कि वे इसे सीखें। यदि उन्हें लगता है कि यह अच्छा नहीं है, तो निश्चित रूप से वे अपने परिवार को धोखा देने के लिए ऐसा नहीं कहते। क्योंकि उन्हें लगा कि यह अच्छा है इसीलिए उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को सीखने के लिए कहा। फिर उनके परिवार को लगा कि यह अच्छा है, और उन्होंने अन्य दोस्तों और संबंधियों से कहा कि वे सीखें। लोग बहुत प्रभावित होते हैं जब शिष्य स्वयं अपने व्यक्तिगत अनुभवों

और वे कैसा महसूस करते हैं, इसके बारे में बात करते हैं। वे अपने ही परिवार के सदस्यों से झूठ नहीं बोलेंगे, न ही अपने मित्रों से झूठ बोलेंगे। इसलिए उनके मित्र विश्वास करते हैं। और यदि वे इसपर विश्वास करते हैं, तो वे भी इसे सीखेंगे, और उनके अपने स्वयं के अनुभव होंगे। इसी तरह दाफा फैलता है।

लेकिन ऐसा भी है कि थोड़े लोग हैं, जिन्होंने हमारे शिष्यों द्वारा समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में रखे गए लेखों को पढ़कर फा प्राप्त किया है। मैंने कल कहा था कि मैं उस तरह से फा प्राप्त करने पर आपत्ति नहीं करता। लेकिन इस परिस्थिति में क्या समस्याएं आ सकती हैं? इससे न केवल उच्चतम प्रकार के लोग आएँगे, बल्कि निम्नतम भी आएँगे। इसलिए आने वाले लोगों के भिन्न-भिन्न लक्ष्य और कई भिन्न-भिन्न मन की अवस्थाएँ होंगी और यही कारण है कि कुछ लोग कुछ समय के लिए अभ्यास करते हैं और फिर छोड़ देते हैं। वे शायद निम्न तरह के लोगों में से हो सकते हैं। शायद वे इसे प्राप्त नहीं करना चाहते हैं, या उन्हें यह प्राप्त नहीं होना था। अक्सर ऐसा ही होता है। और शिष्यों को स्वयं लेख लिखना या समाचार पत्रों में जानकारी डालना अच्छी बात है। मुझे इस पर आपत्ति नहीं है, क्योंकि अंततः, यह पूर्वनिर्धारित लोगों को आने में सहायता करता है—उच्चतम लोग समाचार पत्र देखेंगे और आएंगे। इसलिए यह प्रभावी हो सकता है। लेकिन केवल दो मुख्य तरीके हैं : एक यह है कि पुस्तकों की दुकानों में हम पुस्तकें रखें और हमारे अभ्यास स्थल हैं, जहाँ पर सिद्धांत शरीर लोगों को खोजने के लिए ले जा सकते हैं; इसके अलावा फा सम्मेलन हैं और हमारे शिष्यों का परिवार के साथ अपने अनुभव साझा करना है। मुख्य रूप से इन दो तरीकों से अधिक लोग आते हैं, और उनकी गुणवत्ता उच्च होती है। अन्य तरीकों को अपनाने की बात की जाए तो, चाहे वे पूर्वी हों या पश्चिमी, मुझे लगता है कि अभी भी यही दो मुख्य तरीके हैं। प्रारंभिक अवस्था में कई क्षेत्रों के लोगों को अभी तक फालुन गोंग की समझ नहीं है, इसलिए हम इसे समाचार पत्रों या पत्रिकाओं और इस तरह के लेख लिखकर लोगों से परिचित कराते हैं। निश्चित रूप से यह भी फा को फैलाता है, यह सुनिश्चित है।

प्रश्न: मैं कोकेशियन हूं। जब आपके सामने एक परीक्षा आती है, तो आप इसका सामना करते हैं या इसे छोड़ देते हैं?

गुरु जी : "जब आप ..." आप मुझे संबोधित कर रहे हैं, है न? मैं आप सबको कुछ बताना चाहता हूँ यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है। मुझे लगता है कि सब के साथ इसे स्पष्ट करने का समय आ गया है।

मैं आपको बता सकता हूं कि आज, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितने लोग दाफा का अभ्यास कर रहे हैं या मेरे कितने छात्र या शिष्य हैं, आप सभी साधक हैं। इसका कोई भी अपवाद नहीं है। तो आप सभी साधना कर रहे हैं। आप अच्छी तरह से साधना कर रहे हैं या बुरी, परिश्रम के साथ या नहीं, या आपका स्तर उच्च है या नहीं, आप सभी को कठोर आवश्यकताओं का पालन करना होगा क्योंकि आप साधना करते हैं और अपने आप को साधक के रूप में मानते हैं। मैं, हालाँकि, यहाँ साधना करने के लिए नहीं आया हूँ। आपको इस विशिष्टता पर स्पष्ट होने की आवश्यकता है। मेरी अपनी स्वयं की कोई परीक्षाएं नहीं हैं, न ही मेरे पास आपके जैसे साधना के कोई कारक हैं। एक बात है जिसे मैं स्पष्ट करना चाहता हूं: मैं आपको अपने शिष्यों के रूप में स्वीकार रहा हूं, तो मैं आपको मोक्ष प्रदान कर रहा हूं, मैं आपको बचा रहा हूं और परिष्कृत कर रहा हूं। तो इससे आप समझ सकते हैं कि मैं आपसे अलग हूँ। आपको उन सभी कठिनाइयों को जिसका आप सामना करते हैं उन्हें साधना के रूप में समझने की

आवश्यकता है, क्योंकि वे निश्चित रूप से साधना ही हैं। लेकिन यदि मेरे लिए कोई कठिनाई आती है, तो वह फा को विघ्न और हानि पहुंचाना होगा। इसे इस तरह क्यों देखा जाना चाहिए? यह ब्रह्माण्ड अतिप्राचीन है। मेरे ऐसा करने का उद्देश्य फा-सुधार है। ब्रह्माण्ड के सभी जीव फा से भटक गए हैं, इसलिए उन्हें फा के साथ ठीक करना होगा। जो मैं आपसे अक्सर कहता हूं वह यह है कि यह हजारों वर्षों में भी ऐसा नहीं होता। मानव जगत में पूरे ब्रह्मांड को दाफा की शिक्षा देना, एक ऐसा फा जिसे दिव्य भी पहले से नहीं जानते थे, वह कुछ ऐसा है जो सृष्टि में पहले कभी नहीं हुआ है।

अंतहीन ऐतिहासिक युगों के दौरान जीव तेजी से अशुद्ध होते गए हैं, और सब कुछ विचलित हो रहा है। यदि यह लंबे समय तक ऐसे ही चलता रहा, तो *जन, शान, रेन* का सबसे मौलिक आधार भी विचलित हो जाएगा। यह अविश्वसनीय रूप से भयावह है। लेकिन मैं ब्रह्मांड के जीवों को संजोता हूं। मैं मूल जीवन को यथासंभव संरक्षित करना और उन्मूलन की प्रक्रिया को रोकना चाहता हूं। वह इच्छा प्रकट हुई, और इसलिए मैं आया। (तालियाँ) जबकि मैं यहाँ आया हूँ, मैं इस तरह से आया हूँ कि मैं अपने साथ वह सब कुछ लेकर आया हूँ जो सबसे मूल, सबसे अद्भुत और काल के आरम्भ से है—जो अधिक उत्तम है। आप जानते हैं कि फालुन घूर्णन करता है। आप जिस फालुन को देखते हैं, वह फालुन का एक सतही रूप है। इसका एक फा पक्ष भी है जिसे आप नहीं देख सकते। यह लगातार घूर्णन कर रहा है और इसमें एक स्वचलित सुधारक यंत्र है, जो सब कुछ अपनी सबसे मूल और इष्टतम स्थिति में लौटाता है। सूक्ष्म स्तर से सतह तक, सभी पदार्थ और सभी जीव इसी तरह होते हैं, सब कुछ घूमता हुआ और गतिशील। मैंने यह सब सृजित और पुनःस्थापित किया है। इससे भी अधिक, यह लगातार उत्तम और सामंजस्यपूर्ण होते जा रहा है। मेरे साधना करने का कोई प्रश्न ही नहीं है। इस दायित्व को निभाने में, जो मुझे ठीक करने की आवश्यकता है, वह बुरी शक्तियों के कारण ब्रह्मांड के जीवों के अपवित्र हो जाने का बाधक प्रभाव हटाना है। साथ ही, मानव समाज में सभी जीवों ने जो कर्म उत्पन्न किये हैं उसके कारण मेरे सामने चुनौती प्रस्तुत हुई है। मैं अक्सर कहता हूं कि मुझे पता है कि यीशु को लोगों द्वारा क्यों सलीब पर चढ़ाया गया था, शाक्यमुनि को निर्वाण से क्यों गुजरना पड़ा था और क्यों लाओ ज़ का पांच हजार शब्दों की पुस्तक पीछे छोड़ कर जल्द ही निधन हो गया। ऐसा समझिये कि एक व्यक्ति जगत में आया और उसने बार बार पुनर्जन्म लिया। आपको पता नहीं है कि आप कितने जीवन और कितने जीवनकाल से गुजर चुके हैं। लेकिन प्रत्येक जीवनकाल में आपने दूसरों के कई ऋण अर्जित किए हैं और बहुत अनुचित किया है। कुछ लोग विभिन्न स्तरों से आए और इस धरती पर पुनर्जन्म लिया। जैसे जैसे वे अनुचित काम करते गए वे नीचे गिरते चले गए, कहने का अर्थ यह है कि उन्होंने कुछ उच्च-स्तरीय आयामों में समय बिताया है। वे उन आयामों में क्यों नहीं रह पाए? ऐसा इसलिए है क्योंकि वहाँ पर उन्होंने फिर से अनुचित काम किये और वे और नीचे गिरते गए; उन्होंने फिर से अनुचित काम किये और और भी नीचे गिरते गए। इसलिए दिव्यलोक में अनुचित कर्म उपार्जित करने से वे दिव्यों के ऋणी हो गए।

दिव्यलोक के दिव्य मनुष्य को दिव्यलोक में लौटने नहीं देंगे! आप को शिक्षा देने वाले गुरु के बिना, बिना गुरु की देखरेख के, चाहे आपकी अपनी क्षमताएँ कितना भी अधिक क्यों न हों, आप कभी नहीं लौट सकते। पृथ्वी पर आने के बाद यदि उस तरह के गुरु जो वास्तव में लोगों को बचा सकते हैं के द्वारा आपकी देखरेख नहीं की जाती है, तो वापस लौटना असंभव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि आप वास्तव में मानव जगत के कर्म का भुगतान कर भी लेते हैं, फिर भी आप दिव्यलोक में आपके भुगतान

के ऋण नहीं चुका सकते। यीशु लोगों को बचाना चाहते थे और बहुत दयालू थे, इसलिए उन्होनें इस सब को अनदेखा कर दिया। इसके बाद उन्हें उन कठिनाई से खुलने वाली कर्मों की गांठों को खोलना पड़ा, जो लोगों पर बंधी हुई थीं। फिर भी इस ब्रह्मांड का एक सिद्धांत है जो कहता है: "जो कुछ खोते नहीं हैं, वे लाभ प्राप्त नहीं सकते; पाने के लिए, आपको खोना होगा; जो ऋण है उसे चुकाना होगा।" यह पूर्ण, यह एक पूर्ण और शाश्वत नियम है। तदनुसार, यदि आप किसी व्यक्ति को इससे मुक्त करते हैं, तो उसके ऋण का भुगतान कौन करेगा? इसलिए वे खाते या वे सभी ऋण स्वाभाविक रूप से यीशु पर आ गिरे। "आपने उनकी गांठें खोली इसलिए आप ही को उनकी ओर से भुगतान करना होगा।" वे सभी गांठें जो नहीं खोली जा सकती थी, जो सब कुछ बकाया था, और जिन लोगों को बचाया जा रहा था जिनके पास उन चीजों से खुद को मुक्त करने का कोई तरीका नहीं था, यह सब यीशु के साथ बाँध दिया गया क्योंकि वे पृथ्वी पर थे। सभी विभिन्न स्तरों के कर्म के ऋण बाकी थे; अर्थात, वे केवल यहीं मनुष्यों में से ही नहीं थे। यह आखिर किस सीमा तक पहुंचा? उन्होनें जितने लोगों को बचाया, उतनी ही अधिक गांठें उन्हें उठानी पड़ी। उनके पास न तो स्वयं को मुक्त करने का कोई तरीका था, न ही उन चीजों को करने की शक्ति थी। गांठें नहीं खोली जा सकीं। इसलिए अंत में, यीशु ने उन लोगों को तो बचा लिया, लेकिन उनके अपने मानव शरीर को मुक्त नहीं किया जा सका। इस प्रकार यीशु के पास उनके कर्म ऋण का भुगतान करने के लिए इस शरीर को त्यागने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। बहुत सारे जीवों के कर्मों के साथ-साथ बहुत सारा द्वेष सभी यीशु पर आ गए। "ठीक है, मैं उन सभी अनुयायिओं के लिए भुगतान करूंगा।" उन्हें सलीब पर चढ़ाया गया और उनकी एक दर्दनाक मौत हुई। सभी गांठें उनके मांस के शरीर से बंधी हुई थीं, और उनके मांस शरीर की मृत्यु के साथ उन्हें खोल दिया गया। यीशु को उसी क्षण मुक्त कर दिया गया जब शरीर छूट गया। यही कारण है कि यीशु को सलीब पर चढ़ाया जाना था, और लोग क्यों कहते हैं कि यीशु लोगों के लिए पीड़ित हुए थे। यही कारण है।

आप सभी ने देखा है कि बहुत से लोग इस फा को सीखने के लिए आए हैं। भविष्य में और भी आयेंगे। आप जानते हैं, आपके साधना करने के लिए, उन चीजों को गुरु जी द्वारा किया जाना आवश्यक है। लेकिन मैं उनसे अलग हूं, क्योंकि चाहे वह यीशु हो या शाक्यमुनि, आखिरकार वे, एक निचले स्तर पर ज्ञानप्राप्त व्यक्ति हैं। मैं ब्रह्मांड की सीमा के भीतर नहीं हूं, इसलिए मैं विभिन्न स्तरों पर और ब्रह्मांड के विभिन्न ब्रह्मांडीय पिण्डों की जीवों की समस्याओं को हल कर सकता हूं। मैंने कहा है कि मानवजाती को बचाना मेरा वास्तविक लक्ष्य नहीं है, लेकिन वे एक स्तर के जीव हैं जो सम्मिलित हैं—वे जीवन का एक स्तर है जिन्हें मैं बचाना चाहता हूं। वास्तव में, मेरी कोई भी परीक्षाएं नहीं होती हैं, मैं साधना नहीं कर रहा हूँ। मेरे सामने आने वाली कठिनाइयाँ साधारण मनुष्यों के सामने शायद ही प्रकट होती हैं, लेकिन कुछ ऐसी हैं जो यहाँ प्रकट होती हैं, और उनमें से अधिकतर की आपको जानकारी नहीं है। मेरे इस समस्या से मुक्त होने का कारण यह है कि मैं इसके भीतर नहीं हूं। मैं उनके जैसा नहीं हूँ जो स्वयं को छुड़ा नहीं सकता। मैं स्वयं को छुड़ा सकता हूं, लेकिन यह कठिनाई बहुत ही विशाल है, कुछ ऐसी कि आप में से कोई भी व्यक्ति इसकी कल्पना नहीं कर सकता है। मैं अपना सब कुछ किसी भी सीमा तक त्याग सकता हूं और यही कारण है कि मैं यह सब सुलझा सकता हूं। (तालियां)

वैसे, मुझे उस प्रश्न से संबंधित कुछ बातों पर बल देना है जो अभी-अभी उठायी गयी थीं। अक्सर कुछ छात्र होते हैं जो मेरे साथ-साथ होते हैं, मेरे पास, और प्रत्येक क्षेत्र में कुछ प्रभारी होते हैं—केंद्र

सहायक या अन्य प्रभारी। आपको यह समझने की आवश्यकता है: आप जिस किसी का भी सामना करते हैं वह कठिनाइयों से निपटने के बारे में है। फिर भी आप गुरु जी का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। जब किसी ऐसे विषय की बात आती है जिसमें आप जानते हैं कि मैंने भाग लिया है, तो आपको मेरे दृष्टिकोण से उस विषय पर विचार करना होगा। इस बात की पहले आपने उपेक्षा की है। मेरे लिए खड़ी की गई समस्याएँ वास्तव में इस फा पर की गयी क्षति हैं। तो यह आपके कष्टों से गुजरने से पूरी तरह भिन्न है। ऐसा निश्चित रूप से नहीं है कि आपके गुरु साधना कर रहे हैं या आपके गुरु परीक्षण से गुजर रहे हैं। यह वास्तव में फा और ब्रह्मांड पर निर्देशित क्षति है, इसलिए उन्हें एक समान नहीं माना जा सकता है। इस विषय पर स्पष्ट रहें। जब मैं समस्याओं से निपटता हूं, तो मैं उन्हें वास्तविक असुरों के रूप में मानता हूं, लेकिन आप ऐसा नहीं कर सकते! आपका सामना करने वाली हर चीज का सीधा संबंध आपकी साधना से है। इसलिए आपको हमेशा इसे साधना के रूप में मानने और अपने अंदर के कारणों को खोजने की आवश्यकता है। ये पूरी तरह से भिन्न हैं।

प्रश्न: यूरोपियों के लिए ध्यान में जाना बहुत कठिन है। क्यों?

गुरु जी : वास्तव में, यह एशियाई और यूरोपीय लोगों के लिए समान है। एक व्यक्ति जो साधारण लोगों के समाज में साधना करते हुए गहन ध्यानावस्था में पहुँच सकता है, वह वास्तव में उच्च स्तर पर होता है। क्योंकि आप साधारण लोगों के समाज में काम करते हैं और आपको हर तरह के साधारण मानवीय कार्यों में भाग लेना होता है, इसलिए जैसे ही आप वहाँ बैठते हैं, आप किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोचना चाहते हैं, लेकिन उन बातों का आपके मन पर असर पड़ता है और आप न चाहते हुए भी उनके बारे में सोचने लगते हैं। इसलिए आप शांत नहीं हो सकते। साधना में हम लगातार अपने आप को सुधार रहे होते हैं और मोहभाव से छुटकारा पा रहे होते हैं। जैसे-जैसे आपके मोहभाव कम होते जाते हैं, आप पाएंगे कि आप स्वाभाविक रूप से अधिक से अधिक शांत, अधिक से अधिक शांत होते जाते हैं। यह आपके स्तर को दर्शाता है। यह आशा करना उचित नहीं होगा कि आप शुरू से ही ध्यानावस्था में पहुँचेंगे। कोई भी विधि उसे प्राप्त नहीं कर सकती है, केवल उन मामलों को छोड़कर जहां आपकी विशेष परिस्थितियां हैं; ऐसे व्यक्तियों का मानव पक्ष वास्तव में निर्बल होता है और दूसरा पक्ष वास्तव में शक्तिशाली होता है। वे कुछ अंश तक ज्ञानप्राप्ति की स्थिति में हैं, और कुछ अंश तक नहीं। वे बहुत ही विशेष लोग हैं जो कुछ हद तक ध्यानावस्था प्राप्त कर सकते हैं, और यह मुख्य रूप से उनके दिव्य पक्ष के प्रभाव के कारण हैं, न कि उनके मानवीय पक्ष के। इस तरह के उदाहरणों के अतिरिक्त, अन्य लोग संभवतः पहले ही दिन ध्यानावस्था की स्थिति तक नहीं पहुंच सकते हैं। इसलिए विभिन्न जातियों के लिए कोई अंतर नहीं है, यह यूरोपीय और एशियाई लोगों के लिए समान है।

यदि आप शांत नहीं हो सकते तो चिंता न करें। जहाँ तक आप व्यायाम करते हैं और आपका शरीर आरामदेह और तनावमुक्त रहता है, बस पूरा प्रयत्न करें कि आप स्वयं यहाँ वहां की बातें न सोचें। यदि आप वास्तव में अपने मन को भटकने से रोक नहीं सकते हैं, तो रहने दें, और यह मानें कि वे निरंकुश विचार किसी और के हैं : "सोचते रहो। मैं तुम्हें सोचते हुए देखता रहूँगा।" यह भी एक तरीका है। कम से कम आप स्पष्ट रूप से भेद कर सकते हैं कि यह *आप* नहीं है, और यही वास्तव में अमूल्य है। या, आप इसे रोक लें और सोचने ही न दें, जिससे आप वह प्राप्त करेंगे जो एक साधक कर सकता है। शरीर शिथिल होने के बाद, वह परिवर्तन और परिशोधन के लिए सर्वोत्तम स्थिति में प्रवेश करता है। लेकिन क्या होगा यदि आपका मन शांत नहीं हो सकता है और आप परिवर्तन और परिशोधन के लिए सर्वोत्तम

स्थिति प्राप्त नहीं कर सकते हैं? आप जानते हैं, हमारी साधना सूक्ष्म स्तर से शुरू होती है, इसलिए हमारा सूक्ष्म पक्ष शांत होता है। वहाँ से शुरू करते हुए, जैसे-जैसे यह पक्ष तेजी से शांत होता जाता है और उसकी साधना बेहतर से बेहतर होती जाती है, तो जो सतह पर है वह भी संयमित होगा और निर्बल होता जायेगा। सतह [पहले से] बदतर है, लेकिन यह निर्बल है। ऐसा ही इनके बीच का संबंध है। आप में से बहुत से लोगों ने लंबे समय तक साधना की है और पाया कि आपके मन में अभी भी बुरे विचार हैं। आप चाहें तो इन्हें दबा सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि भले ही वे बद से बदतर होते जा रहे हैं, और वे और अधिक बहार आते जा रहे हैं, वे निर्बल हो रहे हैं क्योंकि अब उनकी जड़ें नहीं बची हैं।

प्रश्न: हम पश्चिमी अभ्यासी कैसे समझ सकते हैं कि क्या सही है, और हमें अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए? क्या हमें स्वाभाविक रूप से चीजों को होने देना चाहिए?

गुरु जी : मैं आपको बताता हूं कि मुझे क्या लगता है। विभिन्न परिस्थितियों में मैंने स्वाभाविक रूप से चीजों को होने देने के बारे में बात की है। मैंने आपको यह नहीं बताया कि हर चीज के संबंध में स्वाभाविक रूप से चीजें होने दें। जब आप किसी कार्यालय में काम करते हैं, तो आपका मालिक आपको वेतन देता है। यदि आप अपने काम नासमझी से करते हैं, और आप चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देते हैं, और आप कड़ा परिश्रम नहीं करते हैं, तो आप वास्तव में वेतन के लायक नहीं हैं। हम जहां भी हों, हमें एक अच्छा व्यक्ति होना चाहिए। मैं कहना चाहता हूं कि "चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देना" को स्थिति के अनुसार लागू किया जाना चाहिए। साधना में हम प्राकृतिक घटनाओं के अनुसार चलते हैं, लेकिन हमें अभी भी स्वयं के बुरे पक्ष को दबाने का प्रयास करना चाहिए और हमें अभी भी साधना में कड़ा परिश्रम करने की आवश्यकता है—ऐसा नहीं करना "चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देना" नहीं कहा जा सकता है। वास्तव में आप सभी ऐसे ही साधना करते आ रहे हैं। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि साधना में हमको सक्रिय रूप से स्वयं की साधना करनी होती है, और यह कि हमारे प्रतिदिन के जीवन में हमें साधारण लोगों के समाज के तरीकों से जितना संभव हो सके अनुरूप बनने की आवश्यकता है। इसलिए आपको अपनी साधारण मानवीय नौकरी को अपनी साधना से अलग करना होगा—आपको निश्चित रूप से उनके बीच अंतर करना चाहिए। काम काम है, और साधना साधना है। लेकिन एक बात है : क्योंकि आप एक साधक हैं, आपके उच्च आदर्श आपके काम में, समाज में, घर में और विभिन्न सामाजिक वातावरण में परिलक्षित होंगे। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आप हमेशा एक अच्छे व्यक्ति रहेंगे चाहे आप कहीं भी हों, और सभी कहेंगे कि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं। ये दोनों ऐसे ही एक दूसरे के पूरक हैं। चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देने का विचार उस तरह से नहीं है जैसा कि लोगों ने अतीत में कहा था, जहां एक व्यक्ति अब किसी भी चीज की परवाह नहीं करता और वह वहीं बैठा रहेगा जैसे कि उसने इस जगत को छोड़ दिया है; ऐसा करने वाला व्यक्ति को "चीजों को स्वाभाविक रूप से होने देना" माना जाता था। यह ऐसे नहीं है—यह निश्चित रूप से ऐसी सोच नहीं है।

यदि आप कुछ कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो मुझे लगता है कि साधना करने वालों के रूप में आपको पहले स्वयं की जांच करनी होगी : "क्या यह इसलिए है क्योंकि मैं स्वयं कुछ विषयों में अच्छा नहीं कर पाया हूं?" यदि आप में से प्रत्येक साधक ऐसा नहीं कर सकता है, तो आपके पास प्रगति करने का कोई मार्ग नहीं होगा। इसलिए जब आप में से कोई भी किसी भी कठिनाई का सामना करता है, तो आपको हमेशा अपने आप को पहले जांचना होगा: "क्या ऐसा है कि मैंने ऐसा कुछ किया जो बहुत उचित नहीं था?" मैं अक्सर एक सिद्धांत के बारे में बात करता हूं: विश्व में सब कुछ सामंजस्य में है;

यदि आप स्वयं कुछ अनुचित करते हैं, तो यह एक टकराव पैदा करेगा, दूसरों के साथ एक मतभेद, और आपके आस-पास सब कुछ असामंजस्यपूर्ण हो जाएगा। और पारस्परिक संबंध तनावपूर्ण हो जाएंगे। उस समय, कारणों के लिए अपने अंदर झांकें और अपनी गलती को सुधारें। आप पाएंगे कि सब कुछ फिर से सामंजस्यपूर्ण और ठीक हो जाता है। मुझे नहीं लगता कि हमें दूसरों के साथ चीजों के बारे में बहस करनी चाहिए। यदि आप पर वास्तव में कठिनाई आती है और ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति आपके साथ अनुचित कर रहा है, तो मुझे लगता है कि यह बिलकुल ऐसे हो सकता है कि आप, एक साधक, पिछले जन्म से उनके ऋणी थे। इसे सहन (रेन) करें और जाने दें। एक साधारण व्यक्ति भी जानता है कि झड़प के बाद दो लोग परेशान हो जाते हैं; उनके बीच संघर्ष पैदा होता है और दोनों उलझ जाते हैं। जब मनमुटाव लंबे समय तक बना रहता है, तो इसे हल करना मुश्किल हो जाता है, और अंत में वे शत्रु बन जाते हैं। लेकिन हम इसे सहन करने में सक्षम होते हैं, इसकी उपेक्षा करते हैं, और एक कदम पीछे हट जाते हैं। चीन में एक कहावत है, "एक कदम पीछे हट जाओ और आप समुद्र को विशाल और आकाश को असीम पाएंगे।" यदि आप उकसाते रहते हैं और बात को बढ़ाते हैं, तो आप पाएंगे कि इससे निकलने का वास्तव में कोई मार्ग नहीं है। लेकिन एक कदम पीछे हट जाएं, मोहभाव को छोड़ दें और उसे अनदेखा कर दें, और आप पाएंगे कि वास्तव में समुद्र विशाल है और आकाश असीम है—यह एक पूरी नई दुनिया है। ऐसा ही है। यह एक साधक के लिए ऐसा ही होना चाहिए। यदि हम साधारण लोगों की तरह ही बहस करते हैं और झगड़ते हैं और उनकी तरह संघर्षों में शामिल हो जाते हैं, तो मैं कहूँगा कि हम साधारण लोगों की तरह ही हैं। क्या यह सही नहीं है? यह वास्तव में है।

प्रश्न: हम अपने स्तर को कैसे जान सकते हैं?

गुरु जी : विशेष रूप से कहा जाए तो, मैं शुरुआत में ही आपको अपने स्तर के विषय में बताने के लिए बहुत ही अनिच्छुक हूं। किसी व्यक्ति के लिए इस तरह के विशाल फा में आत्मसात हो जाना ... मैं एक उदाहरण दूंगा। ऐसा है जैसे कि यदि लकड़ी का टुकड़ा या चूरा पिघले हुए इस्पात की भट्टी में गिरता है: तो तुरंत ही वह ओझल हो जाएगा। क्योंकि आप इस तरह के अपार फा में आत्मसात हुए, आपके शरीर के कर्म, विचार कर्म, और सभी प्रकार की चीजें एक ही पल में समाप्त हो जाएंगी। यदि हम इसे पूरी तरह से ऐसे करते हैं, तो यह आपके साधना न करने के समान ही होगा और यह मेरा एक नए जीवन को फिर से सृजित करने के बराबर होगा। यह आपकी साधना नहीं गिनी जायेगी। तो हम ऐसा नहीं कर सकते हैं। हमें आपको स्वयं को बदलना और स्वयं से साधना करवाना है। यह फा अपार है। अपनी साधना के दौरान, जब तक आप अपने आप को एक साधक मानते हैं, लगातार और दृढ़ता से साधना करते हैं, और पुस्तक पढ़ते रहते हैं, आप लगातार ऊपर उठते और सुधरते रहेंगे। उसके साथ हमारी पूरक पद्धति—अभ्यास करने— को जोड़ने पर आपका सुधार बहुत तेजी से होगा। यह साधना करने का सबसे तेज़ तरीका है।

यदि शुरुआत ही में मैंने आपको अपने स्तर को जानने दिया, तो आप स्वयं को संभाल नहीं पाएंगे : “वाह! मैं असाधारण हूँ! मैं अभी से ही साधना में इतनी दूर आ गया हूँ! मान लीजिए कि मैंने आपको आपके शरीर के आस-पास होने वाले वास्तविक परिवर्तनों को देखने दिया, इसके बारे में सोचें : क्योंकि आप भावनाओं, इच्छाओं और साधारण लोगों के सभी प्रकार के मोहभाव रखते हैं, तो क्या आपका मन डोल नहीं जाएगा? मैं आपको इतनी जल्दी नहीं बता सकता, क्योंकि आपके साधारण मानवीय विचार अभी भी बहुत सबल हैं। यह इसलिए है क्योंकि मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि आप लगातार

अपनी साधना में सबसे तेज़ गति से आगे बढ़ें। जब एक श्रेष्ठ व्यक्ति ताओ को सुनता है, तो वह केवल ज्ञान के माध्यम से फलपदवी को प्राप्त कर लेगा। यह सबसे सराहनीय है और यह सबसे तेज़ है—यह वास्तव में सबसे तेज़ है।

हमारे कुछ शिष्य हैं जिनकी स्थितियां भिन्न हैं, इसलिए कुछ लोग अपनी क्षमताओं के साथ साधना करते हैं और कुछ आधी-अधूरी अवस्था में हैं। वे देख सकते हैं, और कुछ बहुत स्पष्ट रूप से भी देख सकते हैं और सब कुछ जान सकते हैं। वे असाधारण स्थितियां हैं। अधिकांश लोगों की क्षमताओं पर अंकुश लगा हुआ होता है और वे साधना करते हैं। बस पुस्तक को पढ़ने और साधना करने पर ध्यान केंद्रित करें, और आप स्वयं को लगातार सुधारते रहेंगे और दिव्य रहस्यों के बारे में लगातार ज्ञान प्राप्त करते रहेंगे। फा के नियम और सिद्धांत स्वयं ही आपको आत्मविश्वास से भरने के लिए पर्याप्त हैं। बेशक, आज के समाज में लोग साधारण लोगों के समाज के सभी प्रकार के झूठे, तथाकथित "वास्तविकताओं" से बहुत गहराई से भ्रमित हैं, और वे बहुत मजबूती से उनसे जुड़े हुए हैं। उनसे छूटना बहुत कठिन है। वे अक्सर फा और उनके आत्म-हित के मोहभावों के बीच चयन करने में संघर्ष करते हैं। एक व्यक्ति अपने मोहभाव छोड़ने के स्थान पर फा को छोड़ना चुनता है। इन चीजों को निर्धारित करना कठिन है, क्योंकि आज का समाज इस स्तर पर आ गया है जहां लोग अब अपने वास्तविक स्वरूप या मनुष्यजाती के आदर्शों को नहीं जानते हैं।

हालांकि यह ठीक नहीं है, लेकिन यह हमें साधना के लिए सबसे अच्छा वातावरण प्रदान करता है। क्या ऐसा नहीं है कि परिस्थिति जितनी जटिल होगी, उतनी ही यह उच्च कोटी के पूर्ण साधक बना सकती है? यही सिद्धांत है। कुछ साल पहले चीन में *चीगोंग* के कई गुरु दिखाई दिए। साधारण लोगों ने उनकी प्रशंसा की: "वाह, अद्भुत *चीगोंग* महागुरु, आपके पास ये सभी अद्भुत क्षमताएं हैं!" लोगों ने उन्हें उपहार दिए और पैसे भी दिए क्योंकि वे लोगों को रोगमुक्त करते थे। भौतिकता में उनका मोह और बढ़ गया, और कई इस तरह से अपने स्तर से गिर गए और अपना *गोंग* गंवा बैठे। वे पूरी तरह से बर्बाद हो गए, और उनके गुरु अब उनकी देखरेख नहीं करते। क्यों? साधना पहले उन परिस्तिथियों में की जाती थी जिनके विषय में साधारण लोग नहीं जानते थे। पहाड़ों में साधना करना, अस्पष्ट परिस्तिथियों में, मठों में या अन्य धार्मिक रूपों के माध्यम से, वे साधारण लोगों के समाज की वास्तविकताओं और जटिल दांवपेंच के संपर्क में नहीं आते थे, और न ही उन्होंने इस विशाल कलुषित वातावरण में प्रवेश किया। यदि वे समाज के संपर्क में आते, तो वे तुरंत जटिल समाज से दूषित हो जाते, वे साधारण लोगों की तरह प्रसिद्धि और लाभ के पीछे पड़ जाते, और वे साधारण लोगों में परिवर्तित हो जाते, क्योंकि उनकी साधना का प्रभाव साधारण लोगों के बीच रहने से समाप्त हो जायेगा। इसके विपरीत, हम वास्तव में इस विशाल कलुषित वातावरण के भीतर साधना करते हैं, और जिससे हम गुजरते हैं वह भी उसी तरह का होता है। यदि आप इससे ऊपर उठ सकते हैं, तो क्या आप असाधारण नहीं हैं? क्या आप जानते हैं कि आप उच्च स्तर पर साधना क्यों कर सकते हैं? सबसे आवश्यक कारकों में से एक जो उच्च स्तर पर आपकी साधना को सुनिश्चित करता है, वह यह है कि यहाँ बहुत गन्दगी है। यदि आप इससे ऊपर उठ सकते हैं—यदि आपका मन थोड़ा सा भी प्रभावित होता है और अब साधना करना चाहता है—आप असाधारण हैं, क्योंकि इस तरह के वातावरण के बीच में, दुख में लथपथ, आपकी अभी भी ऐसी इच्छा है।

सतह पर दिखाई देने वाली पीड़ा अधिक मायने नहीं रखती है। जो वास्तव में कष्टदायी है, वह वह पीड़ा है जो तब होती है जब आप मोहभाव को त्यागते और छोड़ते हैं—तब सबसे अधिक पीड़ा होती है। तो यह जटिल वातावरण सर्वोत्तम स्थिति प्रदान करता है और आपको उच्च स्तर पर साधना करने का अवसर प्रदान करता है। इसके विपरीत, इस दाफा की शक्ति को केवल इन सबसे प्रतिकूल परिस्थितियों में ही प्रकट किया जा सकता है। यदि समाज में सबकुछ अच्छा होता तो इस दाफा की आवश्यक नहीं होती। और एक अच्छे वातावरण में फा-सुधार की आवश्यकता नहीं होती। केवल यीशु और शाक्यमुनि के तथागत स्तर का फा इस जगत के लिए पर्याप्त होता। लेकिन धर्मों ने अब युग के अंत में प्रवेश क्यों किया है, जहाँ इनमें से कोई भी अब लोगों को नहीं बचा सकता है? लोग बुद्ध को शाप देने का साहस भी करते हैं, और जीसस की प्रतिमाओं पर पैर भी रखा जाता है और मूत्र किया जाता है। इस युग में, लोगों को [ऐसे तथागत] का फा सीखने के लिए आग्रह करना या फा द्वारा उनको बचाना संभव नहीं होगा।

प्रश्न: मैं वास्तव में साधना करना चाहता हूं, लेकिन मैं दाफा पर संदेह करना कैसे छोड़ सकता हूं?

गुरु जी : मैंने आपको जो बताया है, वह यह है कि साधारण लोगों के समाज में सब कोई जन्म के बाद अपने मन में कई-कई धारणाएँ ग्रहण करेगा और साधारण लोगों के समाज की झूठी वास्तविकताओं से "ज्ञान" को अवशोषित करेगा, जो उसे यहां और भी बदतर बना देता है। आपके मन में कई धारणाएं और गठित विचार सभी कारक हैं जो आपको फा प्राप्त करने से अवरुद्ध करते हैं। साधारण लोगों की वास्तविकताओं से जो कुछ भी आपने सीखा है, उसके साथ फा का आकलन करना क्या आपके मन में आने वाली शंकाओं का कारण नहीं हैं? क्या शंकाएं इसी तरह ही नहीं उभरती हैं? निश्चित रूप से। दूसरे शब्दों में, आप साधारण मानव ज्ञान और साधारण मानव विचारों से गठित धारणाओं का उपयोग करके फा का आकलन कर रहे हैं। क्या साधारण मानवजाती सबसे निचले स्तर पर नहीं है? क्या साधारण लोग भ्रम में खोए नहीं हैं? उनके पास ऐसा क्या हो सकता है जो ब्रह्मांड की सच्चाई से तुलना कर सकें? कुछ भी तो नहीं। फिर, हमारा यह दाफा सबसे कम, साधारण मानवीय तरीके से मानव भाषा का उपयोग करते हुए सिखाया जाता है—अभिव्यक्ति का निम्नतम रूप। इसलिए [दाफा] भी ऐसा लगता है कि यह बहुत ही सतही है। लेकिन जैसे-जैसे आप इसका अध्ययन करते रहेंगे, आप पाएंगे कि यह और भी प्रगाढ़ होते जाता है। जितना अधिक आप इसका अध्ययन करते हैं, उतना ही यह अथाह होता जाता है और पहुंच से बहुत दूर होते जाता है। दूसरी ओर साधारण मानव ज्ञान में, उस प्रकार के गहन तत्त्व नहीं होते है। यदि आप सभी अविश्वासों और शंकाओं को अपने स्वयं के विचार समझते हैं, तो आप एक बड़ी भूल कर रहे हैं। वे जन्म के बाद उत्पन्न हुई साधारण लोगों के बीच की धारणाएँ हैं। आप सोच रहे हैं कि वह आप, स्वयं हैं, लेकिन वह आप नहीं हैं।

प्रश्न: अभ्यास शुरू करने से पहले मेरा तीसरा नेत्र खुल गया था। मैं अपना जीवन भविष्यवाणी करके निर्वाह करता हूं। क्या मुझे अपना काम छोड़ना होगा?

गुरु जी : यदि आप साधना नहीं कर रहे होते और एक साधारण मानव बने रहना चाहते हैं, तो मैं इसके विरुद्ध नहीं होता। मैं साधकों को साधना करने में सक्षम होने के लिए फा सिखा रहा हूं। मैं सभी को दाफा अभ्यास करवाने का प्रयास नहीं कर रहा हूं। यदि आपको लगता है कि आप साधना कर सकते हैं, तो करें। नहीं तो नहीं। शायद मनुष्य के भविष्य के समाज में अभी भी ये बगल मार्ग की प्रथाएं अस्तित्व में रहेंगी जैसे कि ज्योतिष-विद्या, *फंगशवे*, और यहां तक कि कुछ तरीकों का उपयोग करके

बीमारी का उपचार करना। यह संभव है कि यह सभी अस्तित्व में होंगे। वे हमेशा प्राचीन काल से विश्व में मौजूद रहे हैं। लेकिन आने वाले समय में, आप एक साधक के रूप में, जो चीजें देखेंगे, वह उच्च, और उच्च स्तरों की होंगी, और आपके शब्दों की शक्ति अधिक, और अधिक हो जाएगी। जब आप दूसरे लोगों को उनका भाग्य बताएंगे तो समस्याएँ पैदा होंगी। कभी-कभी मानव जगत में चीजें तय नहीं हुई होती हैं; वे एक निश्चित तरीके से शायद नहीं हो। फिर यदि कोई व्यक्ति जो आप कहते हैं उसपर विश्वास करता है, और दृढ़ता से विश्वास करता है, तो यह उस संभावना को दृढ़ कर देता है। एक बार जब आपके पास ऊर्जा आ जाती है, तो संभव है कि आपके शब्द उस तत्व को जो निश्चित नहीं है उसे निश्चित कर दे, जिसके परिणामस्वरूप मूल रूप से जो नहीं होना चाहिए वह हो जाएगा। आप जो देख रहे हैं वह वास्तविक स्थिति नहीं है; अन्य कार्मिक कारण हो सकते हैं। लेकिन जब आप इसे उच्चारेंगे तो आप इसे पक्का कर देंगे। इस स्थिति में, आपने एक बुरा काम कर दिया होगा। और इस तरह का कर्म कुछ अतिरिक्त है जो आपने अपनी साधना में जोड़ा दिया है। आपके परीक्षण और कठिनाईयां यहां आपके सामने हैं, और आपको उनमें से प्रत्येक को पार करना होगा। आप उन अतिरिक्त कठिनाइयों को पार नहीं कर पाएंगे जिन्हें आप जोड़ते हैं। यदि आप ऐसा कुछ करते हैं, जिसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है या गंभीर रूप से बुरे परिणाम होते हैं, तो आप उस परीक्षा को पार नहीं कर पाएंगे और साधना नहीं कर पाएंगे। इसलिए साधक बोलचाल की साधना पर बल देते हैं। फिर भी आप उस आवश्यकता को पूरा करने में बुरी तरह विफल रहे हैं। यदि आप सीधे-सीधे दूसरों को बताते हैं जो आपको दिखता है, तो आप दिव्य रहस्यों को उजागर कर रहे हैं, और आप लापरवाही और बिना उत्तरदायित्व के उन्हें साधारण लोगों को बता रहे हैं। यह कैसे ठीक हो सकता है? वह और भी कम स्वीकार्य है।

इसके अलावा, मैं आपको बता दूं कि बहुत से भाग्य बताने वालों में बाहरी कारक होते हैं जो उनके अपने कारकों के अलावा एक और भूमिका निभाते हैं। तो यह एक भयावह बात है। एक जीवित प्राणी के लिए यह वास्तव में भयावह है! उस स्थिति में साधना करने का कोई तरीका नहीं है। मैं लोगों को इस मामले के सिद्धांत बता रहा हूं—मैं ऐसा करने वाले साधारण लोगों के विरुद्ध नहीं हूं। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो मुझे आपको इसके बारे में बताना होगा और मुझे आपके लिए उत्तरदायी होना होगा। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह आपके लिए नुकसान पहुंचाने के अलावा कुछ नहीं करेगा। मेरे ऐसा कहने पर आप निश्चित ही सोचेंगे, "तो मैं आजीविका कैसे चलाऊँगा?" मैं केवल ताओ सिखा रहा हूं, फा सिखा रहा हूं, साधकों को। यदि आप साधना कर सकते हैं, तो करें। मैं केवल इस प्रकार समझा सकता हूं। मुझे आपका उत्तरदायी होना होगा। दूसरी ओर, यह सुनिश्चित किया जाएगा कि आप, एक दाफा शिष्य, एक आजीविका बना सकते हैं, और यह ऐसे ही होना चाहिए।

प्रश्न: मैं अपने भय से कैसे छुटकारा पा सकता हूं?

गुरु जी : भय भी एक मोहभाव है। यह आपकी इच्छाशक्ति मजबूत होने की बात है। आपको इससे उबरना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं, "जब भी मैं अभ्यास करता हूं, मैं सो जाता हूं।" वह भी एक ऐसी चीज है जो आपको अपनी इच्छाशक्ति से दूर करनी होगी। हालाँकि यह एक असुर नहीं है, लेकिन इसका साधकों पर आसुरिक प्रभाव हो सकता है। यदि आप इसे काबू नहीं सकते हैं तो यह आपको प्रभावित करेगा।

प्रश्न: मैं अपने पेट के निचले भाग में फालुन कभी भी अनुभव नहीं कर पाता।

गुरु जी : हर कोई इसे अनुभव नहीं कर सकता। कुछ लोग इतने संवेदनशील होते हैं कि ऊर्जा के चलते ही वे इसे अनुभव कर सकते हैं: "वाह! यह बहुत शक्तिशाली है!" कुछ लोग कभी कुछ भी अनुभव नहीं कर पाते हैं, चाहे उनके उदर में कितनी भी हलचल होती हो। प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक स्थिति भिन्न होती है। वह जो अनुभव करता है, उसके अनुसार किसी व्यक्ति के स्तर की ऊंचाई को नहीं आंकना चाहिए। यह निश्चित करें कि अनुभवों के आधार पर इसका आकलन न करें।

प्रश्न: क्या मेरी तीसरा नेत्र कभी नहीं खुलेगा ?

गुरु जी : क्या तुम इसका पीछा कर रहे हो? यदि साधना में सफल होने के बाद भी यह नहीं खुलता है, तो मुझे लगता है कि कुछ उचित नहीं है। आपके कहने का अर्थ है, "क्या इसे साधना के दौरान नहीं खोला जाएगा?" यदि आप इसका पीछा करते हैं, यदि आप इस प्रकार का विचार करते है—थोडा सा भी—तो आपको देखने नहीं दिया जायेगा। और यहां तक कि जब आपके पास देखने की क्षमता होगी, तब भी आपको देखने नहीं दिया जायेगा, क्योंकि उस मोहभाव को आपने त्याग नहीं दिया है। इसलिए आपको उस मोहभाव से छुटकारा पाने और इसे अनदेखा करने की आवश्यकता है। फिर देखें क्या होता है।

कोकेशियन छात्र एशियाई छात्रों से भिन्न हैं क्योंकि पूर्व की सांस्कृतिक उत्पत्ति—विशेष रूप से चीन की—अधिक गहरी हैं। इसमें न केवल पांच से छह हजार वर्ष पुरानी संस्कृति है, बल्कि इन्हें पिछली अवधि की प्रागैतिहासिक संस्कृति भी विरासत में मिली है। तो इनकी हड्डियों में और इनकी कोशिकाओं में तक गहरे सांस्कृतिक तत्त्व है। लेकिन कोकेशियन समाज की संस्कृति लगभग दो हज़ार वर्षों की है, इसलिए इसके मिथक सरलता से टूट जाते हैं। जैसे ही मिथक दूर होते हैं वे लगभग देख सकते हैं। फिर इसके विपरीत, चीनी लोग किस तरह से भिन्न हैं? जब आप उन्हें इसका कारण बताते हैं, तो वे अभी भी सोच रहे होते हैं, "ओह, यह सही है, लेकिन, फिर क्यों क्यों है?" जब आप उन्हें क्यों का क्यों बताते हैं, तब वे फिर यह सोचते हैं, "ओह, तो फिर क्यों के क्यों का क्यों क्या है?" इसलिए इससे पहले कि आप उनके मन को पूरी तरह से खोल सकें आपको उनके लिए चीजों को पूरी तरह से स्पष्ट करने की आवश्यकता है। हमारे कई कोकेशियन छात्र जैसे ही सीखना शुरू करते हैं उन्हें जाने-अनजाने में ही स्पष्ट हो जाता है—यही कारण है। साधारण लोगों के समाज की सतही चीजों का उनपर अधिक प्रभाव होता है। यह केवल सिद्धांत हैं—साधारण मानवीय सिद्धांत—जो उन्हें बांधे रखते हैं। जैसे ही उन सिद्धांतों में छेद किया जाता है, तो साधारण लोगों के बीच ऐसा कुछ नहीं होता है जो उन्हें संभाल सके। यही विचार है। हालाँकि, यह हमेशा ऐसा नहीं होता है। एक अवधारणात्मक समझ और एक तर्कसंगत समझ दो भिन्न-भिन्न चीजें हैं। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में फा सीख सकता है और इसे अपने मन में समाहित कर सकता है, वास्तव में फा को साधना द्वारा समझ सकता है, तो यह पहले से ही अवधारणात्मक समझ प्राप्त करने से अलग है। फा को तर्कसंगत रूप से समझने के लिए एक व्यक्ति उच्च स्तर पर पहुँच जाएगा।

प्रश्न: कोई व्यक्ति भिक्षुओं और भिक्षुणीओं में फा को कैसे फैला सकता है?

गुरु जी : मैं अक्सर भिक्षुओं और भिक्षुणीओं के बारे में सोचता हूं। मैं विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों से उनके बारे में चिंतित हूं। चाहे वह शाक्यमुनि हो या यीशु, उन महान ज्ञानियों ने अपने-अपने साधना

मार्ग की स्थापना की, जिनपर शिष्य अभी भी चलते हैं। आखिरकार, वे बुद्ध प्रणाली के शिष्य माने जाते हैं, इसलिए मैं उनके बारे में चिंतित रहता हूं। लेकिन धर्म युग का अंत इस बिंदु तक पहुँच चुका है और वास्तव में ऐसे लोग धर्मों में बहुत नहीं हैं जो सच में साधना करना चाहते हैं। मैंने एक समस्या देखी है : कई भिक्षु और भिक्षुणीओं ने दिव्यों और बुद्धों के बजाय धर्मों को बनाए रखा है। उनका मन साधना पर नहीं बल्कि पूरी तरह से धर्म की औपचारिकताओं को बनाए रखने पर है, और इस मोहभाव के कारण उनके लिए एक गंभीर बाधा बन गई है। साथ ही, कुछ लोगों को लगता है कि धार्मिक रूपों से परे कोई बुद्ध फा नहीं है, लेकिन केवल दुष्ट प्रथाएं और कुटिल मार्ग हैं। यह सबसे बड़े कारकों में से एक है जो उन्हें फा प्राप्त करने से गंभीरता से रोकता है। फिर भी, ऐसे लोग हैं जो वास्तव में चीजों के बारे में सोचते हैं और वास्तव में तर्क के आधार पर हर चीज का मूल्यांकन कर सकते हैं, और ऐसे लोग असाधारण हैं। वे मेरी पुस्तक पढ़ते हैं, और जब वे पढ़ना समाप्त करते हैं तो उन्हें पता चलाता है कि यह क्या है, क्योंकि सभी लोगों के भीतर बुद्ध-प्रकृति होती है। यह बिलकुल विद्युत की तरह काम करता है : जब दो तार संपर्क बनाते हैं, तो "खटाक!"—वे जुड़ जाते हैं। यदि उनके पास बुद्ध-प्रकृति नहीं है तो वे नहीं जुड़ेंगे, वे उन चिंगारियों को नहीं निकाल सकते हैं, और विद्युत का संचालन नहीं हो पाएगा। इसलिए कुछ भिक्षु और भिक्षुणीयां भिन्न होते हैं, और मुझे लगता है कि वे वास्तव में उल्लेखनीय हैं क्योंकि वे जानते हैं कि धर्मनिरपेक्ष जगत को छोड़ने का उनका कारण साधना करना है। दूसरी ओर, कुछ लोगों के पास वह पवित्र मन नहीं है। हालाँकि, मैं धार्मिक चीजों के बारे में अधिक नहीं कहूँगा, मैं इसे बातों-बातों में बता रहा हूं। आप उनसे बात कर सकते हैं यदि आप उनके संरक्षक, मित्र या रिश्तेदार हैं। यदि वे साधना करना चाहते हैं, तो वे करेंगे। और यदि वे साधना नहीं करना चाहते हैं, तो उन्हें छोड़ दें। हमें वास्तव में लोगों को घसीटना नहीं चाहिए : "आइए, साधना कीजिये यदि आप नहीं करते तो यह वास्तव में दुःख की बात है! आपको मेरे साथ आना होगा! " मन को व्यक्तिगत या भावनात्मक संबंधों से नहीं बदला जा सकता है। लोगों के मन को स्वयं ही प्रभावित होना होगा।

प्रश्न: जिन भिक्षुओं को मंदिरों में निर्धारित कर्तव्य हैं उन्हें वास्तव में साधना कैसे करनी चाहिए? क्या उन्हें सांसारिक जीवन में वापस लौट जाना चाहिए?

गुरु जी : उन्हें निश्चित रूप से सांसारिक जगत में लौटने की आवश्यकता नहीं है। क्यों नहीं? "केवल एक साधना पद्धति का अभ्यास" का विषय जिसका मैं मुख्य रूप से उल्लेख करता हूँ वह उस फा से संबंधित है जिसकी अब हम साधना करते हैं। अतीत में, बौद्ध शास्त्रों के प्रत्येक शब्द के पीछे बुद्ध की छवियां होती थीं। अब जब आप शास्त्रों के पन्ने पलटते हैं, तो वे आपको नहीं दिखाई देंगे; यहां तक कि शाक्यमुनि और यीशु के नामों के पीछे भी उनकी छवियां नहीं हैं। यह की, शास्त्रों में अब लोगों को बचाने की शक्ति नहीं रही है, क्योंकि वे केवल श्वेत पन्नों पर काली स्याही हैं। इसके अलावा, धार्मिक क्रियाएं करना केवल एक धार्मिक औपचारिकता रह गयी है, और मैं उन्हें केवल साधारण कार्य मानता हूं। वास्तव में, कई भिक्षुओं ने उन औपचारिकताओं को एक पेशे के रूप में मान लिया है—उन्हें लगता है कि वे काम कर रहे हैं और वेतन कमा रहे हैं। मुख्यभूमि चीन में भिक्षुओं को अनुभाग स्तर और प्रभाग स्तर में वर्गीकृत किया गया है, और वे तदनुसार वेतन प्राप्त करते हैं। मैंने सुना है कि एक विभाग स्तर भी है। उन्होंने शाक्यमुनि की मूल शिक्षाओं में परिवर्तन किया है। लोग यह नहीं जानते हैं कि वे शाक्यमुनि द्वारा सिखाये और फैलाये गए फा को क्षति पंहुचा रहे हैं। अब जब यह इस स्तर पर पहुंच गया है, तो निश्चित रूप से शाक्यमुनि अब उनकी देखभाल नहीं करते हैं, और यह अब ऐसे ही है। इसलिए मैं इसे केवल पेशा मानता हूं। चाहे शास्त्रों का जाप हो या धार्मिक क्रियाएं हो, इनसे अब कोई

प्रभाव नहीं पड़ता है। जब तक कि वे दाफा में साधना नहीं करते वे लोग किसी भी रूप से बंधे नहीं रहेंगे। जैसा कि मैंने कहा, महान मार्ग का कोई रूप नहीं होता। कोई भी साधारण मानवीय रूप ऐसे महान फा के योग्य नहीं हैं। इसलिए हम चीजों को बंधनमुक्त तरीके से प्रबंधित करते हैं और केवल लोगों के मन को देखते हैं। यदि आप साधना करते हैं, तो मैं आपकी देखभाल करूंगा। और इस तरह की देखभाल साधारण लोगों को दिखाई नहीं देगी, इसलिए इसे किसी भी साधारण मानवीय रूप लेने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हमारी कोई औपचारिकता नहीं है, इसलिए मैं साधारण लोगों के बीच किसी भी काम को कार्य का रूप मानता हूं—मैं इसे केवल इस तरह से देख सकता हूं। यदि आप एक भिक्षु हैं और धार्मिक क्रियाएं करना चाहते हैं, तो आप उन्हें कर सकते हैं, जहाँ तक आप मानते हैं कि आप दाफा में साधना कर रहे हैं। आपको तेजी से आगे बढ़ने के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है—आपको इसे ऐसे ही करना चाहिए। वही अन्य धर्मों के लिए भी लागू होता है।

प्रश्न: क्या "स्पष्ट और स्वच्छ मन" होने का अर्थ सभी मोहभावों और उन सब चीज़ों से छुटकारा पाना है जिनमें हमारी कोई रुचि है?

गुरु जी : यदि कोई स्पष्ट और स्वच्छ मन होने की स्थिति को प्राप्त करता है तो यह ऐसा ही है। लेकिन आप साधारण लोगों के स्तर से साधना शुरू करते हैं। यदि आप इसे तुरंत प्राप्त कर लेते हैं, तो आप तुरंत बुद्ध बन जाएंगे हैं। तो यह असंभव है। बुद्ध के स्तर तक पहुंचने के लिए, आपको साधना की प्रक्रिया से गुजरना होगा और एक गहरी और पर्याप्त मानसिक नींव रखनी होगी। अर्थात, आप लगातार साधना कर रहे हैं, लगातार इसे गहनता से कर रहे हैं, और स्वयं में और अधिक सुधार कर रहे हैं। यह धीरे-धीरे प्राप्त होता है। यदि आप वास्तव में तुरंत उस स्तर तक पहुंचा दिए जाते हैं, तो आप इतने भयभीत हो सकते हैं कि आप शायद आगे अभ्यास करने का साहस नहीं करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपकी सोच अभी उच्च स्तर पर नहीं है, क्योंकि आपने साधारण लोगों के स्तर से शुरुआत की है। तो यहाँ धीरे-धीरे और स्वाभाविक रूप से पहुंचा जा सकता है, और यह बहुत अधिक प्रयास के बिना प्राप्त किया जा सकता है। आप इसे प्राप्त कर लेंगे जब तक आप साधना करते हैं और पुस्तक पढ़ते हैं। फा के सिद्धांत आपकी सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं। यह बलपूर्वक नहीं किया जा सकता है। इसे बलपूर्वक करना स्वयं एक इच्छापूर्ण कार्य होगा। अपने आप को एक साधक के रूप में संचालित करें—आप इस पर स्पष्ट हैं। हर कोई अपने मन और मस्तिष्क से साधना करता है और पूरा प्रयास करता है कि बुरा काम न करे। इसे इच्छापूर्ण कार्य नहीं कहा जाता है। इसे आपकी जन्मजात, मूल प्रकृति के जितना हो सके उतने पास जाना कहा जाता है।

प्रश्न: आपने कहा था कि विज्ञान एक धर्म है, फिर भी मुझे अभी भी अपने वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों में अच्छा प्रदर्शन करना है। यह हमेशा विरोधाभासी परिस्थिति होती है।

गुरु जी : मैंने कहा है कि विज्ञान एक धर्म है और मैंने इस पर विस्तार से चर्चा की है। यह एक धर्म क्यों है, और यह व्यापक क्यों है? कारण यह है कि, यह न तो सदगुण पर ध्यान देता है और न ही दिव्यों के अस्तित्व को स्वीकारता है, और चूंकि यह दिव्यों के अस्तित्व को नहीं देख सकता है, इसलिए यह नहीं मानता है कि लोगों को बुरे कर्म करने के लिए दंडित किया जाना चाहिए और अच्छे कर्म करने के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए। जो भी कहता है कि अच्छे कर्म करने से पुरस्कार के रूप में सौभाग्य प्राप्त होता है, कि बुरे कर्म करने से भुगतान करना पड़ता है, या यह कि दिव्यों का अस्तित्व होता है, यह उन सबको नकारने और आक्षेप लगाने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करता है। यहां तक

कि यह सच्चे धर्मों पर भी आक्षेप लगाता है। यह मानवीय नैतिकता को भी हानि पहुँचाता है। नैतिक प्रतिबंधों के अभाव में लोग किसी भी बुरे कर्म को करने की धृष्टता करते हैं। इस एक बिंदु के आधार पर ही, क्या आप कह सकेंगे कि यह विज्ञान सच्चा है या दुष्ट है? क्या यह एक दुष्ट भूमिका नहीं निभा रहा है? आज लोगों की नैतिकता इस सीमा तक भ्रष्ट क्यों हो गई है? यह ठीक इसलिए है क्योंकि लोगों में अब सच्ची श्रद्धा नहीं रही है। वास्तव में—और यह विशेष रूप से पश्चिमी लोगों के लिए लागू होता है—जिसे आप वास्तव में मानते हैं वह धर्म नहीं है, बल्कि आपका विज्ञान है। अपने मन की गहराई से इसके बारे में सोचें : आपकी जिसपर सबसे अधिक श्रद्धा है वह वास्तव में विज्ञान है। बाकी सब आपके लिए गौण है। विज्ञान ही सबसे आगे है। मैं इसे इसलिए आपको इंगित कर रहा हूं क्योंकि यह साधना में एक बाधा है।

अतीत में यह कहा गया था कि रोमन कैथोलिक चर्च इस धारणा से असहमत था कि मनुष्य वानरों से विकसित हुआ है। उनका मानना था कि मनुष्य को भगवान ने मिट्टी से बनाया है। मैंने सुना है कि रोमन कैथोलिक चर्च ने अब सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लिया है कि मनुष्य वानरों से विकसित हुए हैं। क्या वे अपने भगवान को नकार नहीं रहे हैं? यह विज्ञान इतना प्रभावशाली है कि आज सब कोई इस पर विश्वास करता है। मैं स्पष्ट रूप से मानव जाति के बारे में सब कुछ समझा सकता हूं, प्रमुख चीजों से लेकर साधारण चीजों तक; मैं प्राचीन काल से आज तक मानव जाति के विकास के हर भाग को स्पष्ट रूप से समझा सकता हूं। लेकिन मैं ऐसी चीजों के बारे में बात नहीं करता हूं क्योंकि ये सभी साधारण लोगों के मामले हैं। मैं केवल उन चीजों के बारे में बात करता हूं जो आपकी साधना से संबंधित हैं। विज्ञान में लगभग सारी समझ का आधार त्रुटिपूर्ण है, और इसमें पदार्थ, ब्रह्मांड और जीवन को समझने का आधार सम्मिलित है। आज का विज्ञान कहता है कि ऑस्ट्रेलिया के ऊपर के वातावरण में छेद, अर्थात अंटार्कटिक के ऊपर आकाश में दिखाई देने वाली ओजोन परत में छेद, औद्योगिक उत्सर्जन के कारण था—एयर कंडीशनर और अन्य अपशिष्ट गैसों में प्रयोग होने वाले फ्लोरोकार्बन से—और यह वही चीज़े थीं जिनके कारण ओजोन परत को हानि पहुंची। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहता हूं : इस ब्रह्मांड में सब कुछ जीव हैं—सब कुछ जीवित है। वह विशाल गैसीय सत्ताएं जिन्हें आप देख नहीं सकते हैं, परत-दर-परत-दर-परत-दर-परत हैं—आप यह नहीं गिन सकते कि कितने हैं। वे सभी जीव, सभी दिव्य हैं। यह आधुनिक विज्ञान द्वारा लाया गया उद्योग है जो मानव जाति के परिवेश को गंभीर रूप से हानि पहुंचा रहा है। यह पूर्णतया सत्य है। यह गैसीय सत्ताओं की क्षति नहीं है जो अंटार्कटिक के ऊपर के वायुमंडल में छेद का कारण बना। मनुष्य उच्च-स्तरीय जीवों को हानि नहीं पहुंचा सकता। यूरोप जो एक औद्योगिक रूप से विकसित क्षेत्र है उसपर यह छेद क्यों नहीं प्रकट हुआ? इसे अंटार्कटिक में क्यों होना चाहिए था, एक ऐसी जगह जहां कोई नहीं रहता? ऐसा इसलिए क्योंकि दिव्यों ने देखा कि पृथ्वी पर बहुत अधिक अपशिष्ट उत्सर्जन और विषाक्त गैस बन गए है, इसलिए उन्होंने अपशिष्ट गैस को बाहर निकालने के लिए एक खिड़की खोली और फिर इसे बंद कर दिया। यह कदापि ऐसा नहीं है जैसे आधुनिक विज्ञान समझता है।

आजकल, मानव जाति का विकास एक ऐसे चरण तक पहुँच गया है जहाँ विज्ञान सभी क्षेत्रों को नियंत्रित करता है। इसलिए अब मानव जाति इससे मुक्त नहीं हो सकती, क्योंकि यह मनुष्य के सामाजिक विकास की एक वास्तविकता बन गई है। यदि आप इसके विरुद्ध होते हैं तो यह नहीं चलेगा। हम साधारण लोगों के साथ जितना संभव हो सके उतना उनके अनुरूप काम करते हैं। इसलिए,

अपने वैज्ञानिक अनुसंधान में अच्छा कार्य करें। यह आपका दोष नहीं है। यह ऐसा कुछ नहीं है जिससे एक व्यक्ति, लोग, या राष्ट्र मुक्त हो सकता है। क्योंकि यह एक पेशा है, आपको इसे अच्छी तरह से करना होगा, अपने कर्तव्यों को पूरा करना होगा, और अपना काम अच्छी तरह से करना होगा। बस इतना ही। ऐसा मत सोचो कि आप विज्ञान के लिए ये या वो कर रहे हैं। वास्तव में, विज्ञान ने मानव जाति के प्रत्येक क्षेत्र पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा लिया है। मानव जाति की लगभग सभी चीजें उसके अस्तित्व के लिए हैं, इसलिए आप [जो विज्ञान है] के कारण सब कुछ करना बंद नहीं कर सकते। साधकों की बात करें तो, मैं केवल यह चाहता हूं कि आप सिद्धांत को समझें। मैं आपको इस वास्तविकता से अलग होने के लिए नहीं कह रहा हूं जिसने मानव समाज को जकड़ रखा है। ऐसा नहीं है कि मैं आपसे अपना काम छोड़ने के लिए कह रहा हूं।

मैंने कहा कि विज्ञान एक धर्म है और यह पूर्ण रूप से धर्म है। यह आपको पहले भौतिक अर्थों में चीजों को मानने की ओर ले जाता है, जो आपको उसमें आध्यात्मिक रूप से विश्वास दिलाता है। दूसरी ओर, सच्चे धर्म, आपको पहले सिद्धांतों को समझाते हैं—आप अपने मन से चीजों को वास्तव में समझने लगते हैं। आपकी समझ अमूर्त से विकसित होती है, अंत में, मूर्त तक पहुँच जाती है। अंततः आप इसे भौतिक अर्थों में समझ सकते हैं और फल पदवी तक पहुंचने पर अपने दिव्यलोक में लौट सकते हैं। यह उस तरह की प्रक्रिया है। विज्ञान प्रक्रिया को उलट देता है। यह उन भौतिक चीजों से शुरू होता है जो लोगों के विश्वास को बढ़ाता हैं। दूसरी ओर, धर्म आध्यात्मिक समझ से शुरू होता है जो बाद में भौतिक परिवर्तन लाता है। मैं इस सिद्धांत को समझा रहा हूं ताकि आप इसे समझ सकें। क्योंकि विज्ञान समाज की एक सच्चाई बन गया है, मैं इसके विरुद्ध नहीं हूं—यह कुछ ऐसा है जिसपर मानव अस्तित्व का विश्वास बैठ गया है। मैं केवल समकालीन विज्ञान की वास्तविक स्थिति के बारे में बात कर रहा हूँ।

प्रश्न: क्या गुरु जी कारण-संबंधी सम्बन्ध और करुणामयी मन के बारे में बात कर सकते हैं ?

गुरु जी : क्योंकि आपने करुणा का उल्लेख किया है, इसलिए मुझे आपकी सोच को सुधारने की आवश्यकता है। मैं आपको बताना चाहूँगा कि करुणा क्या है। साधारण लोगों के समाज में लोग सोचते हैं कि यदि वे बिना किसी आपदा या कष्ट के बहुत आराम से जीते हैं, यदि प्रत्येक दिन सुखद और कष्टहीन है, और यदि उनके पास पैसे की कमी नहीं है और उनके पास सब कुछ है जिसकी उन्हें आवश्यकता है, तो दिव्य उनके प्रति करुणामयी हैं और वास्तव में उनके साथ अच्छा कर रहे हैं। हालांकि मैं आपको बता दूं, कि दिव्य ऐसे नहीं हैं। यदि वे वास्तव में ऐसे होते, तो वे लोगों के लिए बुरे होते। क्योंकि मानवीय समझ पूरी तरह से उलटी है। आप जानते हैं कि इस जगत में रहने वाले लोग सामाजिक संपर्क रखने के लिए बाध्य हैं, और इसलिए वे बुरे कर्म को एकत्रित करते हैं। यीशु ने कहा था कि लोगों के पाप हैं। क्योंकि उनके पास पाप हैं वे साधारण लोगों के इस आयाम तक गिर गए हैं। वे इस आयाम में कर्म को एकत्रित कर रहे हैं और हर जन्म में पाप कर रहे हैं। आप सुविधापूर्ण जीवन चाहते है, तो क्या आप अपने कर्म के भुगतान करने के लिए तैयार नहीं हैं? यदि आप कर्म के लिए भुगतान नहीं करते हैं और आप इस जन्म में अधिक एकत्रित करते हैं, तो आपके अगले जीवन में आपको एक मानव शरीर भी नहीं मिलेगा—आप किसी निम्न योनी में पुनर्जन्म ले सकते हैं। और यदि आप अभी भी अधिक कर्म एकत्रित करते हैं तो आप केवल नर्क में ही गिर सकते हैं। यदि आप और भी गिरोगे तो आप नष्ट किये जाओगे। तब जब इसे इस सिद्धांत के प्रकाश में देखा जाए, तो मुझे बताएं, यदि दिव्य

को आपके साथ "अच्छा" करना हो, तो आपके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? यही कारण-संबंधी सम्बन्ध है।

तो मैं सच्ची करुणा (सिबी) किसे समझता हूँ? यदि कोई व्यक्ति वास्तव में अच्छा है, तो वह इस जीवन में कई, कई कठिनाइयों का सामना करेगा। इसका लक्ष्य यह है कि वह इन कष्टों के बीच अपने कर्म के ऋणों का भुगतान करें, इस जीवनकाल में जिसमें उनको एक मानव शरीर मिला है उसी का लाभ उठाकर जल्दी से उन सभी के लिए भुगतान करना है। सभी ऋणों को चुकाने के बाद वह हमेशा के लिए सुख का आनंद लेने के लिए दिव्यलोक में जा सकता है। इसलिए उसे साधारण लोगों के बीच पीड़ित होना होगा। इसके बारे में सोचें, फिर : सच्ची करुणा क्या है? बुद्ध की चीजों की समझ मनुष्यों की समझ की तुलना में पूरी तरह से भिन्न हैं। साधारण लोग सोचते हैं कि बुद्ध या दिव्य लोगों के प्रति तभी करुणामयी हैं यदि वे उन्हें साधारण, मानवीय सुखों का आनंद लेने दें। जब वे पीड़ित होते हैं, तो वे ऊपर से नीचे के सभी दिव्यों से शिकायत करते हैं, "हे ईश्वर, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? मैं भटक चुका हूँ! " आपको कर्म का भुगतान करवाकर, दिव्य आपकी देखभाल *कर* रहे हैं ताकि आप वापस लौट सकें। कितना अद्भुत है उस स्थान पर लौटना, जहाँ कोई जन्म, सर्वनाश, या नीचे की ओर गिरना नहीं है। यही सच्ची करुणा है। आप जानते हैं कि आप साधना कर रहे हैं। तो मैं आपके सभी कष्टों को समाप्त क्यों नहीं करता? समस्याओं से गुजरना आपके लिए अनावश्यक होता, क्योंकि मैं बस आपको वहाँ तक ले जाता और बस इतना ही, है ना?—और ऐसा कितना करुणामयी होता! लेकिन ऐसा नहीं हो सकता! आपके ऊपर जो ऋण है उसका आपको स्वयं ही भुगतान करना होगा। जल्दी करो और इसका भुगतान करो! जल्दी करो और इसका भुगतान करो, और केवल इस तरह से मैं आपको जितनी जल्दी हो सके बचा सकता हूं। क्या यह सिद्धांत ऐसा ही नहीं है? मैं करुणा और करुणा क्या है इसके बारे में एक अन्य दृष्टिकोण से बोल रहा हूं। साधारण लोगों को नहीं, बल्कि आपको फा सिखाया जा रहा है। यह कभी मत भूलना। साधारण मनुष्य हमेशा भ्रम में खोए हुए होते हैं। उन्हें इन सिद्धांतों को जानने की अनुमति नहीं है। मनुष्य मनुष्य होते है, और शिष्य शिष्य होते हैं। साधक और साधारण मनुष्य हमेशा भिन्न रहेंगे।

ऐसा कुछ है जो मैं आपको बताना चाहता हूं : संसार में कुछ भी संयोग से नहीं होता है—दिव्य देख रहे हैं। इस आयाम में, कुछ ऐसे हैं जो पुनर्जन्म की व्यवस्था करते हैं, कुछ समाज में व्यवस्था के लिए उत्तरदायी हैं, कुछ जो सामाजिक व्यवस्था की देखरेख करते हैं, कुछ पृथ्वी की स्थिरता को नियंत्रित करते हैं, कुछ वायु और वायु के विभिन्न घटकों के प्रभारी हैं, और कुछ ध्यान रखते हैं कि पृथ्वी पर विभिन्न दिव्य क्या कर रहे हैं। इस आयाम में सभी प्रकार के दिव्य हैं। वे ऐसी चीजों की देखरेख कैसे नहीं करते? क्या मानव समाज ऐसे ही चलेगा जैसे लोग चाहते हैं? यह बिल्कुल ही असंभव है।

प्रश्न: परस्पर-जनन और परस्पर-विरोध के सिद्धांत के संबंध में, क्या यह सच है कि उच्च स्तर पर, इन दो पदार्थों में से एक जन, शान, रेन के अधिक पास है?

गुरु जी : इसे ऐसे नहीं समझा जाना चाहिए। पूरा ब्रह्मांड *जन, शान, रेन* से बना है। मैं इसे इस तरह से बताना चाहता हूँ : दो पदार्थ [जिसका आपने संदर्भ दिया है] उन दोनों का जन, शान, रेन द्वारा ब्रह्मांड में सृजन किया गया है। यदि इस ब्रह्मांड में केवल सकारात्मक पक्ष विद्यमान होता, तो यह जीवों के लिए अत्यंत दयनीय होता। उन्हें न तो खुशी होती और न ही कष्ट, और जीवन उबाऊ हो

जाता। क्योंकि यहाँ कठिनाई और कष्ट है इसलिए जब लोगों को खुशी प्राप्त होती है तो वे खुश होते हैं और खुशी को संजोते हैं; केवल इस तरह से उन्हें लगेगा कि जीवन रोचक है। क्योंकि ब्रह्मांड में एक सकारात्मक पक्ष का अस्तित्व है, इसलिए एक नकारात्मक पक्ष के अस्तित्व को जीवों के लिए व्यवस्थित किया गया था, और यह उनके कर्म को हटा सकता है।

प्रश्न: मेरी समस्या का जड़ से हल होने के बाद से, जैसे ही कोई दाफा का पक्ष लेने का उल्लेख करता है, मैं अपना खून खौलते हुए अनुभव करता हूँ । गुरु जी, क्या यह एक सही स्थिति है ?

गुरु जी : नहीं, यह सही नहीं है। यह ठीक नहीं है। सभी, इस पर ध्यान दें! अभी-अभी मैंने सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष होने की बात की। जैसे नकारात्मक पक्ष इस निम्न स्तर तक पहुंचता है, यह बुरा पक्ष बन जाता है; जबकि सकारात्मक पक्ष, जैसे ही यह इस निम्न स्तर तक पहुँचता है, यह अच्छा (शान) पक्ष बन जाता है। इसलिए मैं आपको बता रहा हूं कि साधारण लोगों के समाज में हम उन चीजों को बिल्कुल नहीं कर सकते हैं जिस तरह से साधारण लोग करते हैं। हमें हमेशा अपना अच्छा पक्ष रखना चाहिए। बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा कि सभी जीवों में बुद्ध-प्रकृति होती है। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि सभी जीवों में साथ-साथ आसुरिक-प्रकृति भी होती है। अर्थात, प्रत्येक जीव में आसुरिक-प्रकृति और बुद्ध-प्रकृति का सह-अस्तित्व होता है। उन परिस्थितियों में जहां कोई व्यक्ति अपना आपा खो देता है या हिंसक या तर्कहीन हो जाता है, तो यह उसकी आसुरिक-प्रकृति काम कर रही होती है। ऐसी परिस्थितियों में जहां कोई व्यक्ति तर्कसंगत, दयालु और करुणामय होता है, तो यह उस व्यक्ति की बुद्ध-प्रकृति काम कर रही होती है। ये दोनों भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में प्रदर्शित होती हैं। इसलिए हम हमेशा अच्छे पक्ष का प्रयोग करते हैं। कुछ समय पहले, जब एक टेलीविजन केंद्र ने हम पर एक आधारहीन रिपोर्ट प्रसारित की थी और हम उनसे मिलने गए थे, सभी ने उनसे तर्कसंगत और सद्भावना के साथ बात की थी। उस समय बहुत सारे लोग वहां गए थे, लेकिन बड़ी संख्या में लोगों का होना कोई बुरी बात नहीं थी। लोग जो रवैया और दृष्टिकोण अपनाते हैं, वह अच्छा या बुरा हो सकता है। उन्होंने चीजों को विवेक के साथ और पूरी नम्रता से समझाया। वे देश के राजनीतिक मुद्दों में नहीं उलझे, न ही उन्होंने सार्वजनिक संपत्ति को हानी पहुंचायी। सब कोई एक साधक की तरह पेश आया और हमारे पक्ष को समझाने में सफल रहा। [केंद्र पर] सभी लोग प्रभावित हुए क्योंकि वे कभी भी इस तरह के लोगों से नहीं मिले थे। इसके विपरीत, मानव समाज में हिंसा क्यों है? साधारण लोग प्रदर्शन और विरोध करते हैं जब वे किसी मुद्दे पर अड़ जाते हैं या वही बात किसी से मनवाने जाते हैं। हिंसा और शोर मचाना होता है, और वे हथियार भी उठा लेते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों का एक आसुरिक पक्ष होता है और वे साधारण लोग हैं। यहाँ हम साधक हैं, और हमें केवल अच्छे पक्ष का उपयोग करना चाहिए, बुरे पक्ष का नहीं। साधारण लोग अच्छे पक्ष और बुरे पक्ष दोनों का प्रयोग करते हैं; साधारण लोग विवेक और हिंसा दोनों का प्रयोग करते हैं। जब वे कोई बहस नहीं जीत पाते, तो वे गाली-गलौज और मार-पीट पर उतर आते हैं। साधारण लोगों का अच्छा पक्ष और बुरा पक्ष दोनों होता है।

प्रश्न: गुरु जी ने कहा कि जब ब्रह्मांड को शुद्ध किया गया था, तो कुछ परग्रही प्राणी पृथ्वी पर भाग आये थे। क्या उनका अस्तित्व प्रेत आत्माओं के रूप में है या किसी अन्य रूप में है ?

गुरु जी : पहले मैं यह बता दूं कि परग्रही प्राणी क्या हैं। आप जानते हैं कि यह पृथ्वी इस ब्रह्मांड में एकमात्र ग्रह नहीं है जिसपर जीवन है, और पृथ्वी का अस्तित्व केवल इस बार का ही नहीं है। मैं यह कह

रहा हूं कि पृथ्वी के इस स्थान पर पहले भी अन्य पृथ्वियां थी। उन पिछली पृथ्विओं को हटा दिया गया था। कुछ विस्फोटित हई थीं। यह कई बार हुआ—यह संख्या काफी बड़ी है। हर बार पृथ्वी का अंतिम चरण हमेशा एक ऐसा समय रहा है जब इसके जीव अत्यधिक भ्रष्ट हो गए थे और इसका पदार्थ अत्यधिक अशुद्ध हो गया था, इसलिए उस पृथ्वी को अब नहीं रखा जा सकता था। उसे नष्ट कर दिया जाता क्योंकि पूरा ग्रह बुरे कर्म के गोले में परिवर्तित हो गया था। कारण यह है कि, जीवों का पुनर्जन्म होता है। वे मिट्टी, चट्टानों, पौधों या पदार्थ में पुनर्जन्म लेते हैं, और चाहे उन्होंने किसी भी रूप में पुनर्जन्म लिया हो, वे बुरे कर्म को अपने साथ लेकर चलते हैं। पृथ्वी बुरे कर्म का एक गोला बन जाती है जब बुरा कर्म सभी तरफ फ़ैल जाता है, इसलिए उस समय इसे नष्ट कर दिया जाता है। उस पृथ्वी पर अभी भी कुछ ऐसे लोग होंगे जो अपेक्षाकृत अच्छे होंगे, और उन अपवाद रूप से कुछ या बहुत ही कम लोगों को उठाया जाता था और उन्हें तीनों लोकों में दूसरे ग्रह पर रखा जाता था। इस प्रकार युगों-युगों से इस पृथ्वी को असंख्य बार बदला गया है और हर बार ऐसे लोग थे जो बचे रह जाते। इसलिए समय के साथ वे शेष जीवों की संख्या में वृद्धि होती गयी। प्रत्येक समयावधि में दिव्यों ने एक भिन्न रूप देकर मनुष्यों को बनाया, इसलिए उनमें काफी अंतर है, और कुछ ऐसे हैं जो अन्य ग्रहों पर बनाए गए थे। यही परग्रही प्राणी हैं।

वे इतिहास के एक प्रमाण की तरह बन जाते हैं, जैसे इतिहास का कोई पृष्ठ पीछे रह जाता है। उनका बस इतना ही कार्य होता है, एक छोटा सा। वे उस समय के पृथ्वी के अंतिम चरण से बचे रह गए थे, और अपने साथ उस तकनीक को अन्य ग्रहों पर ले गए थे जो उस समय उनके पास थी, इसलिए उनका शुरुआती चरण अधिक उन्नत था। समय की इस लंबी अवधि में, ब्रह्मांड के बारे में जो ज्ञान उन्हें है वह आज की पृथ्वी के निवासियों से अधिक है। उनके शरीर अन्य आयामों में प्रवेश कर सकते हैं और उन आयामों के स्वरुप में समायोजित कर सकते हैं जहाँ पर भी वे जाते हैं; वे इस स्तर तक विकसित हुए हैं। उन चीजों में जिनमें वे सवारी करते है और उड़ते हुए आते-जाते हैं—वे विमान जिन्हें मनुष्य उड़न तश्तरी कहते हैं—अन्य आयामों में प्रवेश कर सकते हैं और अन्य अंतरिक्ष-काल-अवकाश में उड़ सकते हैं। यदि वे तेज गति के काल-अवकाश में यात्रा करते हैं, तो उसमें थोड़ी ही देर में बहुत लंबी दूरी की यात्रा तय कर लेते हैं। तो वह गति मनुष्य के लिए अकल्पनीय होती है। वे जिस प्रकार के ईंधन का उपयोग करते हैं, वे आधुनिक विज्ञान की तकनीक, सिद्धांतों या अवधारणाओं के ज्ञात पदार्थों के प्रकार कदापि नहीं हैं।

समय के साथ, ये परग्रही प्राणी लगातार विकसित होते रहे हैं और रूपांतरित होते रहे हैं। तो इस ब्रह्मांड में वास्तव में अप्रकृत सामाजिक संबंध दिखाई दिए हैं जो इस प्रकार के जीवों के होते हैं। जहां वे रहते हैं वहाँ पर लालच और आसक्ति के कारण अंतरिक्ष युद्ध जैसा वास्तव में कुछ हुआ है। उन्होंने मानव जाति को अभी तक चुनौती नहीं दी है क्योंकि मानव जाति के पास उनके लिए संकट पैदा करने की क्षमता नहीं है। इसलिए उन्होंने मानव जाति पर हमला नहीं किया है। यदि आप उन्हें चुनौती देते हैं तो वे मानव जाति पर हमला करेंगे। हालाँकि, परग्रही प्राणियों ने मानव जाति पर हमला नहीं किया है, लेकिन वे जानते हैं कि मानव शरीर सबसे उत्तम है। उन्हें मानव शरीर के प्रति आकर्षण है और वे इसे चुराना चाहते हैं। वे मानव जाति को विज्ञान में दृढ़ता से विश्वास करवाने और उस पर भरोसा करने के लिए विज्ञान के साथ मानव जाति के सभी क्षेत्रों को पूरी तरह से भर देते हैं। जब मनुष्यों के विचारों और जीने की शैली को पूरी तरह से उनके जैसे आत्मसात कर लिया जाएगा, तो उन्हें बस लोगों की

आत्माओं को प्रतिस्थापित करना होगा और मनुष्य उनका रूप धारण कर लेंगे, और वे अंततः मानव जाति को प्रतिस्थापित कर देंगे।

यह एक लंबी कहानी है। वे पश्चिम में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के बाद से बड़ी संख्या में यहाँ आ रहे हैं। वे उस समय से पहले भी आए थे, लेकिन उन्होंने तब लोगों को नियंत्रित नहीं किया था। कोकेशियान समाज के औद्योगिक युग में प्रवेश करने पर उनका पूर्ण रूप से आगमन शुरू हुआ। उन्होंने इस धरती पर अधिकार जमाने के लिए पूरी तैयारी और व्यवस्थित प्रबंध किया। यह वही थे जिन्होंने मानवजाती के लिए विज्ञान का निर्माण किया। तो यह विज्ञान पर्ग्रहियों द्वारा स्थापित किया गया था। उनका उद्देश्य मानवजाती को एकजुट करना था और उनके विचारों को इतना परिष्कृत करना था कि वे मशीनों की तरह एक समान बन जाएं। और उन्होंने ज्ञान को एकीकृत किया ताकि बाद में मानवजाती को नियंत्रित करने और बदलने में उन्हें सरलता हो। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मानव जाति को पूरी तरह से नियंत्रित करने के लिए कुछ राष्ट्रीयताओं को अपने भविष्य के मोहरे के रूप में चुना। जापान तकनीक को चलाने वाला मोहरा है। संयुक्त राज्य अमेरिका पृथ्वी पर सभी प्राचीन संस्कृतियों से अलग करने वाला मोहरा है। यहां तक कि सबसे प्राचीन और पृथक राष्ट्रों की संस्कृतियां भी नहीं बच पाईं। पूरी दुनिया अमेरिका की आधुनिक संस्कृति से प्रभावित हो रही है। प्रारंभिक चरणों में मशीनरी के निर्माण में इंग्लैंड मोहरा था, और मानव जातियों में मिश्रण के लिए स्पेन मोहरा था। परग्रही जो मार्ग मनुष्यों को दिव्यों से दूर करने के लिए अपनाते हैं वह है मानव जातियों का मिश्रण , जिससे मानवजाती अपनी जड़े खो देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आजकल लोग हायब्रिड पौधे बनाते हैं। दक्षिण अमेरिकी, मध्य अमेरिकी, मेक्सिको और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ लोग—इन सभी जातियों का मिश्रण किया गया है। इसमें से कोई भी दिव्यों की आँखों से बच नहीं सकता है। परग्रही प्राणियों ने मानवजाती को पछाड़ने के लिए व्यापक तैयारी कर रखी है।

सब कोई जो कंप्यूटर को संचालित करना जानता है, उसे पंजीकृत किया गया है। अवश्य ही, हमारे छात्रों को यह समस्या नहीं है। एक बार जब आप फा प्राप्त कर लेते हैं, तो मैं आपके शरीर की उस परत को हटा देता हूं जो उनके द्वारा नियंत्रित कर ली गई है। उन्होंने मानव शरीर के भीतर अपने शरीर की एक परत बनाई है। यह अविश्वसनीय रूप से भयावह है! प्राथमिक विद्यालय से लेकर कॉलेज तक जो कुछ भी लोग सीखते हैं, वह वही विज्ञान है जिसे वे लाये हैं, और आजकल मानवजाती जो कुछ भी उपयोग करती है वह इस सर्वव्यापी विज्ञान का उत्पाद है। लोगों को कंप्यूटर और तकनीक को इतनी तेज गति से विकसित करने की प्रेरणा क्यों मिलती है? यह शरीर की उस परत द्वारा किया जाता है जो कि मानव जाति को नियंत्रित करने के लिए परग्रही प्राणियों ने गठन किया है। यह ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी प्रौद्योगिकी और विज्ञान की वह प्रणाली जो मानव शरीर में बनी है, लोगों के मस्तिष्क को ऐसा करवा रही है। आज यह अविश्वसनीय है कि कंप्यूटर इतने विकसित हैं। लेकिन यह मानव तकनीक नहीं है। यदि यह लंबे समय तक ऐसे ही चलता रहा तो मनुष्य को परग्रही प्राणियों से बदल दिया जाएगा। लेकिन सभी इसके बारे में सोचें : परग्रही प्राणी, आखिरकार, तीन लोकों के भीतर के प्राणी हैं, जहां साधारण मनुष्य हैं। वे इस तरह की बात करने का साहस क्यों करते हैं उसके अन्य कारण हैं। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि ब्रह्मांड का फा भटक गया हैं और दिव्य अब चीजों की देखरेख नहीं कर रहे हैं। तो इसका सम्बन्ध उच्च स्तर के जीवों के साथ भी है। यदि इस स्थिति को पलटना है, तो इसे उच्च स्तरों से शुरू करना होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका यह विचार है कि मानवजाती अब

अच्छी नहीं रही है, उनकी नैतिकता पतित हो गई है, और सब कुछ विकृत हो गया है। इसलिए वे सोचते हैं कि उनको हटा देना ठीक है, क्योंकि वैसे भी उन्हें नष्ट किया जायेगा। बुद्ध लोगों के प्रति दयालु हैं क्योंकि तथागत और बोधिसत्व मानव जाति के सबसे करीब हैं—वे सबसे निचले स्तर के बुद्ध हैं। जब वे बुद्ध जो बुद्ध के उस स्तर से ऊपर के स्तर पर हैं, वे रुक कर दृष्टि डालते हैं, तो तथागत उनके लिए वैसे ही साधारण लोगों की तरह प्रतीत होते हैं। फिर उनके लिए मानवजाती क्या हैं? मानवजाती को कुछ नहीं गिना जाता। जब वे देखते हैं कि मानवजाती अब अच्छी नहीं रही, तो वे उन्हें नष्ट कर देते हैं और फिर से शुरुआत करते हैं। यही उनकी सोच है। उनकी दया मानवजाती के प्रति नहीं बल्कि बुद्ध के प्रति है। जब उससे भी उच्च स्तर के दिव्य रुक कर दृष्टि डालते हैं, तो मानवजाती उनके लिए कुछ भी नहीं है और वे सूक्ष्मजीवों से भी अधिक तुच्छ लगते हैं। आप यह सोच समझ रहे है, है ना? कुछ लोग यहां तक कह रहे हैं, "गुरु जी, आपको हमें इस-इस तरह से बचाना चाहिए।" इसका उत्तर देते हुए मैं कहता हूँ, "तो आप सोचते हैं कि यदि कोई बुद्ध आपको नहीं बचाता है, तो उन्हें व्याकुलता होगी, जैसे कि उन्हें ऐसा करने की लत लगी हो?" यह ऐसा नहीं है। बुद्ध लोगों को, आपको केवल अपनी दया के कारण बचाते हैं। लोग चुनना चाहते हैं, वे कुछ विशिष्ट तरीकों से बचना चाहते हैं, और वे अपने तरीकों से साधना करना चाहते हैं। वे नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं।

परग्रही प्राणियों के विषय की यही स्थिति है। वे वहां ऊपर नष्ट किये जा रहे हैं, और उन्हें सुधारीकरण के विषय में पता चल गया है, इसलिए वे यहाँ पर और विशेष रूप से हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में घबरा कर भाग आये हैं। फिर भी वे यह नहीं जानते कि यह काम जो मैं कर रहा हूँ उसे व्यवस्थित रूप से संयोजित किया गया है, इसलिए वे जहां भी भागेंगे बच नहीं पायेंगे। उन्हें निश्चित रूप से उन सभी बुरे कर्मों का भुगतान करना होगा जो उन्होंने किए हैं। इस ब्रह्मांड के सिद्धांत किसी भी जीव के प्रति पूर्णरूप से उचित हैं। इसलिए उन्हें अपने हर कर्म का जवाब देना होगा। उनके जीवन का आखिरकार कैसे निपटारा किया जाएगा, भविष्य में परग्रही प्राणियों का निश्चित रूप से अस्तित्व नहीं होगा। यदि वास्तव में परग्रही प्राणियों के बीच कुछ अच्छे हैं, तो उनके जीवन अन्य जीवों के रूप में पुनर्जन्म ले सकते हैं। बुरे जीवों को नष्ट किया जाएगा। इसलिए हर वह चीज जो हर व्यक्ति करता है उससे भविष्य के लिए वह स्वयं का स्थान बनाता है। और यह पूरी मानवजाति के लिए भी सत्य है। मनुष्य जो कुछ भी करता है, उससे वह अपना स्थान बनाता है।

अभी तक, यहां आने वाले अधिकांश परग्रही प्राणी अपनी जान बचाने के लिए आये हैं। वे जानते थे कि अंत में उनके लिए बच निकलना कठिन होगा, इसलिए कुछ परग्रही प्राणियों ने पृथ्वी वासियों से शादी कर ली है। लेकिन ऐसा नहीं है कि वे वैध तरीके से शादी करते हैं, क्योंकि कोई भी उनसे शादी नहीं करेगा। वे अपने वंश को बढ़ाने के लिए किसी गाँव की महिला को फंसाते हैं। और ऐसे भी हैं जो साधारण लोगों के बीच छिपे हैं। वे चाहे कैसे भी छिपें, वे छिप नहीं सकते। सूक्ष्म स्तर से अपार *गोंग* उभर रहा है। चाहे वह इस्पात हो, लोहा हो, लकड़ी हो, मानव शरीर हो, पानी हो, चट्टान हो, हवा हो, पेड़-पौधे हों, जानवर हों, पदार्थ हों, आदि से लेकर हर चीज के सूक्ष्म स्तर से सतह की ओर *गोंग ऊपर* आ रहा है। आप ही बताएं, वे बचकर कहाँ जा सकते हैं? *गोंग* सर्वव्यापी है और सतह की ओर उभर रहा है। इसलिए वे जान गए है कि इससे बचने या छिपने का कोई मार्ग नहीं है। उनका अस्तित्व किस तरह से है? वे वास्तव में ग्रसित आत्माएं नहीं हैं। लेकिन उनमें से कुछ ने मनुष्य का रूप धारण किया है और सड़कों पर हमारे बीच घूमते हैं। आपको पता नहीं चलता है कि वे कौन हैं। कुछ छिप गए हैं और बाहर नहीं

निकलते हैं। लेकिन उनकी संख्या अब कम है, बहुत कम। अतीत में वे छिप सकते थे, और उनकी उड़न तश्तरियाँ उड़कर दूसरे आयाम में जा सकती थीं। लेकिन अन्य आयामों का सुधार कर दिया गया है। विशाल *गोंग* यहां तेजी से उभर रहा है और वे अब छिप नहीं सकते। वे केवल इस आयाम में किसी गुफा या समुद्र के तल में छिप सकते हैं। फिर भी, वे छिपे नहीं रह सकते। वैसे भी, यह उनकी समस्या है। इस परिस्थिति में सभी जीव अपना स्थान बना रहे हैं।

प्रश्न: साधारण लोगों के समाज का विज्ञान गलत है, इसलिए क्या हम साधारण मानव ज्ञान को सीखे बिना सीधे साधना में प्रवेश कर सकते हैं?

गुरु जी : दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाये तो, हम अभी भी अपने ज्ञान को [विज्ञान का अध्ययन करके] बढ़ा सकते हैं। जब मैं फा सिखाता हूं, तो मैं फा को समझाने के लिए आधुनिक लोगों की अवधारणाओं का उपयोग करता हूं जिससे लोग समझ सकें। ज्ञान आपके मस्तिष्क को खोल सकता है, इसलिए यह फा प्राप्त करने के लिए सहायक बन जाता है। यदि किसी व्यक्ति का शैक्षणिक स्तर वास्तव में कम है, तो उसके लिए मेरे द्वारा उपयोग की जाने वाली आधुनिक शब्दावली को समझना कठिन होगा। लेकिन ऐसा नहीं है कि इसके बिना चल नहीं सकता। यदि संस्कृति इस प्रकार नहीं होती—जो विज्ञान के द्वारा लायी गयी है—मैं आज जिस तरह शिक्षा प्रदान कर रहा हूँ उसके स्थान पर किसी प्राचीन भाषा के साथ फा को सिखा सकता था। फिर भी, समाज ऐसा बन गया है, इसलिए आपका साधारण लोगों के समाज के साथ अनुरूप होना ठीक है। अभी के लिए यह केवल इस तरह से हो सकता है। चाहे आप वयस्क हों या बच्चे, मुझे लगता है कि आपको एक साधक के रूप में, आपकी जो भी परिस्तिथि है उसमें सब कुछ अच्छा करना चाहिए। यदि आप एक छात्र हैं, तो अपनी स्कूली शिक्षा अच्छी तरह से करें; यदि आप काम करते हैं, तो अपना काम अच्छे से करें। यदि आप कुछ विशेष दृष्टिकोण का सृजन करते हैं, तो आपकी साधना का मार्ग साथ-साथ बदल सकता है और आपके जीवन और साधना में कठिनाईयां ला सकता है। आपको पता होना चाहिए कि यद्यपि परग्रही प्राणी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने विज्ञान को मानवजाति तक ले आए हैं, दिव्य सभी चीजों के प्रभारी हैं और बदले में उनका उपयोग कर रहे हैं।

प्रश्न: क्या हमें साधना के लिए अधिक समय और साधारण लोगों के बीच अपने काम पर कम समय देना चाहिए?

गुरु जी : ऐसी बात नहीं है। साधारण लोगों को दी गयी काम की अवधि के भीतर आपको अपना काम पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए। मुझे लगता है कि आप चाहे कितने भी व्यस्त हों, आपके पास अभ्यास करने और पुस्तक पढ़ने का समय होगा। ऐसा ही है। मुझे लगता है कि आपको एक परिश्रमी शिष्य की भांति, आपके खाली समय का उपयोग साधना करने के लिए आपके मन में इच्छा होनी चाहिए।

प्रश्न: क्या हमें साधना करने के लिए जटिल वातावरण को जानबूझकर खोजने की आवश्यकता है?

गुरु जी : यह आवश्यक नहीं है। आप हमेशा अपनी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर सकते हैं, न ही अपने लिए अपनी साधना की व्यवस्था कर सकते हैं। अपने मन से अपनी इच्छा के अनुसार यह या वह न करें—आपका मार्ग मेरे द्वारा व्यवस्थित किया गया है। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो यह बस इस प्रकार ही है। बस वही करें जो आपको करना चाहिए। चीन में कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने

अभ्यास शुरू करने के बाद अचानक अपने पहनावे पर ध्यान देना छोड़ दिया। यह बिना कहे समझना चाहिए कि एक व्यक्ति को ढंग के कपड़े पहनने चाहिए और साफ़ सुथरे ढंग से तैयार होना चाहिए, जिस तरह एक मनुष्य को रहना चाहिए। लेकिन वे मैले और बेढंगे हो गए हैं, लगभग निर्लज्ज होने की सीमा तक। यह अस्वीकार्य है। [जिस तरह से हम अभी साधना करते हैं] वह झांग सैनफेंग[6] के वर्षों पूर्व की ताओ की साधना की तरह नहीं है। आप साधारण लोगों के समाज में साधना कर रहे हैं। कम से कम आपको एक सभ्य मनुष्य की तरह दिखना चाहिए। दिव्य मानवजाति से उच्च होते हैं और उन्हें और भी बेहतर आचरण करना चाहिए—उन्हें हर कार्य में बेहतर आचरण करने की आवश्यकता है। सुनिश्चित करें कि कुछ भी अनदेखा न करें और एक बार जब आप फालुन गोंग का अभ्यास शुरू करते हैं, तब आप मैले-कुचैले, बेहूदा और भद्दे न बनें—यह अस्वीकार्य है। एक तरह से, आप दाफा की छवि को क्षति पहुंचा रहे हैं। क्या यह ऐसा नहीं है? तो इस सम्मेलन के लिए मैंने सभी को बताया था और प्रभारी व्यक्तियों को सूचित किया कि सभी को बड़े साफ़-सुथरे कपड़े पहनने चाहिए और औरों को बेढंगा नहीं दिखना चाहिए, ठीक है? चीनी अर्थव्यवस्था इन वर्षों में अच्छी रही है, इसलिए यह वास्तव में किसी के लिए कोई समस्या नहीं है कि एक सभ्य पहनावा [खरीदें और] पहने। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आपको महंगे कपड़े पहनने हैं, लेकिन कम से कम, थोड़े से साफ-सुथरे होकर ढंग के कपड़े पहनें। याद रखें, हम साधारण लोगों के समाज में साधना कर रहे हैं। यह एक समस्या नहीं होनी चाहिए। इसलिए, जहाँ तक साधना की बात है, आपको अपने लिए साधना के परिवेश की व्यवस्था नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न: चार साल के बच्चे की तीसरी आँख खुल गई है और वह फालुन और गुरु जी के नाम को प्रकाश उत्सर्जित करते हुए देख सकता है। लेकिन कभी-कभी वह हठीला हो जाता है, और यदि बड़े उसकी बात नहीं मानते हैं तो वह रोता है और तमाशा खड़ा करता है। यह उत्तेजना मुझे परेशान करती है।

गुरु जी : "यह उत्तेजना मुझे परेशान करती है।" क्या आपने अभी इसे इंगित नहीं किया है? आप परेशान हैं, और यदि आप परेशान हैं, तो आपका मन व्याकुल हो गया है। क्या बच्चा आपका सुधार करने में सहायता नहीं कर रहा हैं?

प्रश्न: जब यह दो साल की बच्ची फालुन देखती है, तो वह उत्साह से कहती है, "फालुन।" जब वह गुरु जी की तस्वीर देखती है, तो वह कहती है, "गुरु जी।" वह अक्सर अपने हाथों को हशी स्थिति में रखकर जमीन पर बैठती है, और कहती है, "अभ्यास करो।" कभी-कभी जब हम गुरु जी के ऑडियोटैप लगाते हैं, तो वह कहती है, "गुरु जी को सुनो।"

गुरु जी : फिर यह बच्ची वास्तव में विशेष है, क्योंकि वह केवल दो साल की है। इस तरह के बच्चे शायद फा प्राप्त करने के लिए आए हैं। हमारे चार से पांच साल के बच्चे और पांच से छह साल के छोटे शिष्य, छोटे छात्र, ऐसे बहुत से हैं, जिन्होंने अच्छी साधना की है। वे वास्तव में अद्भुत हैं। उनमें से कुछ के पास काफी असाधारण क्षमताएं हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं। ऊपर दिव्य स्पष्ट रूप से देखते हैं कि भविष्य में किस परिवार को फा प्राप्त होगा: "ओह, यह परिवार फा प्राप्त करेगा।" हो सकता है कि वे वहीँ पर पुनर्जन्म की व्यवस्था करें, क्योंकि वे फा को इस तरह प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न: क्या अस्पतालों में अन्य स्थानों की तुलना में अधिक कर्म होते हैं?

गुरु जी : साधारण लोगों के समाज में अस्पताल एक ऐसा संस्थान है जो रोगों का इलाज करता है, और ऐसा लगता है कि रोगजनक ची थोडी अधिक होती है। लेकिन फिर, आप एक साधक हो कर भी क्या डरते हैं? इसका हमारे साधकों से कोई लेना-देना नहीं है। वे चीजें हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकती हैं।

प्रश्न: क्या अस्पताल में शव परीक्षण करने से [दाफा] साधकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है?

गुरु जी : यदि यह आपका पेशा है, तो बस करते रहें। वे लोग मृत है इसलिए कोई समस्या नहीं है। हमें चाहिए कि साधना में आप समाज में जहाँ तक हो सके साधारण लोगों के अनुरूप रहें। अब जब आप साधना करने लगे हैं तो साधारण लोगों के समाज के तरीकों में बदलाव न करें। ऐसा नहीं चलेगा।

प्रश्न: यदि कोई व्यक्ति मौखिक रूप से नहीं बल्कि अपने मन में भला बुरा सोचता है, तो क्या यह व्यक्ति पुण्य खो देगा?

गुरु जी : कुछ लोग कहते हैं, "मैंने बहुत अच्छी तरह से साधना की है और अपने आप को बहुत अच्छी तरह से संचालित किया है," लेकिन उनके मन में मोहभाव बिलकुल भी कम नहीं हुए हैं। क्या उसकी साधना के रूप में गिनती की जा सकती है? क्या वह ढोंग नहीं है? इसलिए केवल मौलिक परिवर्तन ही सच्चा परिवर्तन हैं। सतह पर जो है सब दिखावा है। आप मौखिक रूप से भला बुरा बोलें या नहीं यह केवल एक औपचारिकता ही है। आपका मन और मस्तिष्क बदला है या नहीं यही वास्तविक है। यदि आप अपने मन में भला बुरा कहते हैं, तो निश्चित रूप से आपका मन नहीं बदला है। आप पुण्य खोते हैं या नहीं, यह गौण है। दाफा को साधारण लोगों के पुण्य को संरक्षित करने के लिए नहीं सिखाया जा रहा है।

प्रश्न: कुछ छात्र जहरीले जानवरों और अन्य प्राणियों से डरते हैं। यदि इस डर को छोड़ा नहीं जाता है, तो क्या वे फल पदवी तक पहुँच सकते हैं?

गुरु जी : वो दो अलग चीजें हैं। बस डर के मोहभाव से छुटकारा पाएं और सब ठीक हो जाएगा। आप में से बहुत से लोग उनसे डरते नहीं हैं, लेकिन उन चीजों को नापसंद करते हैं क्योंकि वे गंदे हैं। यह मलमूत्र को देखकर किसी व्यक्ति को जिस तरह की गंदगी महसूस होती है, वैसी नहीं है, बल्कि यह उस तरह की गंदगी अनुभव करता है, जब वह सोचता है कि वह चीज़ें बुरी हैं। भविष्य की दुनिया में, भविष्य के ब्रह्मांड में, ऐसे जीवों का अस्तित्व नहीं होगा। मैं आपको बता दूं कि शुरूआत में ब्रह्मांड में वे जहरीली, दुष्ट चीजें नहीं थीं। वे बाद में क्यों उभरे? क्योंकि जीवों का बुरा कर्म अधिक, और अधिक बढ़ता गया, जीव बद से बदतर हो गए, और ब्रह्मांड अधिक, और अधिक अशुद्ध होता गया। इसलिए अधिक, और अधिक बुरी चीजें सामने आईं, और धीरे-धीरे वे अधिक, और अधिक जहरीली हो गईं। यह इस प्रकार विकसित हुआ।

प्रश्न: शास्त्र [1] "ज्ञानोदय" में कहा गया है, "जोड़ी पर जोड़ी लगातार आती है (लिआंग लियांग शियांग जि अर लाइ)।" हमें "जोड़ी पर जोड़ी (लियांग लियांग)" को क्या समझना चाहिए?

गुरु जी : यह प्राचीन चीनी वाक्य रचना है। प्राचीन चीनी वाक्यविन्यास चीजों को स्पष्ट रूप से समझा सकता है। भाषा संक्षिप्त होती है, फिर भी इसका जो अर्थ अभिव्यक्त होता है वह गहरा होता है

[1] जैसा कि इस संदर्भ में उपयोग किया गया है, यह शब्द मास्टर ली द्वारा लिखे गए लेखों को संदर्भित करता है।

और इसके निहित अर्थ व्यापक होते हैं। यह सबसे अच्छी लिखित भाषा है। अतीत में, लोग कहते थे कि यह दिव्य भाषा है, दिव्यों की लिखित भाषा। आजकल, मनुष्य की नैतिकता भ्रष्ट हो चुकी है और अब अच्छी नहीं रही है, इसलिए ग्राम्य भाषा का उपयोग किया जाता है। यदि यह "जोड़ी पर जोड़ी लगातार आती है" को समझाना है, तो इसका अर्थ है: एक समूह में तीन, दो एक साथ; एक बार जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ इस पर चर्चा करता है, यह कहते हए कि, "यह फा बहुत अच्छा है, चलो साधना करते हैं," तो वह दूसरा व्यक्ति भी यह सोचेगा कि यह बहुत अच्छा है, इसलिए वह भी साथ आएगा। फिर वह भी अपने परिवार के सदस्यों को बताएगा और उन्हें भी साथ लाएगा, और लोग जोड़ी और तिकड़ी में जुड़ जाएंगे। हमारे वर्तमान के ग्रामीण भाषा का उपयोग करते हुए, मुझे बहुत सारे शब्दों का उपयोग करना पड़ा। "*लिआंग लियांग शियांग जि* (जोड़ी पर जोड़ी लगातार)" आती है, सब कुछ केवल चार शब्दों में समाहित है। इसका यही अर्थ है। "*शियांग जि* (एक के बाद एक)," का अर्थ है भिन्न-भिन्न समय पर आना, एक के बाद एक, बार-बार, लगातार। *शियांग जि* को समझाने के लिए भी बहुत सारे शब्द लगते हैं।

प्रश्न: क्या दाफा शिष्य जो पुस्तकों और पत्रिकाओं का कारोबार करते हैं वे दाफा पुस्तकें थोक मूल्य पर खरीदकर उन्हें खुदरा मूल्य पर बेच सकते हैं?

गुरु जी : कुछ समय पहले, मैंने स्वयं कुछ सोचा था। क्योंकि हाल ही में चीन में बहुत से कर्मियों को अपना काम छोड़ना पड़ा (वास्तव में, वे बेरोजगार हो गए) और उनमें से छोटी संख्या हमारे कुछ छात्र थे, मैंने इस विषय में सोचा कि क्या उन्हें फालुन दाफा पुस्तकें बेचने की अनुमति दी जाए। इस तरह, न केवल वे एक आजीविका बना सकते थे, बल्कि छात्रों की पुस्तकें खरीदने की कठिनाई को भी कम कर सकते थे। और कुछ छात्रों ने ऐसा किया है। बाद में, मैंने इसके बारे में और ध्यान से सोचा और यह उचित नहीं लगा। यह किस तरह से अनुचित था? इसके बारे में सब कोई सोचें : दाफा—एक इतना पवित्र महान मार्ग—हमें बचा सकता है, फिर भी हम इसका उपयोग पैसे बनाने के लिए कर रहे हैं। हम स्वयं को किस स्तर पर रखेंगे? हम दाफा को किस स्तर पर रखेंगे? यह वास्तव में नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए मैंने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। यह फिर समाज में [साधारण लोगों द्वारा] क्यों किया जा सकता है? क्योंकि मैं फा को फैलाने के लिए साधारण लोगों के समाज का उपयोग कर रहा हूं। साधारण लोगों का समाज भी सबसे निचले स्तर पर फा का एक प्रकट रूप है, इसलिए इसके विभिन्न व्यापारों और व्यवसायों का अस्तित्व बस ऐसे ही होता है, जो अनुचित नहीं है। यदि हमारी पुस्तक के पीछे छिपे आयाम नहीं होते और यह केवल सफ़ेद पन्नों पर काली स्याही होती, तो यह केवल एक पुस्तक होती। क्योंकि इसके पीछे छिपे इसके आयाम हैं इसलिए इसमें फा का प्रभाव है। साधारण लोगों के समाज में पुस्तकों के विक्रेताओं और पुस्तकों के वितरकों के लिए कोई समस्या नहीं है; यह साधारण लोगों के समाज के स्तर पर फा के अनुरूप है। लेकिन हमारे शिष्यों के लिए, जिस तरह की समस्या का मैंने वर्णन किया है, वह वास्तव में ऐसा ही है। यदि हमने पैसे बनाने के लिए फा का उपयोग किया, और क्योंकि पुस्तकें खरीदने वाले अधिकतर लोग हमारे शिष्य हैं, तो हम उस पैसे को कैसे खर्च कर सकते हैं?

यदि आप स्वयं एक पुस्तकों की दुकान के मालिक हैं और दाफा पुस्तकों को बेचने के लिए उस सुविधाजनक परिस्थिति का उपयोग करते हैं, और यदि पुस्तकों की दुकान विशेष रूप से दाफा के लिए स्थापित नहीं है और आप पहले से ही पुस्तकों की दुकान के मालिक हैं, तो मुझे आपके ऐसा करने से

कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि आखिरकार आप पहले से ही पुस्तकों का व्यापार कर रहे थे। जो कहा वह तो ठीक है लेकिन, मुझे लगता है कि जैसे-जैसे आपकी फा की समझ गहरी होती जाएगी, आप इसे एक नए ढंग से संभाल पाएंगे।

प्रश्न: मैंने गुरु जी से मिलने के लिए किसी पर ध्यान नहीं दिया और अपने परिवार के सदस्यों की उपेक्षा की। क्या वह उचित था या अनुचित ?

गुरु जी : यदि आप मुख्यभूमि चीन से आए हैं, तो यह संभव है कि आपको आने की अनुमति नहीं मिली होगी। या, यह भी संभव है कि मेरे सिधान्त शरीर नहीं चाहते थे कि आप आएं और आपका ध्यान साधना पर रखने का प्रयत्न कर रहे थे। यदि आप मुख्यभूमि चीन से नहीं हैं, तो हो सकता है कि आपकी ओर से अन्य कारण हो। शायद यह देखना था कि क्या आप दृढ़ हैं या नहीं। कुछ भी संभव है। आपको स्वयं इसका पता लगाना होगा।

प्रश्न: मुझे पता है कि मुझे साधना करने के लिए समय का अच्छा उपयोग करने की आवश्यकता है, लेकिन मैं बच्चे भी पैदा करना चाहता हूं। क्या यह एक मोहभाव के रूप में माना जाएगा ?

गुरु जी : हमने कहा है कि जहाँ तक संभव है हमें साधारण लोगों के अनुरूप रहते हुए साधना करनी चाहिए। अब दसियों लाख युवा शिष्य हैं जो साधना करते हैं। यदि उनमें से कोई भी शादी नहीं करता है और उनके बच्चे नहीं होते, तो क्या यह साधारण लोगों के समाज को हानि पहुंचाने का एक रूप नहीं होगा? मैं आपको बताना चाहूँगा कि कम से कम आप अपनी साधना में साधारण लोगों के समाज के अनुरूप नहीं होंगे। फिर, कुछ लोग कहते हैं, "इस जन्म में, मैं बस शादी नहीं करना चाहता। मैंने अपना मन बना लिया है।" मैं उसके भी विरुद्ध नहीं हूँ। आप उस तरह से साधना कर सकते हैं। जब तक की यह आपके जीवन में या अन्य विषयों में किसी भी अतिरिक्त बोझ या समस्याओं का कारण नहीं बनता है, तब तक मैं इसके बारे में कुछ नहीं करूँगा। मानव जगत की बातें आपके स्वयं द्वारा तय की जाती हैं और निभाई जाती हैं। यदि आप कह रहे हैं कि बच्चे होने से किसी व्यक्ति की साधना प्रभावित होगी, तो मुझे नहीं लगता कि यह ऐसा है। ऐसा नहीं होगा।

प्रश्न: फल पदवी के क्या स्वरूप हैं? क्या उन सभी को अपने साथ बनती ले जाने की आवश्यकता है?

गुरु जी : मैंने इस पर चर्चा की है। केवल फालुन दिव्यलोक में जाने वाले लोग ही शरीर साथ ले जाते हैं। उन लोगों की बात करें तो, जो अन्य स्थानों पर जा रहे हैं, क्योंकि आप में से कई लोग विभिन्न स्तरों और विभिन्न स्थानों से फा प्राप्त करने के लिए आए हैं, वहां के जीवों के दृष्टिकोण से, यदि आप अपने शरीर को वापस ले जाना चाहते हैं, तो वहां के दिव्य और बुद्ध सोचेंगे की आप अपने साथ किस तरह की अजीब और विचित्र चीज वापस ले आये हैं। इसलिए निश्चित रूप से वहाँ उनका शरीर नहीं होता है और वे उन्हें नहीं चाहते हैं। यदि उस चीज को यहाँ से ले जाया जाये तो यह उनकी संपूर्ण साधना प्रणाली को बाधित करेगा। कृपया ध्यान दें कि आप चाहे जहां से आए हों, मैं केवल आपकी मूल चीजों को नए और सबसे पवित्र फा के साथ आत्मसात कर रहा हूं। जब आपकी साधना की सतही चीजों की बात आती है, तो मैं उनमें से किसी को भी नहीं छूता हूं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आप अपने मूल स्थान पर लौट पाएंगे। दूसरे शब्दों में, यदि आप बुद्ध थे, तो आप बुद्ध रहेंगे; यदि आप एक ताओ थे, तो आप एक ताओ रहेंगे; और यदि आप एक दिव्य थे, तो आप एक दिव्य रहेंगे। आपका स्वरूप और

आपके पास पहले जो कुछ भी था उसमें परिवर्तन नहीं होगा। जिन लोगों की पहले से फल पदवी नहीं थी, वे इस साधना के दौर से गुजरने के बाद प्राप्त कर सकते हैं, और फिर जहाँ भी आप जाने वाले थे, वहाँ जाने के लिए आपके लिए यह व्यवस्था की जाएगी।

प्रश्न: जब भी मैं व्यायाम करता हूं, मैं हमेशा एक ही, गैर-दाफा संगीत सुनता हूं। मुझे चिंता है कि यह अन्य आयामों के संदेशों[2] द्वारा हस्तक्षेप है।

गुरु जी : अन्य आयामों के संगीत हमारी साधना के संगीत से अलग हैं। लेकिन अन्य आयामों में भी वास्तव में सुंदर संगीत होता है। यदि आपको यह सुनाई दे, तो कोई बात नहीं—इसके बारे में चिंतित न हों। वे अन्य आयामों की ध्वनियाँ हैं। और चिंता मत करो: संगीत स्वयं साधना का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। जब आप दाफा में साधना कर रहे हैं तो मैं आपको इस संगीत के साथ व्यायाम करने को कहता हूं। इसका उद्देश्य यह है कि हजारों विचारों को एक विचार में बदल दिया जाए, जब तक कि आपका मन किसी शांत स्थिति में नहीं पहुंच जाता। कहने का अर्थ है, जब आप संगीत सुनते हैं, तो आपका मन यहाँ वहां नहीं भटकेगा, बस केवल संगीत सुनेगा। यह आपके व्यायाम करने में सहायता करता है। लेकिन आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाला संगीत हमारे अभ्यास करने वाला संगीत होना चाहिए।

प्रश्न: मेरे शरीर में एक प्रकार का व्यवधान आया है, जिसमें शब्द और चित्र सम्मिलित हैं। आधा वर्ष हो चुका है और मैं इससे उबर नहीं पाया हूं।

गुरु जी : यदि आप एक सच्चे साधक हैं, तो कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका आशय क्या था जब आपने शुरू में दाफा अपनाया था, आपको इसे जाने देना चाहिए और किसी भी चीज़ से चिंतित नहीं होना चाहिए। आपको स्पष्ट होना चाहिए कि आप किसी समस्या को हल करने के लिए साधना करने नहीं आए थे। इस फा को फैलाने का मेरा उद्देश्य लोगों को बचाना, लोगों को साधना करने में सक्षम बनाना और लोगों को वापस लौटने में सक्षम बनाना है। यह साधारण मानव शरीरों की कुछ समस्याओं को हल करने के लिए नहीं है। यह एक गंभीर बात है। आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप स्वयं वास्तव में साधना कर रहे हैं, और फिर आपके लिए किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है। लेकिन यदि आप केवल कुछ साधारण मानवीय समस्याओं को हल करना चाहते हैं, तो हम आपके लिए उनमें से किसी को भी हल नहीं कर सकते। एक वाक्य में कहें तो : फा साधना के लिए है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग जानते हैं कि फालुन गोंग का उद्देश्य उपचार करना नहीं है, इसलिए वे सोचते हैं: "फिर मैं ठीक होने के लिए यह नहीं करूँगा। मैं समझता हूं कि इसका उद्देश्य मेरे रोगों को ठीक करना नहीं है, और मैं उपचार का उल्लेख नहीं करूँगा। मैं उपचार की भी मांग नहीं करूँगा।" फिर भी उनके मन में वे अभी भी सोचते हैं, "जब तक मैं अभ्यास करता हूं, गुरु जी निश्चित ही मेरे रोगों को दूर करेंगे।" आप देखिए, उनके मन में अभी भी यही विचार चल रहा है, "जब तक मैं अभ्यास करता रहूँगा, गुरु जी मेरे रोगों को दूर कर देंगे।" वह थोडा सा विचार अभी भी है, उनके मन की गहराई में दबा हुआ। वे अब भी चाहते हैं कि मैं उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान करूँ, जिसका अर्थ है, वे अभी भी अपने रोगों से जुड़े हुए हैं। यदि वे वास्तव में उन्हें छोड़ देते हैं, उनके बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचते है, और उनकी परवाह नहीं करते हैं, फिर देखें क्या होता है। इसे "पीछा किए बिना स्वाभाविक रूप से

[2] यह शब्द, जैसा कि *चीगोंग* समूहों में उपयोग किया जाता है, कुछ अमूर्त प्रकार की ऊर्जा, प्रभावों या सूचनाओं को संदर्भित करता है जो संचारित हो सकती हैं।

प्राप्त करना" कहा जाता है। सभी साधना मार्ग और पद्धतियाँ इसी तरह काम करती हैं। साधारण लोगों के समाज में आप जो कुछ भी चाहते हैं, उसे पूरे प्रयास के साथ पीछे पड़ कर प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन अन्य आयामों के सिद्धांत इसके बिलकुल विपरीत हैं, वे उलटे हैं। जब आप कुछ पाने या कुछ करने का पूरा प्रयत्न करते हैं, मोहभावों के साथ, तो आपको कुछ भी नहीं मिलेगा। आप इसे केवल तभी प्राप्त कर सकते हैं जब आप अधिक जाने देते और इससे कम चिंतित होते हैं। तो इसे "स्वाभाविक रूप से पीछा किए बिना प्राप्त करना" कहा जाता है।

प्रश्न: जब सिंगापुर सम्मेलन में गुरु जी वृहस्थ हस्त मुद्राएँ कर रहे थे, तो कुछ लोगों ने सहज अनुभव किया, कुछ लोगों को लगा कि मुद्राएँ अद्भुत थीं, और कुछ लोगों का मन भर आया और दुखद अनुभव किया , और रोने लगे। क्या यह साधना के स्तर से संबंधित था?

गुरु जी : लगभग—वह मूल रूप से सही है। प्रत्येक व्यक्ति की भावना और समझ अलग होती है।

प्रश्न: साधना में फल पदवी तक पहुँचने के लिए, सभी को बिना किसी स्वार्थ और अहंकार के स्तर तक पहुंचना होगा। फिर भिन्न-भिन्न स्तर [जिन पर लोग फल पदवी प्राप्त करते हैं] क्यों हैं?

गुरु जी : मैं इसे इस तरह कहूँगा। एक व्यक्ति प्रारंभिक स्तर पर अर्हत प्राप्ति की पदवी पर भी फल पदवी प्राप्त कर सकता है; आत्म-मुक्ति प्राप्त करना पर्याप्त है। सभी जीवों को बचाने के बारे में सोचने की आवश्यक नहीं है, और एक व्यक्ति को दूसरों की देखभाल करने के बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है—साधक को केवल स्वयं [मुक्ति प्राप्त करने] की ओर प्रयास करने और इसे प्राप्त करने की आवश्यकता है। यह प्रारंभिक स्तर की अर्हत प्राप्ति स्थिति है। यदि आप बोधिसत्व प्राप्ति की स्थिति प्राप्त करना चाहते हैं—भले ही यह प्रारंभिक बोधिसत्व प्राप्ति की स्थिति हो—तो आपको साधना करने के साथ-साथ हृदय में महान करुणा पैदा करने और विकसित करने की आवश्यकता है, और आत्म-मुक्ति प्राप्त करने के साथ-साथ आपको दूसरों की भी मुक्ति प्राप्त करने में सहायता करनी होगी। चाहे आप इसे पूरा कर सकते हैं या नहीं, आपके पास वह करुणा होगी, सभी जीवों को वास्तव में पीड़ित के रूप में देखेंगे, और उन्हें देखते ही आँसू बहाएँगे। यह ढोंग नहीं है—यह वास्तविक है। यह कुछ ऐसा नहीं है जो आप चाहते हैं की हो। वास्तव में, साधना में ऐसी अवस्था हमेशा नहीं होती रहेगी, लेकिन यह घटित होगी। यदि आप साधना करके बुद्ध बने तो आपकी करुणा अलग होगी। आप निश्चित रूप से जीवों को देखकर बोधिसत्व की तरह आंसू नहीं बहाएँगे। आप में करुणा होगी, अधिक स्पष्ट रूप से जीवों के बीच के कर्म सम्बन्ध को समझेंगे, और सब कुछ अधिक विवेक के साथ देखेंगे। जब बुद्ध जिन्होंने एक तथागत की तुलना में और उच्च स्तर तक साधना की है, इसे रुककर देखते हैं, तो वे सोचते हैं, "यह किस तरह की करुणा है?" उन्हें लगता है कि साधारण मनुष्यों के प्रति बुद्ध की करुणा भी एक मोहभाव है। वे केवल उन दिव्यों, बुद्धों, और जीवों के प्रति करुणामयी हो सकते हैं जो उनसे निचले स्तर के बुद्धों के दिव्यलोक में रहते हैं, लेकिन उन्हें मनुष्य के प्रति कोई करुणा नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे करुणामयी नहीं हैं, बल्कि, उनके स्तर बहुत उच्च हैं। उनके लिए, यहाँ के जीव इतने तुच्छ हैं कि वे सूक्ष्मजीवों से भी निम्न लगते हैं। उन्हें नहीं लगता कि वे अपूर्ण मनुष्य किसी भी प्रकार के उपयोगी जीवन रूप हैं। जब बुद्ध जो और भी उच्च स्तर तक पहुँच गए हैं, वे पीछे मुड़कर देखते हैं, तो वे सोचते हैं: "ओह, ये तथागत बुद्ध भी साधारण लोग हैं; वे लोग वहां क्या कर रहे हैं?" मनुष्य उन्हें कैसे प्रतीत होते होंगे? मनुष्य कुछ भी नहीं है; वे बेहद छोटे सूक्ष्मजीवों की तरह गंदगी में इधर-उधर रेंगते हैं। फिर उन बुद्धों का क्या जो उच्च से भी और उच्चतर उच्चतर स्तर पर हैं? यदि

आप उस अवस्था को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको उस स्तर की साधना करनी होगी। मैं आपको केवल एक सरल समझ बता रहा हूं कि यह कैसे होता है। यह केवल यहाँ तक सीमित नहीं है।

वास्तविक फा को मानवजाती के सामने प्रकट नहीं किया जा सकता है, क्योंकि आपका मन अभी भी मानवीय है। भिन्न-भिन्न लोकों में रहने वाले जीवों का अस्तित्व भिन्न होता है। इसके अतिरिक्त, इस ओर के जीवों के भौतिक शरीर लगातार बदल रहे हैं। यदि बुद्ध का शरीर परमाणुओं से बना है, तो उनसे उच्च बुद्धों के शरीर, और उन दिव्यों के शरीर जो बुद्धों से भी ऊंचे स्तर पर हैं, संभवतः न्यूट्रॉन के जैसे कणों से बने हो सकते हैं। इसके और ऊपर वे न्यूट्रिनो या क्वार्क से बने हो सकते हैं। और यह केवल इस सूक्ष्म स्तर पर है जिसे मानव पहचान सकता है। उनका क्या जो अधिक सूक्ष्म, और भी अधिक सूक्ष्म पदार्थ से बने होते हैं? उनकी ऊर्जा स्पष्ट रूप से अधिक है। किसी पदार्थ के कण जितने छोटे होंगे, उसका घनत्व उतना ही अधिक होगा। इस प्रकार उनके स्वरुप अत्यंत महीन और चमकीले होते हैं। हम मानव शरीर पर छिद्र देख सकते हैं, लेकिन यदि आप किसी दिव्य के शरीर को देखेंगे, तो कोई छिद्र नहीं होते। यदि आप तीनों लोकों में उन जीवों को देखते हैं जो मनुष्यों की तुलना में एक स्तर अधिक उच्च हैं—अर्थात्, तीनों लोकों के भीतर विभिन्न स्तरों पर जो दिव्य प्राणी हैं—आप देखेंगे कि मानव दृष्टि से, उनके शरीर एक समान, उत्कृष्ट, और बस अद्भुत प्रतीत होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके कण सांसारिक जगत के मनुष्यों की तुलना में छोटे और सघन हैं। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे एक जीव निरंतर ऊपर की ओर बढ़ता जाता है, सतह का संपूर्ण रूप अग्रानुक्रम ढंग से ऊंचा होता जाता है; लेकिन स्तरों की ऊंचाई एक आवश्यकता है। विभिन्न क्षेत्रों में फल पदवी प्राप्त की जा सकती है। चाहे आप अपनी साधना में किसी भी स्तर पर पहुंचें, आपके स्तर से नीचे जो है वह अब एक रहस्य नहीं रहेगा। आपके निचले स्तर का सब कुछ आपकी आंखों के समक्ष प्रदर्शित किया जाएगा, और आप चीजों को देख पाएंगे जैसे वे वास्तव में हैं। लेकिन आपके स्तर से जो भी ऊपर है वह हमेशा के लिए एक रहस्य बना रहेगा, आप कभी भी उनके बारे में नहीं जान पाएंगे, क्योंकि [आप जहां हैं] उसी स्तर की ज्ञान प्राप्ति आपको हुई है। आपको उतना ही मिलेगा जितना आपने परिश्रम और साधना की है।

प्रश्न: मुझे यह स्पष्ट है कि साधना एक गंभीर चीज है। दूसरी ओर, क्या कठिनाई में खुशी पाना और खुशी-खुशी साधना करना गलत है?

गुरु जी : यह गलत नहीं है। यदि आप अपनी साधना में हर समय खुश रह सकते हैं, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपको क्या समस्या है, तो मैं कहता हूं कि आप वास्तव में उल्लेखनीय हैं। हर कोई वास्तव में आपकी प्रशंसा करेगा और आपका सम्मान करेगा, क्योंकि कि आपने जो वर्णित किया है ऐसा करना कठिन है। किसी भी कठिनाई का सामना करने और परिस्थितियों का खुशी से सामना करने के लिए अपने मन को स्थिर रखना कठिन है। लेकिन हर समय एक आशावादी मनोवृत्ति और करुणामयी हृदय बनाए रखने में सक्षम होना—तब भी जब हमारे सामने परेशानियां या परीक्षण नहीं आते हैं—यही एक साधक को साधारण रूप से करना चाहिए। यही मन की सबसे अच्छी स्थिति है।

प्रश्न: क्या साधकों के विवाह में यौन संबंध हो सकते हैं?

गुरु जी : हमने कहा है कि आप साधारण लोगों के बीच साधना कर रहे हैं और वैसे शिष्य नहीं हैं जिन्होंने सांसारिक जगत को छोड़ कर स्वयं को साधना के लिए समर्पित कर दिया है। इसलिए आपके

जीने के तरीके को साधारण लोगों के तरीकों के अनुरूप होना चाहिए। हम साधारण लोगों के बीच यहां पाए गए भौतिक रूपों को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं। ऐसा क्यों है? जो परिवर्तित हो रहा है वह मानव हृदय और मन है। यदि किसी व्यक्ति का हृदय और मन नहीं बदलता है, तो यह सब व्यर्थ है। यदि, समझो कि, आप उपरी तौर पर कुछ भी नहीं दिखा रहे है लेकिन आपके भीतर गहराई में आप चीजों को त्याग नहीं पा रहे हैं और इन [मानवीय] चीजों की बात करने पर आप बेचैन हो जाते हैं, यह व्यर्थ है। यदि आप कहते हैं, "भीतर से मैं उनसे जुड़ा हुआ नहीं हूं और मैं उन्हें केवल उन चीजों के रूप में देखता हूं जो हमें एक मानव स्थिति में रहने देता है," तो मैं कहूंगा कि आप बहुत अच्छा कर रहे हैं। वास्तव में, इन सभी चीजों को पीछे छोड़ दिया जाना चाहिए जब आप साधना में एक उच्च और गहरे स्तर तक पहुंचते हैं। इस अवधि के दौरान आप क्या करते हैं, इसे गलत नहीं माना जा सकता है। मैंने *ज़ुआन फालुन* में स्पष्ट रूप से चर्चा की है—मैंने इस स्थिति के विषय में बात की है।

आपको अपनी साधना के दौरान इस तरह से रहने की अनुमति क्यों दी गयी है? इसका कारण यह है कि, हमारा यह साधना का मार्ग, यह दाफा जिसे मैं आज सिखा रहा हूं, सोच-समझकर साधारण लोगों के जटिल समाज में लाया गया है, और केवल उसी तरह से उच्च स्तर के लोग वापस लौट सकते हैं। यदि साधारण लोगों का समाज पर्याप्त जटिल नहीं होता—अर्थात, यदि ऐसी बड़ी कठिन परीक्षाएं और व्यवधान आपके सामने नहीं आते—तो आप में से जो उच्च स्तर से आए हैं वे कभी वापस नहीं लौट सकते। क्योंकि फा महान है और साधारण लोगों के समाज में फैलाया जा रहा है, इसने आपको साधारण लोगों के समाज में रहने में सक्षम होने की सुविधा प्रदान की है। आपके शरीर का रूपांतरण सूक्ष्म स्तर से शुरू होता है, आपके अस्तित्व की उत्पत्ति से—मूल कण जो आपके अस्तित्व का सृजन करते हैं—और अंदर से बाहर की ओर फैलते हैं, जैसे कि पेड़ के छल्ले। जब तक आप साधना करते हैं, तब तक यह पेड़ के छल्लों की तरह बाहर की ओर विस्तृत होगा, और ऐसा तब तक होगा जब आप आदर्श तक पहुंचेंगे। जब यह सतह तक फैलता है, ठीक उसी तरह जैसे पेड़ के छल्ले छाल तक पहुँचते हैं, तब आपका परिवर्तन पूरा होगा और आप फल पदवी प्राप्त करेंगे। इससे पहले कि यह छाल तक पहुंचे, अर्थात, इससे पहले कि यह आपके भौतिक शरीर की सबसे बाहरी सतही परत तक पहुंचे, आपके भौतिक शरीर में सतह पर अभी भी साधारण मनुष्यों की तरह विचार होंगे और आपको अनेक साधारण मानवीय इच्छाएं अवश्य होंगी, वासना, भावनाएं, और अन्य सभी प्रकार के मोहभाव। वे विचार साधारण लोगों के विचारों की तरह प्रबल नहीं होंगे, लेकिन वे वहाँ होंगे, और वे उद्देश्यपूर्ण रूप से आपके लिए रखे गए हैं ताकि आप यह सुनिश्चित कर सकें कि आप साधना करते हुए साधारण मनुष्यों की व्यवस्था के अनुरूप हो सकें। हालाँकि, जिस भाग की साधना पूरी हो चुकी है, इसे मानव के सतही शरीर द्वारा साधारण मानवीय मामलों से संलिप्त नहीं होने दिया जाएगा। जैसे ही वह पक्ष जिसकी साधना आपने पूरी कर ली है, आदर्श पूरा करते ही, उसे पृथक कर दिया जाता है।

इसके हमसे अलग होने का क्या लाभ? कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस ओर मानवीय सतह साधारण लोगों के बीच किन गतिविधियों में व्यस्त रहती है, चाहे वो कुछ भी करती रहे, जिस पक्ष की साधना पूरी हो चुकी है, वह वहीं बैठा रहता है और बिल्कुल भी नहीं हिलता है; इसकी कोई मानसिक गतिविधियां या विचार नहीं होते हैं। वह शरीर हिलता नहीं है और किसी भी गतिविधियों में भाग नहीं लेता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि जब व्यक्ति मानवीय चीजों को कर रहा होता है तो उनका दिव्य पक्ष उन्हें नहीं करता है, और यह मानवीय पक्ष है—जिसकी पूरी तरह से साधना नहीं हुई है—जो

उन चीजों को करता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि आप केवल ऊपर की ओर बढ़ते रहेंगे, और नीचे नहीं गिरेंगे, जैसे-जैसे आप स्वयं को सुधारते हैं। इसके स्थान पर, यदि, हमने सतह से परिवर्तन शुरू करने और गहराई की ओर जाना चुना होता, और साधारण लोगों के समाज में ऐसा किया होता, तो आप निश्चित रूप से उस समाज में साधना नहीं कर पाते। साधारण लोगों के बीच आप जो कुछ भी करते, वह ऐसे होता जैसे कोई दिव्य कर रहा है, क्योंकि एक परिवर्तित शरीर एक दिव्य के शरीर के समान होता है। तो यह माना जाता कि यह मानवीय चीजें कर रहा था, और आप बिलकुल साधना नहीं कर पाते। क्या दिव्यों को साधारण मानवीय चीजों को करने की अनुमति है? दिव्यों के लिए साधारण मानवीय भावनाओं का होना बिल्कुल निषिद्ध है। इसलिए हमने इसे उलट दिया : हम आपको बदलने की शुरुआत आपके जीवन की उत्पत्ति से करते हैं। इस तरह, यह सतह की ओर आगे-आगे बाहर की ओर विस्तार करता रहता है। फल पदवी प्राप्त करने से पहले आप ऐसे ही सतह के स्तर पर साधारण लोगों के बीच जीने के ढंग को बनाए रख सकते हैं। बस यह है कि आप अधिक से अधिक मोहभावों से मुक्त हो जाते हैं जब तक कि आप अंततः सब कुछ सहज रूप से लेने लगते हैं और सब कुछ छोड़ सकते हैं। आप तब फल पदवी के समीप होंगे। जब आपने संपूर्ण रूप से सतह तक सभी तरह से विस्तार कर लिया होगा, तब आप पूरी तरह से फल पदवी प्राप्त कर चुके होंगे। यह उस समय स्वाभाविक रूप से होगा और कोई भूकंप नहीं आएगा। अतीत में, किसी व्यक्ति का फल पदवी प्राप्त करना भूकंपीय कम्पन उत्पन्न करता था। जब एक व्यक्ति फल पदवी प्राप्त करता था, तब एक बड़े क्षेत्र में भूस्खलन, भूकंपीय समुद्री लहरें, और भूकंप होते थे। लेकिन हमारे फल पदवी का रूप भूकंपीय कम्पन उत्पन्न नहीं करता है। यह साधारण लोगों के समाज में अधिक लोगों की साधना करने के लिए उपयुक्त है, क्योंकि यह इसे प्रभावित नहीं करता है। इतने सारे लोग यदि एक साथ फल पदवी प्राप्त करते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि पृथ्वी इसे सहन कर पायेगी। इसलिए हमने साधारण लोगों के समाज में साधना करने के लिए हर एक पक्ष की व्यवस्था की है।

इससे पहले कि वह भाग जिसकी साधना अब तक पूरी नहीं हुई है सतह तक विस्तारित नहीं हो जाता, मुझे विश्वास नहीं होगा यदि आप कहेंगे कि आपके साधारण मानवीय मोहभाव नहीं हैं। आप स्वयं बलपूर्वक प्रयत्न करेंगे [उसे प्राप्त करने के लिए]। आप स्वयं दृड़ता से उच्च आदर्शों पर डटे रह सकते हैं और अपना आचरण साधकों की तरह बनाये रख सकते हैं। साथ-साथ, जितना संभव हो सके आपके जीने के तरीके को साधारण लोगों के तरीकों के अनुरूप होना चाहिए। लेकिन मैं जिसके बारे में बात कर रहा हूं वह इस एक [यौन संबंधों] से अधिक मुद्दों पर लागू होता है। यह पति-पत्नी के बीच के एक विशेष तरीके से यौन संबंधों को संभालने के विषय की तरह सरल नहीं है, ऐसा नहीं है। आप इस मुद्दे पर अपने लिए सबसे उपयुक्त तरीका चुन सकते हैं। आपको जो भी अच्छा लगता है, वह ठीक है। यदि आपको लगता है कि आपके अभी भी साधारण मानवीय विचार हैं और वे पर्याप्त रूप से शक्तिशाली हैं; यदि आप अभी भी शादी करना चाहते हैं, एक प्रेमी या प्रेमिका को ढूंढना चाहते हैं, और आपको कोई विशेष युवा महिला या कोई युवा पुरुष पसंद है ... यदि आपकी ऐसी इच्छाएं हैं और आप ऐसा करना चाहते हैं, तो यह इंगित करता है कि आपकी साधना अभी तक उस बिंदु तक नहीं पहुंची है, इसलिए आप ऐसी चीजों का भाग बन सकते हैं। यह दावा न करें कि आप आज सब कुछ तुरंत त्याग सकते हैं, कि आप तत्काल ऐसा कर सकते हैं और बुद्ध बन सकते हैं। यदि ऐसा होता तो आपको साधना करने की आवश्यकता नहीं होती—आप पहले से ही बुद्ध होते। इसलिए साधना धीरे-धीरे की जाती है, यह एक क्रमिक प्रक्रिया है। हालाँकि, मैंने यह कहा है, यदि आपको लगता है, "ओह, गुरु जी ने

कहा कि इससे पहले कि मैं साधना में सफल होता हूँ, मेरे सतह के स्तर पर सभी प्रकार की साधारण मानवीय भावनाएं और इच्छाएं होंगी। फिर मैं उस तरह की चीज़ कर सकता हूं," तो फिर से सोचिये! यद्यपि आपके पास वे चीजें हैं और मैं आपको जितना संभव हो सके साधारण लोगों की तरह रहने के लिए कह रहा हूं, यदि आप स्वयं को कड़ाई से एक साधक के आदर्शों के अनुसार नहीं रखते हैं, तो आप बिलकुल उस व्यक्ति की तरह हैं जो साधना नहीं करता है। यह द्वंद्वात्मक संबंध है।

प्रश्न: कोकेशियान छात्र अपने सारे समय का उपयोग फा को सुनने के लिए करना चाहते हैं, लेकिन अब तक कोई ऑडियोटेप अनुवाद के साथ नहीं है। क्या वे जुआन फालुन को पढ़ते हुए खुद को रिकॉर्ड कर सकते हैं और फिर इसे सुन सकते हैं?

गुरु जी : आवश्यक नहीं कि इसका परिणाम बहुत अच्छा हो। क्यों नहीं? ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरी वाणी में फा की शक्ति है। क्योंकि आप एक साधक हैं, इससे पहले कि आप फल पदवी प्राप्त करें, आप जो कुछ भी कहते हैं, वह विभिन्न प्रकार के साधारण मानवीय संदेशों का वहन करता है। इसलिए जब आप इसे वापस चलाते हैं, तो आप उन्हें वापस अवशोषित करेंगे। यह बार-बार दोहराया गया, आदान-प्रदान दूषितकरण अच्छा नहीं है। जब आप पुस्तक पढ़ते हैं तो यह अलग बात है। अब हम साथ-साथ अनुवाद भी मिला रहे हैं। हम इसे बनाने में अपनी गति बढ़ा रहे हैं; यह जल्द ही उपलब्ध होना चाहिए और जल्द ही इस समस्या का समाधान हो जाएगा। फिर भी, मैं आपको यह सिद्धांत बता रहा हूं : आप जो कहते हैं, उसमें आपके सभी साधारण मानवीय मोहभाव और धारणाएं जुडी हुई होती हैं। फा को कार्य करने देना है। केवल सतही सिद्धांतों को सुनने से किसी व्यक्ति को बहुत लाभ नहीं होगा। आपके मुंह से जो निकलता है वह आपके स्तर पर आपकी समझ है। जब आप वापस आते हैं और इसे फिर से सुनते हैं, तो आपकी समझ हमेशा उस स्तर पर बनी रहेगी। मेरी वाणी के साथ-साथ अनुवाद सुनने में अंतर है। भले ही मेरा स्वर धीमा है और अनुवादक का स्वर ऊँचा है, वास्तविकता में, वह अनुवाद कर रहा है, और यह वास्तव में मैं हूँ जो सिखा रहा है। जब मैं इस प्रकार फा सिखाता हूं तो छात्र मुझे समझने के साथ-साथ मेरे अधीन सभी चीजों को प्राप्त कर सकते हैं। मेरे कहने का अर्थ यही है।

प्रश्न: मैं तीन से पांच साल के बीच की छोटी लड़की से मिला, कुल तीन बार। जब मैं आधा सोया और आधा जागा हुआ होता था, तो वह मेरे तकिये पर आकर कूदती और हँसती थी। क्या वह एक साधना जनित शिशु (यिंगहाई) है जो फालुन से निकली है?

गुरु जी : ऐसी स्थितियाँ अच्छी बातें हैं, साधारणतः, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं है। साधना जनित शिशु छोटे होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की पृष्ठभूमि जटिल होती है, इसलिए इस प्रकार की बातों पर ध्यान न दें। वह कोई ऐसी बच्ची हो सकती है जिसे आप अतीत से लाए होंगे, या अन्य कारण हो सकते हैं। वैसे भी, वह एक छोटी लड़की है। यह एक अच्छी बात हो सकती है। उसकी ओर ध्यान न दें। बस अपनी साधना पर ध्यान दें।

ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझाया है, क्योंकि कुछ लोग इसे अभी तक नहीं समझ पाये हैं। मैं इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण दूंगा, हालांकि यह जरूरी नहीं कि यह इस स्थिति पर लागू हो। जब कुछ लोग नीचे आते हैं और पुनर्जन्म लेते हैं, तो अतीत से उनके बच्चे उनके साथ आते है। बच्चे का पुनर्जन्म नहीं हुआ होता है, हालांकि, और बस उस तरफ से साथ-साथ आ

जाते है। इसके अलावा, ऐसे अन्य लोग हैं, जिनके पिछले जन्म में बच्चे थे, और जब वे एक जीवनकाल में पुनर्जन्म लेते हैं, तो उनका बच्चा उस जीवनकाल में पुनर्जन्म नहीं लेता है। फिर भी बच्चा असाधारण रूप से सहज होता है और हमेशा उसका अनुसरण करता है। ऐसी स्थिति भी होती है। हर तरह की परिस्थितियां हो सकती हैं। क्योंकि आपने पवित्र फा प्राप्त कर लिया है, हम आपके लिए यह सब व्यवस्था करेंगे यदि बच्चे का आपसे कोई कर्म संबंध है। यह सब आपके लिए उचित रूप से व्यवस्थित किया जाएगा, इसलिए आपको इसके बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न: मैंने अपने मस्तिष्क को खंगाला लेकिन फिर भी कोई प्रश्न नहीं उभरा। क्या ऐसा है कि मैंने साधना बहुत नहीं ...

गुरु जी : हमारे कुछ अनुभवी छात्र, जिन्होंने अच्छी तरह से साधना की है, मुझसे मिलने पर उन्हें मुझे कहने के लिए कुछ भी सूझता नहीं है। मुझे पता है कि वे असहज अनुभव करते हैं जब वास्तव में बहुत प्रयास करने पर भी उन्हें मुझे कहने के लिए कुछ भी नहीं सूझता। मुझसे मिलने से पहले उनके पास भर-भर के प्रश्न होते हैं जो वे मुझसे पूछना चाहते हैं, लेकिन जैसे ही वे मुझसे मिलते हैं वे चुप हो जाते हैं। मैं सबको बता दूं कि ऐसा क्यों है। जब तक आप एक साधक हैं, आप मुझसे मिलने पर ऐसे ही रहेंगे। मुझसे मिलने पर आपके पास कहने के लिए कुछ भी नहीं होगा क्योंकि जब आप लगातार साधना कर रहे होंगे, आप का वह भाग जो साधना के माध्यम से ज्ञानप्राप्त हो चुका है—वह भाग जिसकी पूरी तरह से साधना हो चुकी है—आपसे अलग किया जाता है। यह उस भाग से अलग किया जाता है जिसकी अब तक पूरी तरह से साधना नहीं हुई है। इसलिए आप का जो भाग जिसकी अभी तक पूरी तरह से साधना नहीं हुई है वह हमेशा भ्रमित अनुभव करेगा, इसलिए उसके पास प्रश्न होंगे और वह उन्हें पूछना भी चाहेगा। लेकिन जब आप मुझे में अपना गुरु देखते हैं जब आप मुझसे मिलते हैं, तो आप का वह भाग जो पूरी तरह से साधना कर चुका होता है, आपकी सतह की तरह , वह भी सचेत हो जाता है, और जैसे ही वह सचेत हो जाता है, आप का साधारण मानवीय पक्ष पूरी तरह से उसके द्वारा नियंत्रित हो जाता है। ऐसा क्यों है कि यहाँ बैठे हुए आपके कोई बुरे विचार नहीं होते हैं और आप इतने सौम्य होते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि आप का जो भाग पूरी तरह से साधना कर चुका है, वह सचेत हो जाता है, और आपका पूरा शरीर इस से नियंत्रित होता है। मुझे बताइए, वह भाग जिसकी साधना पूरी हो चुकी है यदि वह उस आदर्श तक नहीं पहुंचा है, तो क्या उसकी साधना समाप्त हो चुकी समझी जा सकती थी? दूसरे शब्दों में, यह सब कुछ जानता है। यह केवल वह भाग है जिसकी पूरी तरह से साधना नहीं हुई है जो नहीं जानता है। कहने का यह अर्थ है कि, उस बिंदु पर अब आप पूछना नहीं चाहेंगे, और आपके पास पूछने के लिए कुछ भी नहीं होगा क्योंकि आप सब कुछ स्पष्ट रूप से जानते हैं। मुझसे दूर होने पर यह अब कोई ध्यान नहीं देगा और शांत बैठा रहेगा, इसलिए यहाँ का आपका यह भाग फिर से चीजों के प्रति अस्पष्ट हो जाएगा। "मैंने अभी-अभी गुरु जी से क्यों नहीं पुछा?" क्या यह ऐसे नहीं है? वास्तव में यह ऐसे ही है।

मैं आप सभी को बताना चाहता हूँ, आपको पुस्तक को और अधिक पढ़ना चाहिए, पुस्तक को अधिक पढ़ना चाहिए, और पुस्तक को और अधिक पढ़ना चाहिए—आपको पुस्तक को बार-बार पढ़ना चाहिए। ये उपदेश ब्रह्माण्ड के फा हैं। प्राचीन काल से, प्रत्येक साधना पद्धति का फा जो साधारण लोगों के समाज में प्रेषित किया गया था वह तथागत के स्तर पर या उससे निम्न था। इस तरह के एक विशाल फा ने ब्रह्मांड में विभिन्न जीवों के लिए भिन्न-भिन्न रहने के परिवेश बनाये हैं। यह सबसे

विशाल फा है जिसने पूरे ब्रह्मांड का सृजन किया है। यह केवल इतना है कि आप उच्च स्तर पर इसके तत्व को तब तक नहीं देख सकते जब तक आप उन स्तरों तक नहीं पहुँच जाते। लेकिन इसमें सब कुछ समाहित है जो आपको ज्ञान प्राप्ति करने और फल पदवी प्राप्त करने के लिए जानने की आवश्यकता है। इसलिए आप पुस्तक को और पढ़ें—बार-बार पुस्तक पढ़ें। वास्तव में, हमारे अनुभवी छात्रों को पता है कि यदि उनके पास कोई प्रश्न है, तो उन्हें केवल पुस्तक पढ़नी है और इसका हल अवश्य ही प्राप्त होगा। जैसे-जैसे आप नए स्तरों में प्रवेश करते हैं, नए और उच्च-स्तरीय प्रश्न उठेंगे। जब उस समय आप पुस्तक को फिर से पढ़ेंगे, तो यह आपके लिए फिर से उत्तर देगी। उसके बाद आप फिर से एक और स्तर पर प्रश्न करेंगे, और उस समय जब आप पुस्तक को कुछ और पढ़ेंगे, तो यह फिर से उसका उत्तर देगी। इस तरह आप साधना करते रहते हैं और लगातार ऊपर उठते जाते हैं। जब भी आपके कोई प्रश्न होंगे तो यह फा उसका उत्तर देगा। और आप साधारण जीवन में जैसे-जैसे स्वयं को कड़ी आवश्यकताओं के अनुरूप चलाते हैं और लगातार सुधार करते हैं, तो आप लगन के साथ तेजी से आगे बढ़ पायेंगे।

प्रश्न: क्या स्वार्थी होना, स्वलाभ, मोह और यश की इच्छा का मूल है?

गुरु जी : स्वलाभ और यश की इच्छा दोनों ही स्वार्थ हैं। मोह (चिंग) की बात करें तो, मैंने पिछले फा व्याख्यानों में बताया था कि यह मानव जाति के इस आयाम के साथ-साथ तीन लोकों में भी व्याप्त हो जाता है। तीन लोकों के अंदर कोई भी व्यक्ति इससे बच नहीं सकता है—वे सभी इसके नियंत्रण में हैं। मनुष्य इस मोह के बीचों-बीच हैं। जितना अधिक आप इससे जुड़े होते हैं, इसकी शक्ति उतनी ही अधिक होती है और इस प्रकार यह आपके ऊपर अधिक प्रभाव डालता है। विशेष रूप से, जब लोग अपने प्रियजनों को खो देते हैं या जब युवा लोगों के मन टूट जाते हैं, तो इसके बारे में जितना अधिक विचार किया जाएगा, मोह उतना ही अधिक शक्तिशाली होगा। मोह तीनों लोकों के भीतर है, इसलिए आप, जो एक साधक हैं, इसको झटक कर इससे मुक्त होना चाहिए। आपको इस मोह को उतार फेंक कर और इससे पार जाना चाहिए। जहाँ स्वलाभ और यश की बात है, वे ऐसी चीजें हैं जिन्हें मानव जाति अत्यधिक महत्व देती हैं। लेकिन वास्तव में, वे भी मोह से उपजते हैं। यश के साथ, क्या आप उसके द्वारा लाए गए सुख और सौभाग्य का आनंद नहीं लेंगे? तब आप वास्तव में प्रसन्न होंगे। क्या संतोष प्राप्त करने के लिए कोई व्यक्ति यश और स्वलाभ का पीछा नहीं करता है? यदि कोई संतुष्ट है, तो क्या वह प्रसन्न नहीं है? क्या वह आनंद जो आप अनुभव करते हैं वह भी मोह नहीं है? यश आपको प्रसन्नता और सम्मान दिला सकता है, जो मोह है, है ना? यदि आपको अपने स्वलाभ पर संतोष हुआ है, तो क्या आप फिर से प्रसन्न नहीं होते हैं? यह भी मोह है। इसलिए मानवजाति इस मोह के लिए जीती है। साधारण लोगों में, चाहे आप प्रसन्न हो या नहीं, चाहे आप किसी चीज के विरुद्ध हो या नहीं, चाहे आप कुछ चाहते हो या नहीं, या आप कोई निश्चित पद प्राप्त करना चाहते हो या नहीं, आप जिसे अच्छा या बुरा मानते हैं, आप क्या करते हैं या क्या नहीं करना चाहते हैं, यह सब मोह है। मैंने कहा है कि मानवजाति केवल मोह के लिए जीती है। क्या ऐसा भी हो सकता है कि मानव समाज में कोई मोह ना हो? यदि मानव समाज में मोह नहीं होता, तो मानवजाति को जीवन इतना रोचक नहीं लगेगा—यह वास्तव में नहीं होगा। मनुष्य को बस ऐसे ही जीना होता है।

स्वार्थ की बात करें तो, मैंने पहले आपसे एक सिद्धांत का उल्लेख किया था और आप सभी ने बहुत प्रसन्नता के साथ तालियाँ बजायी थी। मैंने भविष्य के ब्रह्मांड के विलुप्त नहीं होने के विषय में बात की थी, और आप सभी इससे प्रसन्न थे। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों हो सकता है? कुछ लोग

कहते हैं, "यदि कोई व्यक्ति स्वयं के लिए नहीं जीता है, तो वह दिव्यलोक द्वारा अभिशप्त होगा।" कुछ लोगों ने इसे अपना आदर्श मान लिया है। वास्तव में, आप अभी तक यह नहीं जानते हैं कि यह स्वार्थ उच्च से उच्च स्तर तक फैला हुआ है। वास्तव में, अतीत में साधना करने वालों का यह कहना कि, "मैं ऐसा-ऐसा कर रहा हूं," "मैं ऐसा-ऐसा करना चाहता हूं," "मैं ऐसा-ऐसा प्राप्त करना चाहता हूं," "मैं साधना कर रहा हूं," "मैं बुद्ध बनना चाहता हूँ," या "मैं ऐसा-ऐसा प्राप्त करने की कामना करता हूँ," इनमें से कोई भी स्वार्थ से हटकर नहीं था। लेकिन मैं जो चाहता हूं आप करें वह है सच्चाई से, विशुद्ध रूप से, और निस्वार्थ रूप से, सच्चा पवित्र फा और सच्ची ज्ञानप्राप्ति के साथ फल पदवी प्राप्त करें—तब ही आप शाश्वत अमरत्व को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए मैं आपको बता रहा हूं कि आपको अपने हर काम में सबसे पहले दूसरों के बारे में सोचना होगा। कुछ लोग प्रसन्न होते हैं जब कोई उन्हें पैसे देते हैं। जब कोई उन्हें पैसे देता है तो वे इस बात पर विचार नहीं करते हैं कि क्या इससे दूसरे व्यक्ति को कठिनाई होगी या नहीं, क्या उसकी वित्तीय स्थिति और तंग हो जाएगी या नहीं, और इत्यादि। "जब तक कोई मुझे कुछ देता है, मैं प्रसन्न हूं, और मुझे दूसरों की चिंता नहीं है। जब तक दूसरों का मेरे प्रति व्यवहार अच्छा है, मैं प्रसन्न हूँ, लेकिन मुझे दूसरों की चिंता नहीं है।" कभी-कभी, यहां तक कि जब कुछ लोग बेहद व्यथित होते हैं और आपको खुश करने के लिए कुछ कहने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं होता है, तो आप उनकी व्यथा नहीं समझते। सभी प्रकार की परिस्थितियों होती हैं। दूसरे शब्दों में, अब से आपकी साधना में, आप जो कुछ भी करते हैं, उसमें आपको दूसरों के बारे में सोचना पड़ेगा।

प्रश्न: [जुआन फालुन] खंड 2 में उल्लेख है कि समुद्र में लोग रहते हैं, और यह कि ऐसे कई तरह के लोग हैं।

गुरु जी : हाँ। कुछ हमारे इस आयाम में रहते हैं, कुछ नहीं। न केवल सागर में लोग हैं, बल्कि हमारे जैसे ही स्तर पर विद्यमान आयामों में भी, अन्य लोग हैं—वे लोग जो आपके जैसे हैं और वे लोग जो आपके जैसे नहीं हैं। आप उन्हें मनुष्य कह सकते हैं, या फिर नहीं। क्योंकि उनकी कुछ भावनाएँ होती हैं लेकिन साधारण मनुष्य की तरह यौन इच्छा नहीं होती है, इसलिए उनके शरीर का निचला आधा हिस्सा कुछ पदार्थों के रूप में होता है; केवल उनका ऊपरी शरीर मानव रूप में है। इसलिए वे यहाँ वहां तैर सकते हैं और उड़ सकते हैं। समुद्र में अधिकांश लोग मानव जाति के हैं जो भिन्न-भिन्न समय अवधि के दौरान पृथ्वी से समाप्त किये गए थे। और कुछ लोग ऐसे हैं जो समुद्र के तल के वासी हैं: कुछ ऐसे हैं जो मानवजाति के समान हैं, कुछ ऐसे भी हैं जिनका ऊपरी शरीर मनुष्य का है और निचला शरीर एक मछली का है, और कुछ ऐसे भी हैं जिनका ऊपरी शरीर मछली का है और निचला शरीर मानव का है। इसके अलावा, महाद्वीपीय परतों के नीचे भी अतीत के लोग हैं, अर्थात्, वे मानव जातियां जो अतीत में समाप्त हो गयी थी। वे वापस नहीं आ सकते क्योंकि वे मानव जाती से बाहर निकाले गए थे—पृथ्वी से, अर्थात्। तो उनमें से एक भाग जिनमें बहुत अधिक बुरे कर्म और पाप नहीं थे वे पृथ्वी में समा गए थे। वे ऐसे हैं, और वे बाहर नहीं आते हैं—वे बस वहीं रहते हैं। उनकी संख्या काफी कम है। वे साधारणतः मनुष्यों की तुलना में थोड़े अधिक सक्षम होते हैं और इतने भ्रमित नहीं होते हैं। ठीक है, इन विषयों से उत्सुक या चिंतित न हों, क्योंकि इनका आपकी साधना से कुछ लेना-देना नहीं है।

प्रश्न: भविष्य में, दाफा के नए जापानी संस्करण को आधिकारिक तौर पर प्रकाशित किए जाने के बाद, हमें अनुवाद की त्रुटियों वाले पुराने संस्करण की पुस्तकों का निपटारा कैसे करना चाहिए?

गुरु जी : यह नहीं कहा जा सकता है कि उनमें त्रुटियां हैं। बस यह कि अनुवाद अपर्याप्त था या चुने गए शब्द सही नहीं थे। हम केवल इसका वर्णन इस तरह कर सकते हैं। उनका निपटारा कैसे किया जाना चाहिए? उनका निपटारा न करें, बस उन्हें वैसे ही छोड़ दें। मूल प्रति से कुछ अलग हुए बिना कोई भी विदेशी भाषा संस्करण चीनी से अनुवादित नहीं किये जा सकते है। मैं यह भी सुझाव देता हूं कि एक से अधिक अनुवाद संस्करण होना वास्तव में बेहतर है। जब लोग उन्हें पढेंगे, तो उन्हें अनुभव होगा, "ओह, इसका यह अर्थ है ... ओह, और इसका अर्थ यह भी है ... तो यह इस तरह से है।" यदि आप मुझसे पूछें तो इसके वास्तव में कुछ लाभ हैं। जैसे वे हैं उन्हें वैसे ही छोड़ दें।

प्रश्न: क्या भीरूता एक लगाव है या एक शारीरिक कारक है?

गुरु जी : भीरूता "भीरूता" नामक कारक के कारण होती है जो इस ब्रह्मांड में उपस्तिथ है। यह आपको डर अनुभव कराता है। आप जितना अधिक डरेंगे, उतना ही आप पर इसका प्रभाव पड़ेगा। आपको इसे इच्छाशक्ति के साथ जीतना होगा—यह इच्छाशक्ति की बात है। इसे भी आपको अपनी साधना द्वारा अर्जित करना होगा।

प्रश्न: जब मैं व्यायाम करता हूं, मैं अक्सर साधना से संबंधित विषयों के बारे में सोचता हूं, फा के प्रसार के विषय में और गुरु जी के शब्दों के विषय में। क्या यह सही है?

गुरु जी : यह एक विशेष समय के दौरान की एक स्थिति है। भविष्य में यह कोई समस्या नहीं होगी।

प्रश्न: यदि कोई मेरे लिए किसी की जान लेता है, तो क्या बुरा कर्म अभी भी मेरे द्वारा अर्जित किया जायेगा ?

गुरु जी : यदि आप इस तरह का कार्य करते हैं ... मैं इस तरह के वातावरण में इस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहता। मैंने इस विषय पर चर्चा करने और समझाने वाले दो लेख लिखे हैं, लेकिन कुछ लोग समझ नहीं पाते हैं कि मैं क्या कह रहा हूं। मैं इसे इस तरह से कहना चाहता हूँ : क्या आप जानते हैं कि आपने अपने सभी जीवन कालों में कितने जीवों को हानि पहुंचायी है? प्रत्येक व्यक्ति ने कई जीवों को हानि पहुंचायी है। इससे निम्न फा के साथ आप इस जीवनकाल में साधना में सफल नहीं हो पाते, और आपको उन जीवनों के लिए भुगतान करना होता जो आपका प्रत्येक जीवनकाल से ऋण हैं। बौद्ध धर्म में यह माना जाता है कि साधना एक जीवनकाल में पूरी नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने भी यह देखा कि मारे गए लोगों का ऋण चुकाना पड़ता है। लेकिन आज हम आपका फल पदवी तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं, इसलिए इतना समय शेष नहीं रह गया है। फिर उन जीवों के बारे में क्या किया जाना चाहिए जो आपने लिए हैं? दुख के उस भाग के अलावा जो आप पर उधार हैं—एक ऐसा भाग जिसके लिए आप कर्म को हटा रहे हैं और दुख भोग कर भुगतान कर रहे हैं—मुझे आपके लिए अधिकतर हटाना होगा। जो शेष बचा है उसका भुगतान आप को करना होगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि आप इस परीक्षण में सफल हो सकते हैं। साथ ही, आपके द्वारा हानि पहुँचाए गए जीवनों का एक भाग आपके फल पदवी प्राप्त करने के बाद आपके दिव्यलोक में प्राणी बन जायेंगे, इसलिए यह एक अच्छी बात में बदल जाएगा। यदि जीवन में हानि पहुंचाया गया जीव जानता होता, "ओह, मैं भविष्य में बुद्ध के दिव्यलोक में जाऊंगा," वह अपनी गर्दन को सामने कर देता ताकि आप उसे मार सकें। वह प्रसन्नता से, खुशी से आपको स्वयं को मारने देता। बेशक, उसकी ज्ञान प्राप्ति की स्थिति नहीं होगी।

वह केवल एक साधारण प्राणी होने के लिए वहां जाएगा, वह आपके बुद्ध दिव्यलोक में एक साधारण नागरिक, एक पुष्प, या कोई जानवर जैसे की एक पक्षी होने के लिए जाएगा। वैसे भी, भिन्न-भिन्न जीवों के लिए भिन्न-भिन्न व्यवस्थाएं हैं।

मेरे इस तरह से बात करने के बाद भी, कुछ लोग इसे विपरीत तरीके से समझ सकते हैं: "ओह, फिर मेरे लिए जीवन लेना ठीक है।" यदि आप फल पदवी प्राप्त नहीं करते हैं, तो आप कभी भी, उन सभी जीवों के लिए भुगतान करने में सक्षम नहीं होंगे जिन्हें आपने मारा है, जबकि आपको उनका भुगतान करना होगा। आपके द्वारा अर्जित बुरे कर्म इतने भयानक होंगे। दूसरे शब्दों में, आपकी भुगतान प्रक्रिया बेहद कष्टदायी और लगभग अंतहीन होगी। तो यह वास्तव में भयावह स्थिति है। कल एक छात्र ने कहा: "गुरु जी ने नर्क के विषय में बात नहीं की है।" मैं कहूँगा कि मैं उस विषय में आपसे बात नहीं कर सकता। हमारी यह व्यवस्था इतनी पवित्र है, और इसके विषय में बात करना डरावना है। वास्तव में, यह मेरे लिए डरावना नहीं है, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह वास्तव में भयावह है। इसलिए मुझे लगता है कि भले ही मैंने अभी आपको प्रत्यक्ष रूप से उत्तर नहीं दिया है, फिर भी मैंने इसे स्पष्ट रूप से समझाया है।

चीन में एक छात्र था जो पीएच.डी. चिकित्सा विज्ञान में उम्मीदवार था। वह शव विच्छेदन पर प्रयोग कर रहा था। वह प्रयोगों को पूरा करने के बाद अपनी डॉक्टरेट प्राप्त करने जा रहा था। यही की, उसने अपनी सभी परीक्षाएं पास कर ली थीं, लेकिन उसे अभी भी कुछ प्रयोग करने और एक हजार या शायद पांच सौ चूहों को विच्छेद करने की आवश्यकता थी और फिर वह अपनी पीएचडी प्राप्त कर सकता था। बाद में, उसने अपने शिक्षक के सामने यह बात लायी कि वह ऐसा नहीं कर सकता। उसने कहा, "मैं अब फालुन दाफा का अभ्यास कर रहा हूं और मुझे पता है कि हत्या कर्म उत्पन्न करती है।" फिर उसने अपने अकादमिक सलाहकार से कहा, "मैं जान नहीं ले सकता—उसके स्थान पर मैं डिग्री छोड़ सकता हूँ।" इसके बारे में सोचें। यदि कोई व्यक्ति जीवन और मृत्यु की परीक्षा को पारित नहीं कर सकता है, तो वह फल पदवी प्राप्त नहीं कर सकता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि आपको भी इसी प्रकार की स्थिति से गुजरना होगा यह साबित करने के लिए कि आप अपना जीवन त्याग सकते; यह भी इसका एक रूप है। मैं इसे महत्वपूर्ण नहीं समझता हूं। मैं जो देखता हूं, वह यह है कि आपका मन सच में ऐसे कर सकता है या नहीं। इसके बारे में सोचें, सब कोई : मानवजाति इस जगत में और कुछ नहीं बल्कि अपने यश और स्वलाभ के लिए जीती है। यदि उन्हें पीएच.डी. डिग्री मिल जाती, उनके पास एक अच्छी नौकरी और भविष्य होता। और स्वाभाविक रूप से, उनका वेतन अधिक होता—यह बिना कहे समझा जा सकता है। यह साधारण लोगों या एक औसत व्यक्ति की तुलना में अधिक होता। क्या लोग केवल उन चीजों के लिए नहीं जीते हैं? वह उन चीजों को भी त्याग सका। तो इसके बारे में सोचें : उसने यह भी त्यागने का साहस किया। वह एक युवा व्यक्ति होते हुए भी उन चीजों को त्यागने में सक्षम था, तो क्या यह ऐसा नहीं है कि वह कुछ भी त्याग सकता था? क्या यह ऐसा नहीं है कि उसने अपना सारा जीवन दांव पर लगाने का साहस किया? क्या लोग केवल उन चीजों के लिए नहीं जीते हैं? जो लोग ऐसा कर सकते हैं उनकी साधना का स्तर वहां ऊपर हैं, वास्तव में। इन लोगों और इन प्रकार की स्थितियों के संबंध में बात करें तो, मैंने कहा कि क्योंकि वे अपनी भावना, यश और स्वलाभ को त्याग सकते हैं, तो फिर जान लेने के डर को भी क्यों नहीं त्याग सकते? क्या वह अंतिम मोहभाव त्यागना नहीं होगा? मैं केवल एक बात रख रहा हूं। यह भिन्न बात होती यदि आप उस स्तर तक नहीं पहुँच पाते, जीवन और

मृत्यु की परीक्षा को पारित नहीं कर पाते, उन सभी चीजों को नहीं छोड़ पाते, और आपने इसे इस प्रकार किया। आपके द्वारा ली गयी जानों का भुगतान आपके स्वयं की अंतहीन भुगतान प्रक्रिया से करना होगा—यह इतना भयावह है। मैंने फा और उसके अंतर्निहित सिद्धांतों के नियमों को स्पष्ट किया है। लेकिन आपको किस तरह से कार्य करना चाहिए, यह अभी भी आप पर निर्भर करता है कि स्वयं के लिए उसे कैसे निर्धारित करते हैं। दाफा के सिद्धांत सिखाते हैं कि आप जीवन नहीं ले सकते। जब तक आप साधना करते हैं तब तक आप मार नहीं सकते। एक उच्च स्तर पर, हालांकि, दाफा सर्वव्यापी है और फा उन सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है जो बुद्ध के स्तर पर हैं। मैंने कहा है कि आपके द्वारा हानि पहुँचाए गए कुछ जीवन ज्ञान प्राप्त करेंगे और आपके भविष्य के दिव्यलोक में साधारण जीव बन जाएंगे, लेकिन सब कुछ शून्य हो जाएगा यदि आप फल पदवी प्राप्त नहीं कर पाए! आपके सभी बुरे कर्म आपको स्वयं ही को चुकाने होंगे। यही संबंध है। मैं उच्च स्तर पर फा पर चर्चा नहीं करना चाहता हूं इसलिए क्योंकि मेरे इसे प्रकट करने के बाद, कई लोग अभी भी उन सिद्धांतों को वास्तव में समझ नहीं पाएंगे जिनके बारे में यदि मैं बात करता तो।

अवश्य ही, फा साधारण लोगों के बीच के सिद्धांतों से ऊपर है। यह आपको नहीं मिलेंगे चाहे आप सभी पुस्तकों को खंगालते हैं—प्राचीन, आधुनिक, चीनी और विदेशी—और यह आपको अन्य धर्मग्रंथों में भी नहीं मिलेंगे। यही कारण है कि सब कोई इसे सुनना पसंद करता है। लेकिन इसे ज्ञान के रूप में मत समझो—ज्ञान प्राप्त करने के आपके मोहभाव को संतुष्ट करने के लिए मैं यहां नहीं हूं। मैं आपको बचाने के लिए फा सिखा रहा हूँ।

गुरु जी : मैं आधुनिक मुख्यभूमि चीन में उपयोग की जाने वाली शब्दावली का उपयोग कर रहा हूं। मुझे लगता है कि आप सभी दाफा के सदस्य हैं और इस प्रकार दाफा का एक भाग हैं, इसलिए मैंने आपको "हम" कहा है। मुझे लगता है कि जब आप इसे सुनेंगे तो शायद आप स्वयं सच में साधना करने लगेंगे। इसके पीछे यही विचार है।

प्रश्न: किसी व्यक्ति को कब मनोविकृत माना जा सकता है?

गुरु जी : मनोविकृति केवल यह है कि एक व्यक्ति अपने शरीर को नियंत्रित नहीं कर सकता है और बहुत दुर्बल होता है। जैसे ही इस प्रकार के व्यक्ति को कोई कठिनाई होती है, वह किसी भी चीज़ का सामना नहीं करना चाहता है। ऐसा लगता है कि उसकी मुख्य चेतना (झु यिशि) सो रही है, किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं देती है, और अचानक इस शरीर का नियंत्रण छोड़ देती है। उस समय व्यक्ति उस स्थिति में होता है जिसे साधारण लोग मानसिक स्थिति कहते हैं। और इसका कारण क्या है? जब उसकी मुख्य चेतना उसके शरीर को नियंत्रित नहीं करती है—यह की, जब वह तर्कसंगत नहीं होता है—उसके विभिन्न विचार जो कर्म द्वारा उत्पन्न होते हैं और विभिन्न धारणाएं जो जन्म के बाद बनती हैं, वह उसके शरीर, मुंह, आंखें और बाकी सभी चीजों को नियंत्रित करना शुरू कर देती हैं। इसलिए वह उचित, साधारण व्यवहार के विपरीत अर्थहीन बातें करेगा और पागलपन करेगा, और लोग कहेंगे कि वह मनोविकृत है। मैंने कहा है कि मनोविकार कोई रोग नहीं है। इसकी कोई रोग संबंधित स्थिति नहीं है; यह केवल इतना है कि उस व्यक्ति की मुख्य चेतना बहुत दुर्बल है। ऐसे जन्मजात रोग भी हैं जहां व्यक्ति की मुख्य चेतना जन्म से दुर्बल होती है और उसका शरीर हमेशा अन्य जीवों द्वारा नियंत्रित होता है; यह लगातार दूसरों को नियंत्रित करने के लिए सौंप दिया जाता है। उसके अतिरिक्त

अन्य आयामों के संदेशों द्वारा भी शक्तिशाली हस्तक्षेप होता है, और वह व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार होता है। मस्तिष्क एक तैयार मशीन है और कोई भी इसे संचालित कर सकता है। यदि आप इसे संचालित नहीं करते हैं, और आप इसे सौंप देते हैं, तो अन्य इसे संचालित करने के लिए आ जाएंगे और फिर यह मानव मानकों का पालन नहीं करेगा। अतः व्यक्ति को दृढ़ इच्छाशक्ति रखनी होती है। इच्छाशक्ति दृढ़ होनी चाहिए!

प्रश्न: क्या ऐसे भी लोग होंगे जिनका फल पदवी के समय न तो जन्मजात शरीर (बनती) रूपांतरित हुआ होगा और न ही साधना द्वारा अमर शिशु (युआनयिंग) की प्राप्ति हुई होगी ?

गुरु जी : मैंने कहा है कि हमारे कई दाफा शिष्य विभिन्न स्तरों से आये हैं, इसलिए भिन्न-भिन्न स्थितियाँ हो सकती हैं। चाहे जो भी हो, आपकी कौन सी स्थिति है इसकी चिंता न करें। मैं आश्वासन देता हूं कि जब तक आप साधना करेंगे मैं आपको उस स्थिति तक पहुंचाने की व्यवस्था करूँगा जिससे आप अत्यधिक संतुष्ट होंगे। यही सबके लिए लागू होगा। क्या मेरा आपको सर्वश्रेष्ठ देना मेरा ब्रह्मांड के लिए सर्वश्रेष्ठ सृजन करना नहीं है? (तालियां)

प्रश्न: ज़ुआन फालुन को पढ़ते समय, मुझे शायद ही कभी लगता है कि बुद्ध, ताओ और दिव्य स्पष्ट रूप से मुझे कुछ संकेत दे रहे हैं। लेकिन जीवन की साधना के दौरान, मुझे फा के सिद्धांतों का ज्ञान होता है।

गुरु जी : आप स्वयं ही ज्ञानप्राप्त करने में सक्षम हैं, इसलिए आपके लिए चीजों को इंगित करना आवश्यक नहीं है। स्वयं से यह करने में सक्षम होना स्वयं ही ताओ की ज्ञानप्राप्ति करना है, और यह उत्कृष्ट है। कुछ लोग वास्तव में किसी भी चीज़ के प्रति ज्ञानप्राप्त नहीं कर सकते, फिर भी हम देखते हैं कि वे अच्छे उम्मीदवार हैं। तो क्या किया जाए? हम उन्हें एक संकेत देते हैं।

प्रश्न: हाल ही में, मेरे मन की अक्सर एक अजीब स्थिति रही है; मेरे विचार अच्छे नहीं रहे हैं; और मेरी सोच गड़बड़ा गयी है। क्या मैं वास्तव में इतना गिर गया हूं?

गुरु जी : जब आप सुस्त होते हैं तो कर्म पागलों की तरह हमला करेगा। यदि आप इस ओर से शक्तिशाली हैं तो आप इसे दबा सकते हैं। जब आपने इसे दबाया और नियंत्रित कर लिया है, यदि मैं देखता हूं कि आप वास्तव में अच्छे हैं और वास्तव में एक साधक हैं, तो मुझे आपकी देखरेख करनी होगी और आपके लिए उन चीजों को हटाना होगा। यह ऐसे ही होता है। यदि आप स्वयं इसे संभालने में विफल रहते हैं तो यह नहीं चलेगा। आप कहेंगे, "ओह, फिर जब तक मैं इसे दबाता रहूँगा गुरु जी मेरे लिए इसे हटाते रहेंगे। इसलिए मैं इसे दबाने लगूंगा। यह ऐसे ही है जैसा मैंने पहले रोग से पीड़ित लोगों के विषय में कहा था : यह काम नहीं करेगा यदि आप केवल इसलिए अभ्यास करते हैं क्योंकि आप चाहते हैं कि मैं आपके लिए बुरे कर्म को समाप्त कर दूं! अर्थात, आपको किसी से भी मोहभाव नहीं होना चाहिए। आपके पवित्र विचार होने चाहिए।

प्रश्न: जब हम पार्क में समूह अभ्यास कर रहे होते हैं तो क्या हम गुरु जी के अभ्यास सिखाने वाले वीडियो चला सकते हैं ?

गुरु जी : यह ठीक होगा यदि परिस्थिति इसकी अनुमति देती है और सरकार इसमें हस्तक्षेप नहीं करती है। आप वीडियो चला सकते हैं या नहीं यह स्थिति और स्थान पर निर्भर करता है।

प्रश्न: मैंने एक साल से अधिक समय तक साधना की है और ऐसा लगता है कि जितना अधिक मैं साधना कर रहा हूं, उतना ही संवेदनशील बनता जा रहा हूं। एक छोटा सा मोहभाव भी मेरे मन को बहुत अशांत करने का कारण बन जाता है।

गुरु जी : यह भी संभव है कि आप अधिक संवेदनशील होते जा रहे हैं और आपको डर है कि आप अच्छी तरह से साधना नहीं कर रहे हैं। ऐसे मोहभाव को भी विकसित न करें। खुलकर और गरिमा के साथ साधना करें। दूसरी ओर, आपको कड़े अनुशासन का पालन करना होगा। आप में से हर कोई साधना के दौरान गलतियाँ करेगा और ऐसी परीक्षाएँ होंगी जिन्हें आप पार नहीं कर पायेंगे। यदि आप हर परीक्षा को सरलता से पार कर सकते हैं, तो मैंने, आपके गुरु के रूप में, आपके लिए अच्छी व्यवस्था नहीं की है। इसलिए हर परीक्षा को पारित करना चुनौतीपूर्ण है। आप या तो इसे पारित करेंगे या इसे पारित करने में असफल रहेंगे, और आप या तो इसे अच्छी तरह से पारित करेंगे या इसे अच्छी तरह से पारित नहीं करेंगे। लेकिन जब आप इसे अच्छी तरह से पारित नहीं करते हैं, तो आप व्यथित हो जाते हैं और आप समझ जाते हैं कि आपने अच्छी तरह से साधना नहीं की है और आपको इससे गहरा पछतावा होता है। आप अगली बार अच्छी तरह से साधना करने का मन बना लेते हैं। फिर अगली बार आप इसे पारित करने का फिर से प्रयत्न करेंगे। इसे पारित करने में सक्षम होना, इसे पारित करने में सक्षम नहीं होना, स्वयं की जांच करना, और यह निरंतर ऐसे करते रहना, यही साधना के दौरान आपकी मनस्थिति रहेगी। यदि आप हर परीक्षा को अच्छी तरह से पारित कर सकते हैं तो आपको साधना करने की आवश्यकता नहीं होगी। यदि कोई परीक्षा आपको नहीं रोक सकता, तो आप फल पदवी प्राप्त करने वाले होंगे। दूसरी ओर, यदि आप सोचते हैं, "गुरु जी ने कहा है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे अच्छी तरह से पारित करते हैं या नहीं, इतना ही पर्याप्त है कि हम साधना करते हैं," और यहां से आगे आप सुस्त पड़ जाते हैं और आप बुरा नहीं मानते हैं जब आप परीक्षा को अच्छी तरह से उत्तीर्ण करने में विफल होते हैं, तब आप अब साधना नहीं कर रहे हैं। यह ऐसे काम करता है। यदि आप स्वयं कड़े अनुशासन का पालन नहीं करते हैं, तो यह नहीं चलेगा।

प्रश्न: फल पदवी क्या होती है? क्या यह एक साधारण व्यक्ति की तरह मरना है, या यह गुरु जी द्वारा व्यवस्थित की जाती है?

गुरु जी : फल पदवी कई भिन्न-भिन्न रूप लेती है। जैसा कि आप जानते हैं, शाक्यमुनि ने निर्वाण को अत्यधिक हद तक मानवीय मोहभावों को त्यागने के लिए सिखाया था। उनकी साधना पद्धति में वे मानव शरीर भी नहीं चाहते थे। तो उनके अभ्यास के अनुसार व्यक्ति को मानव शरीर से मोह नहीं होना चाहिए, और बस इसी तरह साधना करनी चाहिए। तिब्बती लामावाद प्रकाश-परिवर्तन सिखाता है। अर्थात्, वह व्यक्ति फल पदवी के समय वहां बैठता है, और यदि उसके पूरे शरीर की सफलतापूर्वक साधना हुई हो, तो फल पदवी के क्षण उसका शरीर लाल रंग की किरण में परिवर्तित हो जाता है और उसकी अपनी चेतना सफलतापूर्वक विकसित बुद्ध-शरीर के साथ चली जाती है। क्योंकि सफलतापूर्वक साधना प्राप्त किये गए बुद्ध-शरीर में इस साधारण मानव पक्ष का कोई पदार्थ नहीं होता है, इसलिए मानवजाती इसे नहीं देख सकती है, और केवल प्रकाश को और प्रकाश से बनी आकृति ऊपर उठते हुए देख सकती है। कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अच्छी तरह से साधना नहीं की होती है और जो पूरे शरीर के प्रकाश-परिवर्तन से गुजर नहीं सकते हैं। तो प्रकाश-परिवर्तन के समय उसका शरीर तुरन्त सिकुड़ जाता है, "श्वा!" लगभग एक फुट लंबा पूरा व्यक्ति। यह बिल्कुल उसके जैसा दिखता है, लेकिन

आनुपातिक शरीर के साथ लगभग एक फुट लंबा हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने पर्याप्त साधना नहीं की थी और प्रकाश-परिवर्तन से उसे पूरी तरह से परिवर्तित नहीं किया गया था।

अन्य परिस्तिथियाँ भी होती हैं। चीन में ताओ प्रणाली में, वे फल पदवी के समय "मृत शरीर से उद्धार" का रूप लेते हैं। "मृत शरीर से उद्धार" क्या है? प्राचीन चीन में, बहुत से लोग महान ताओ का अभ्यास करते थे। महान ताओ के साधना मार्ग के लिए आवश्यक है कि एक व्यक्ति साधना में सफल होने के बाद वह शरीर को अपने साथ ले जाए—उनका मार्ग शरीर भी चाहता है। लेकिन इस प्रकार के व्यक्ति का शरीर अब एक साधारण मानव शरीर नहीं होता है, क्योंकि यह पूरी तरह से उच्च ऊर्जा वाले पदार्थ में बदल गया होता है और उसका ताओ-शरीर बन जाता है। मृत शरीर से उनके उद्धार की विधि इस प्रकार होती है। वह व्यक्ति जानता है कि उसने साधना से फल पदवी प्राप्त कर ली है और उसके पूरे शरीर की पूरी तरह से साधना हो चुकी है। वह इस जगत को किस रूप में छोड़ सकता है? अधिकांश ताओवादी साधारण लोगों के बीच की अपनी अधूरी इच्छाओं का समाधान अपने फल पदवी प्राप्त करने के बाद करते हैं। हालांकि, बुद्ध प्रणाली ऐसी नहीं है, क्योंकि फल पदवी के दौरान चीजें हल की जाती हैं।

मृत शरीर से उद्धार से लोग उसके जाने के बाद उस व्यक्ति की खोज करना बंद कर देंगे। वह अपनी मौत का ढोंग करेगा, हालांकि उस समय तक वह वास्तव में दिव्यलोक तक जाने या पृथ्वी में प्रवेश करने में सक्षम होता है। जैसे ही वह जाने वाला होता है, वह अपने परिवार से कहता है: “मैं जाने वाला हूँ। मैं साधना में सफल हो चुका हूँ और मैं जाने वाला हूँ। मेरे लिए एक ताबूत तैयार करो। ” भविष्यवाणी अनुसार ठीक उसी समय, वह बिस्तर पर लेट जाता है और एक क्षण बाद सांस लेना बंद कर देता है। परिवार के सदस्य देखते हैं कि उनका निधन हो गया है, इसलिए वे उसे ताबूत में रखकर दफन कर देते हैं। लेकिन वास्तव में, उन्होंने "छलावरण" की क्षमता का उपयोग किया होता है—उन्होंने एक अलौकिक शक्ति का उपयोग किया होता है। उस दिन उनके परिवार ने जो देखा वह उनका वास्तविक शरीर नहीं था। तो वह क्या था? यह एक ऐसी वस्तु से बना था जिसकी ओर उन्होंने इंगित किया था। उन्होंने एक जूता, एक झाड़ू, एक लकड़ी का टुकड़ा या एक तलवार का उपयोग किया और उसे अपनी छवि में बदल दिया। उन्होंने एक वस्तु पर इशारा किया था और अपनी छवि में बदल दिया था। यह वस्तु जानती है कि आवश्यकता अनुसार उसे क्या कहना है, और यह उसके परिवार से कहती है : “मैं यहाँ लेट जाऊंगा और एक पल में यह समाप्त हो जाएगा। बस मुझे ताबूत में रख देना, बस इतना ही। तो वास्तविकता में, यह उस लकड़ी का टुकड़ा, वह झाड़ू, या शायद एक जूता [वहां पड़ा] था। वास्तविक व्यक्ति छोड़ कर दूर, बहुत दूर चला गया होता है। परिवार उसे दफना देता है। दफन होने के बाद, कुछ घंटों में वह वस्तु वास्तव में अपने मूल रूप में वापस आ जाती है; यह एक जूते, एक बांस, या लकड़ी के एक टुकड़े में वापस बदल जाएगी। इसी को "मृत शरीर से उद्धार" कहा जाता है। कभी-कभी कोई व्यक्ति कहीं और से लौटता है और कहता : "ओह, मैंने आपके परिवार के सदस्य को सुदूर स्थान पर देखा था। जब मैं व्यापार के लिए वहाँ गया तो हमने एक दूसरे से बात भी की।" उनका परिवार कहेगा : "ऐसा नहीं हो सकता। वह गुजर चुका है।" फिर वह व्यक्ति जवाब देगा: "मैंने उसे देखा है। उसकी मृत्यु नहीं हुई है। मैंने सचमुच उसे देखा था। मैंने उसके साथ बात भी की और उसके साथ भोजन भी किया।" "यह विचित्र है, वह वास्तव में गुजर गया है।" उनके परिवार को पता है कि वह एक

ताओवादी था : "चलो, फिर उसे खोदकर देखते है।" जब ताबूत खोला जाता है तो उन्हें वहां एक जूता दिखाई देता है।

ताओ प्रणाली में एक रूप और भी होता है जिसे "दिन के उजाले में अधिरोहण" कहा जाता है। दिन के उजाले में अधिरोहण का मार्ग तब उपयोग किया जाता है जब किसी व्यक्ति के शरीर की पूरी तरह से साधना की गई हो और उसने फल पदवी प्राप्त करने से पहले जगत में अपनी इच्छाओं को पूरा कर लिया हो। उसके जाने का समय आ गया है क्योंकि उसके करने के लिए कुछ नहीं बचा है। उस बिंदु पर "दिव्यलोक के द्वार का खुलना" नामक कुछ घटता है; दूसरे शब्दों में, तीन लोकों का द्वार खोला जाता है। तब, कुछ लोगों के लिए एक स्वर्गीय दिव्य उसे लेने आते हैं, जो एक ड्रैगन, एक सारस, या कुछ और पर सवारी करते हैं और उड़ जाते हैं, या एक दिव्य रथ उसे ले जाने के लिए आता है। प्राचीन काल में इस तरह की बातें बहुत हुईं। इस तरह दिन के उजाले में अधिरोहण होता है। हमारी अभ्यास प्रणाली में, मैं उन लोगों के लिए दिन के उजाले में अधिरोहण की विधि का उपयोग करूँगा, जिन्हें फालुन दिव्यलोक में जाना है। कुछ लोग ऐसे साधना मार्ग में हैं जो शरीर नहीं चाहते हैं। यदि उस व्यक्ति को एक शरीर दिया जाए तो उस व्यक्ति के पूरे दिव्यलोक में सब कुछ अव्यवस्थित हो जाएगा। यह शाक्यमुनि के निर्वाण की तरह है : यदि आप उसे एक शरीर देते हैं तो वह निर्वाण नहीं होगा—तो क्या पूरी साधना प्रणाली बिगड़ नहीं जायेगी? उनका दिव्यलोक शील, समाधी और प्रज्ञा के तत्वों से बना है, और इसलिए वह शरीर नहीं चाहते हैं। आप में से बहुत से लोग एक मानव मानसिकता के साथ सोचते हैं, "ओह, यह दिन के उजाले में अधिरोहण अदभुत है। लोग मुझे उड़ते हुए देखेंगे।" आप दिव्य मामलों को मानवीय मानसिकता के साथ सोच रहे हैं, और यह बिलकुल ही अनुचित है। दूसरे तरीके से देखें तो, फल पदवी के समय स्वाभाविक रूप से इसका कोई एक रूप होगा। हालांकि, मैं आपको बता सकता हूं कि, जब इस समय इतने सारे लोग फल पदवी प्राप्त करने वाले हैं, मैं निश्चित रूप से उन लोगों के लिए एक गहरा सबक छोड़ जाऊँगा, जिन्होंने विश्वास नहीं किया है। इसलिए जब भविष्य में मेरे शिष्य फल पदवी प्राप्त करेंगे तो यह एक अदभुत दृश्य होगा, ऐसा जिसे मानव समाज कभी नहीं भूलेगा। (तालियां)

ऐसा कहने के बाद, आपको अभी भी सभी मोहभावों को त्यागना होगा और इन चीजों से चिंतित नहीं होना चाहिए। बस साधना करते रहें। यदि आपकी साधना विफल हो जाती है, तो सब कुछ शून्य हो जाएगा।

प्रश्न: ज़ुआन फालुन पुस्तक में, भिन्न-भिन्न शब्दों के पीछे भिन्न-भिन्न बुद्ध, ताओ और देवता हैं?

गुरु जी : हाँ, निश्चित ही। इसलिए मैं आप सभी को पुस्तक पढ़ने के लिए कहता हूं। कुछ लोगों को किसी बात का ज्ञान होता है, "आहा!" और उस क्षण जब वे उस चीज़ को अनुभव करते हैं तो उनके शरीर में अचानक थरथराहट का अनुभव होता है और गर्माहट की लहर अनुभव होती है। हालांकि यह केवल एक हल्की सी अनुभूति होती है, उस समय, शरीर में जो परिवर्तन होते हैं वह वास्तव में बहुत अधिक होते हैं, और दूसरी ओर हर जगह हलचल हो रही होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब आप एक और ऊँचे स्तर पर पहुंचे हैं, और शरीर विभिन्न स्तरों पर परिवर्तनों के विभिन्न रूपों का अनुभव करता है। जैसा कि आप जानते हैं, चीनी मंदिरों में कुछ बुद्ध मूर्तियों के सिर के शीर्ष पर और चार सिर होते हैं, या फिर उन चार सिरों के शीर्ष पर और तीन सिर होते हैं, और एक और सिर उन तीन सिरों के ऊपर उत्पन्न

होता है। वास्तव में, यह विभिन्न स्तरों पर बुद्ध की फा-छवि का एक प्रकट रूप है। कहने का अर्थ यह है कि, विभिन्न स्तरों पर शारीरिक अवस्था में परिवर्तन बहुत गहरा होता है। यह न केवल अदभुत होता है, बल्कि गंभीर, तेजस्वी और अविश्वसनीय रूप से आश्चर्यजनक होता है। इसका एक कारण है कि आपको इसे देखने की अनुमति क्यों नहीं दी जाती है। क्योंकि आपकी साधारण मानवीय सोच है, आप इसे मानवीय विचारों के साथ समझेंगे, और परिणामस्वरूप विक्षिप्त ढंग से भी व्यवहार कर सकते हैं। हम ऐसा कुछ होने नहीं दे सकते हैं।

प्रश्न: क्या हाथ मिलाना और शारीरिक संपर्क कर्म को संचारित करता है?

गुरु जी : यदि आप एक सच्चे साधक हैं जो आपको यह कोई हानि नहीं पहुँचाएगा, चाहे आप कितने भी संवेदनशील हों। आपके साधना किये हुए शरीर में गोंग होता है : यह गोंग के कुछ निम्न से कैसे डर सकता है? क्षेत्र और स्तर के विषय में दोनों के बीच एक बड़ा अंतर है, इसलिए आपको इससे डरना नहीं चाहिए।

लोगों के बीच हाथ मिलाना, अर्थात, साधारण लोगों के बीच संपर्क और हाथ मिलाना वास्तव में कर्म का संचार कर सकता है। कम से कम दूषितकरण तो होता ही है। वह निश्चित है। आजकल हर कोई हाथ मिलाता है। हाथ मिलाना पश्चिमी, कोकेशियान समाज से आया था। अतीत में एशियाई लोग हाथ नहीं मिलाते थे। जब वे मिलते थे, तो वे दूसरे हाथ में मुट्ठी बांधते थे। यह बहुत अच्छा था। महिलाएं अपनी मुट्ठी को इस तरह नहीं बांधती थीं क्योंकि यह बुरा लगता है। वे अपने पेट के दाहिनी ओर इस तरह मुट्ठी बांधती थीं; जब वे लोगों से मिलती थीं तो वे शरीर के एक ओर मुट्ठी बांधती थीं और अपने पैरों को थोड़ा मोड़ लेती थीं। ऐसा लगता है कि पश्चिम में पुनर्जागरण काल के बाद ही हाथ मिलाने की प्रथा शुरू हुई; इससे पहले वे भी हाथ नहीं मिलाते थे। उनके अभिवादन शिष्टाचार के विभिन्न प्रकार थे—कुछ ऐसे, कुछ वैसे। वैसे भी, सभी तरह के भिन्न-भिन्न प्रकार थे, हर तरह के। हाथ मिलाने की प्रथा बाद में आयी। क्या हमारे पास *हशी* नहीं हैं? यह बुद्ध प्रणाली की प्रथा है।

प्रश्न: एक वर्ष से अधिक की साधना में लोगों ने शायद ही कभी मेरे लिए कठिनाई खड़ी की हो। यदि यह इसी तरह जारी रहा, तो मेरे इतने मोहभावों से छुटकारा कैसे मिल सकता है?

गुरु जी : ऐसा नहीं है। सबकी परिस्थितियाँ अलग होती हैं। शायद यह इस तरह से है, शायद यह उस तरह से है, शायद ... सभी विभिन्न प्रकार के कारक होते हैं। इसलिए सुनिश्चित करें कि आप इन चीजों से [यहाँ] नहीं जुड़े। जिस दिन कठिनाई वास्तव में आती है तो उसे पारित करना कठिन होगा, और फिर जब कोई कठिनाई नहीं होती है तो आपको वे चाहिए होती हैं। हर चीज का एक कारण है। वास्तव में, कुछ लोगों को सच में बहुत से कष्ट नहीं होते हैं। यह भी सच है।

प्रश्न: हमारे अभ्यास स्थल पर दर्जनों लोग हैं, और उनमें से अधिकांश के रंगरूप अच्छे नहीं हैं। क्या ऐसा इसलिए है कि हम ठोस तरीके से साधना नहीं कर रहे हैं?

गुरु जी : ऐसे बहुत से अभ्यास स्थल हैं जो वास्तव में सही नहीं हैं, जहां छात्रों के बीच गपशप चलती है और वे अविवेक से "ज्ञान" प्राप्त करते हैं। कुछ लोग अविवेक से "ज्ञान" प्राप्त करते हैं, जिनका वास्तव में मेरे द्वारा सिखाये गए फा से कोई लेना-देना नहीं है, और वे छात्रों को एक या दूसरे तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं और अपनी कल्पनाओं को बेलगाम भागने देते हैं। वे फा पर भी

टिप्पणी करते हैं, यह कहते हुए कि यह फा कैसा है, यह भाग कैसा है, और वह भाग कैसा है। क्या मनुष्य फा पर टिप्पणी करने के योग्य हैं? कम से कम बात करें तो आपके पास अभी भी एक मानवीय मानसिकता है, इसलिए ऐसा करना उचित नहीं है। आपको केवल साधना करनी है, दाफा के अनुसार, पढ़ना है, अध्ययन करना है और समूहों में अभ्यास करना है। फा को पढ़ने और अध्ययन करने में अपने समय का अधिक उपयोग करें, और अपने स्वयं के अनुभवों और विचारों के विषय में बात करने में कम समय बिताएं। या, अभ्यास समाप्त करने के बाद आप एक दूसरे के साथ चर्चा कर सकते हैं—यह भी उचित है। यदि आप फा की साधना और पढ़ने के निर्धारित समय का उपयोग अपने अनुभवों पर चर्चा करने के लिए करते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा है। जिन चीजों के बारे में कुछ लोग बात करते हैं वे विभिन्न स्वार्थी विचारों और भावनाओं से लिप्त होती हैं, और यहां तक कि उनका फा के साथ कोई संबंध नहीं होता है। ऐसी स्थिति में वे छात्रों को भटका सकते हैं और अप्रासंगिक विचारों में भी उलझा सकते हैं। सभी मनुष्यों की साधारण मानव मानसिकता होती है। हमारे छात्र, चाहे वह अनुभवी हों या नए, संभवतः उन्हें उन सिद्धांतों के बारे में बात करने या उन्हें जानने की अनुमति नहीं दी जा सकती है, जो शब्दों की सतह की अभिव्यक्तियों से ऊपर है। आखिरकार, आप जिस बारे में बात करते हैं, वह शब्द का शाब्दिक अर्थ और सतही सिद्धांत होता है, क्योंकि दिव्यलोक के फा पर साधारण लोगों के बीच चर्चा नहीं की जा सकती है। मुझे नहीं पता कि कुछ लोगों को क्या हुआ है। मैं नहीं जानता कि उन लोगों को ऐसे गड़बड़ विचारों का "ज्ञान" कैसे हुआ। आपको इस पर ध्यान देना होगा!

प्रश्न: *"यिन"* [3] का अनुवाद क्या है? किसी को *"जेयिन"*[4] करने की क्या आवश्यकता है?

गुरु जी : बुद्ध इसे यिन नहीं कहते हैं। यह बुद्ध फा की गरिमा का प्रकटीकरण है। यह प्राचीन भारत का एक शब्द है जिसे सीधे अनुवाद किया गया था, जिसे यिन कहा जाता है। *जेयिन*, *बड़े शौयिन* [5] और *छोटे शौयिन*, फा की अभिव्यक्ति और भाषा की महिमा के अन्य भाव हैं।

प्रश्न: मैंने अब लगभग एक वर्ष तक साधना की है, फिर भी मैंने फालुन को कभी नहीं देखा है।

गुरु जी : मुझे इसे इस तरह समझाने दो। यदि आप कहते हैं कि आपने अपने में कोई बदलाव नहीं पाया है, फा के द्वारा लाये गए किसी भी बदलाव का अनुभव नहीं किया है, या साधारण लोगों से अधिक आप कुछ नहीं जानते या किसी भी चीज की ज्ञानप्राप्ति नहीं हुई है, तो मैं आपकी बात का विश्वास करता यदि आप साधक नहीं होते। यदि आपको कुछ देखने की इच्छा है, कुछ होने की, या इसे बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाए जाने की जैसे कि कोई साधारण लोगों को देखता है, तो मुझे नहीं लगता कि यह काम करेगा। इसका कारण यह है कि, प्रत्येक व्यक्ति के उसकी अपनी स्थिति के अनुसार उसे संभालने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके हैं, उसकी साधारण लोगों के बीच की भिन्न-भिन्न मानसिक स्थितियाँ, और वह क्या प्राप्त करेगा जब वह भविष्य में फल पदवी तक पहुंचेगा। इस कार्य को करने में, मैं हर स्थिति में समान रूप से कदापि काम नहीं करूँगा। आप फालुन को देखने की चाह कर सकते हैं, लेकिन यदि मोहभाव नहीं छोड़ा गया है तो आप इसे नहीं देख पाएंगे।

---

[3] ("यिन") "हस्त मुद्रा"
[4] ("जे-यिन") "हाथ एक दुसरे के ऊपर रखकर की गयी हस्त मुद्रा"
[5] ("शौ-यिन") "हस्त मुद्राएँ"

प्रश्न: क्योंकि उच्च स्तर पर बुद्ध मनुष्यों को नहीं के बराबर समझते हैं, कृपया हमें बताएं कि गुरु जी हमें बचाने क्यों आए हैं?

गुरु जी : ब्रह्मांड के फा ने ब्रह्मांड के कई स्तरों पर जीवों के लिए विभिन्न स्तरों पर जीवन पनपने के लिए वातावरण बनाया। यह अवश्यंभावी है कि इन जीवन पनपने के वातावरणों में जीव होने चाहिए। साधारण मानव पूरे ब्रह्मांड के लिए इस फा द्वारा बनाए गए विभिन्न स्तरों के निम्नतम स्तर पर हैं। इसलिए मेरे दृष्टिकोण से, मुझे पूरे फा और पूरे ब्रम्हांड को ध्यान में रखना चाहिए। क्या मैंने इसे स्पष्ट रूप से समझाया है? (तालियाँ) तो मेरे दृष्टिकोण से, मैं जीवों को—सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों के—आपसे अलग ढंग से देखता हूँ। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे आप समझ सकेंगे।

प्रश्न: जैसे जैसे मैं लगातार फा का अध्ययन करता हूँ, जिन चीजों के बारे में मैं सोचता हूं वे कम और कम होती जाती हैं, इस हद तक कि कभी-कभी मैं किसी भी चीज के बारे में सोचना नहीं चाहता। क्या इसलिए कि मेरी मुख्य चेतना कमजोर है? क्या मेरी साधना भटक गई है?

गुरु जी : ऐसा नहीं है। और मैं आपको यह भी कह सकता हूं कि यह एक अच्छी घटना है। मैं क्यों कहता हूं कि यह एक बहुत अच्छी घटना है? मैं आपको बताऊंगा। एक व्यक्ति का मस्तिष्क साधारण लोगों के बीच वास्तव में सूक्ष्म रूप से काम करता है। हानि से बचने के लिए, इस संबंध में एक व्यक्ति की सोच बेहद सतर्क होती है और उसकी स्मरण-शक्ति तेज़ होती है। मेरे कहने का अर्थ यह है कि, आपके मस्तिष्क का उपयोग इस तरह से करना अच्छा नहीं है, क्योंकि आप बुरे कर्म उत्पन्न करेंगे। जब आपका मस्तिष्क इस तरह अधिक परिष्कृत होता है, तो यह आपकी साधना में हस्तक्षेप करता है। तो क्या करना चाहिए? हम एक ऐसा तरीका अपनाते हैं जिसके द्वारा हम सबसे पहले आपके मस्तिष्क के इस भाग को नियंत्रित करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम पहले इसे बंद कर देते हैं, इसे व्यवस्थित करते हैं, इसे आपके विचारों के उस भाग से प्रतिस्थापित करते हैं जो एक साधक की तरह सोच सकता है, और आपकी सोच का यह भाग विकसित होने देते हैं। फिर उस धूर्त भाग को समायोजित किया जाता है और हम धीरे-धीरे बंधन को ढीला करते हैं। उस बिंदु पर आप स्वयं को ठीक से संभाल पाएंगे। जब आपको उन बुरे विचारों का आभास भी नहीं होता है—क्योंकि आपके मस्तिष्क का वह भाग बहुत अच्छी तरह से विकसित हुआ होता है—जैसे ही आप किसी चीज के बारे में सोचते हैं तो आप मस्तिष्क के उस भाग में ढूंढने लग जाते हैं। आपके मस्तिष्क का वह भाग आपकी साधना के साथ गंभीर रूप से हस्तक्षेप करता है। इसलिए, बहुत से लोग मैंने अभी जिसका वर्णन किया है उसको अनुभव करेंगे। यह अल्पकालिक होता है। जिन विचारों को आप अक्सर अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए उपयोग करना पसंद करते हैं, वे विचार जो दूसरों को आहत कर सकते हैं, और मस्तिष्क की वे कोशिकाएं जो अधिक विकसित होती हैं, वे सभी बंद और समायोजित की जाती हैं। तो यह स्थिति उत्पन्न होगी, लेकिन यह अस्थायी है। बंद कर देने के बाद, उनकी आपके लिए देखभाल करने की आवश्यकता होती है, ताकि वे इतने विकसित न हों और साधारण उपयोग के लिए पर्याप्त हों। हम आपके पवित्र विचारों और कोशिकाओं को विकसित होने देते हैं। यह ऐसे होता है। अन्यथा ... मुझे एक आम भाषा का उपयोग करने दें जो इसे अधिक उपयुक्त रूप से वर्णन कर सकता है: आप बुद्धत्व की साधना करने वाले एक सच्चे और सज्जन व्यक्ति हैं, इसलिए आपका मन धूर्त, चालाक, कुटिल और कपटी नहीं हो सकता है!

प्रश्न: दूसरों के अनुभवों को सुनना मुझे प्रेरणा देता है और ज्ञान देता है, लेकिन मैं इसे अपने बल पर ज्ञानप्राप्ति पाने के समान ठोस नहीं समझता।

गुरु जी : यह सही है। बेशक यह ऐसा ही है। आप जो स्वयं ज्ञानप्राप्त करते हैं, जो मुख्य रूप से आपकी अपनी साधना के माध्यम से होता है, वही सबसे ठोस है। दूसरी ओर, आप वास्तव में दूसरों की बातों से सीख ले सकते हैं। वह भी आपकी प्रगति को सुविधाजनक बना सकता है, इसलिए यह लाभदायक है। सम्मेलन अक्सर आयोजित नहीं किए जायेंगे। हमारे सम्मेलनों से अवश्य ही लाभ होता है। लेकिन अनुभवों को अधिक बार साझा न करें। आपको फा का अध्ययन करने और पुस्तक पढ़ने पर अपनी ऊर्जा को केंद्रित करना चाहिए।

कुछ प्रश्न जो उठाए गए थे उन्हें हटा दिया गया था क्योंकि वे अपेक्षाकृत निम्न स्तर के या दोहराए गए थे, या उन्हें पुस्तक को पढ़कर हल किया जा सकता है। समय की कमी के कारण हम अब प्रश्नों के उत्तर देना समाप्त करते हैं। (जोर से तालियाँ)